सुखिया--सुरेश

(द्विअंकी नाटक)

लेखक--

स्वर्गीय--श्री विजयसिंह पथिक

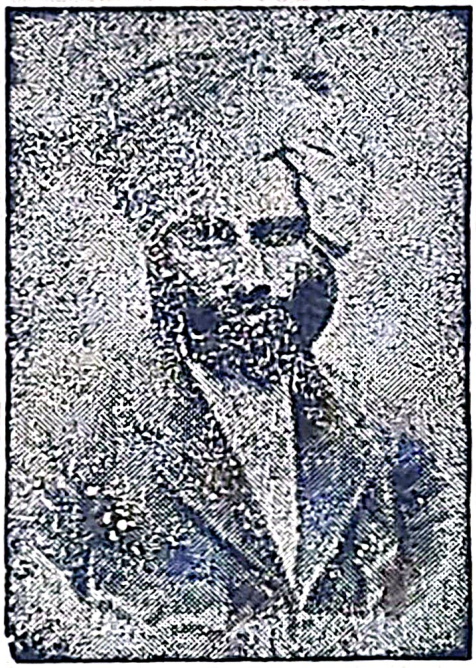

प्रकाशक--

श्रीमती जानकी देवी पथिक

जानकी निवास, पथिक मार्ग

जनरल गंज, मथुरा (उत्तर प्रदेश)

प्रथम आवृति] [मूल्य ५.००

दो शब्द

स्वर्गीय बिजयसिंह पथिक की एक और रचना प्रकाश में आ रही है। 'सुखिया-सुरेश' एक नाटक है जो दो अंकों में समाप्त हुआ है। प्रथम अंक में सात दृश्य और दूसरे में पांच दृश्य हैं, नाटक दुखान्त है और दुखान्त नाटक दर्शक के मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है।

यह नाटक पथिक जी ने उस समय लिखा था जब वह राजस्थान की भूतपूर्व रियासत मेवाड़ में बन्दी जीवन बिता रहे थे। उन्हें राजद्रोह के आरोप में चार-पांच वर्ष जेल में रहना पड़ा था। उन्होंने जेल में अवकाश का समय साहित्य सृजन में लगाया और भावी पीढ़ियों के लिए एक उत्तम विरासत छोड़ गये। इस साहित्य में से 'प्रहलाद विजय' (खण्ड काव्य) 'पथिक विनोद' (कविता संग्रह) और

'पथिक प्रमोद' (कहानी संग्रह) तीन रचनायें पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। चौथी रचना 'सुखिया सुरेश' नाटक अब पाठकों के हाथों में है।

कोई पचास-पचपन वर्ष पहले यह नाटक लिखा गया। उस समय हमारा देश स्वतंत्र नहीं हुआ था। ब्रिटिश सत्ता मजबूती से जमी हुई थी। रियासतों में राजा-महाराजाओं का निरंकुश शासन प्रचलित था। रियासती प्रजा मनमानी और शोषण की शिकार थी। रियासतों के दीवान अंग्रेजों के चाटुकार हुआ करते थे और उनके इशारे पर नाचा करते थे। मेवाड़ के महाराणा स्वतंत्र प्रकृति के नरेश थे। ब्रिटिश सत्ता ने उनके अधिकार छीन कर उनके युवराज के हाथों में सौंप दिये थे। इन परिस्थितियों की पृष्ठ भूमि में यह नाटक लिखा गया है।

सुखिया और सुरेश इस नाटक के प्रधान पात्र हैं। सुखिया एक चमारिन है और उसे भगवान ने अनुपम रूप प्रदान किया है। यह रूप ही उसके लिए अभिशाप बन गया और उसने उसके जीवन में विष घोल दिया। सुखिया ने एक भगत परिवार में जन्म लिया था और वह एक धर्म-परायण

नारी थी कभी कोतवाल ने उससे अपनी हविस मिटानी चाही तो कभी रियासत के कुंवर ने। कभी गुण्डों ने उस पर आक्रमण किया तो कभी उसे निराश्रित होकर भटकना पड़ा। उसके पति को जेल में डाल दिया जाता है और अन्त में उसे विष देकर उसके प्राण ही हर लिये जाते हैं।

नाटक का दूसरा पात्र सुरेश एक सम्पन्न घर का युवक है। वह गांधी जी के आन्दोलन से प्रभावित होता है और खादी उत्पादन के लिए एक आश्रम की स्थापना करता है। सुखिया सुरेश के सम्पर्क में आती है और उसे अपना धर्म-भाई बना लेती है। सुरेश उसे अपने आश्रम में स्थान दे देता है जहाँ छुआछूत का कोई विचार नहीं किया जाता। सुखिया सन्तोष की सांस लेती है।

किन्तु एक दिन रियासत के कुंवर साहब और दीवान आश्रम पर धावा बोल देते हैं। सुखिया अपने शील की रक्षा के लिए पिस्तोल का सहारा लेती है और दीवान को मार गिराती है। इतने में सुरेश भी घटना स्थल पर पहुँच जाता है और कुंवर के आक्रमण को विफल करने के लिए उस पर गोली दाग देता है। सुखिया और सुरेश महसूस करते हैं

कि बन्दी बनने पर उन्हें असहनीय यातनायें दी जाएंगी और उनसे बचने के लिए वे दोनों एक दूसरे पर गोली चला कर अपने जीवन का अन्त कर लेते हैं। इसके साथ ही नाटक पर यवानिका पात हो जाता है।

नाटक को पढ़ने से लगता है कि पथिकजी गांधी जी की विचार धारा से काफी प्रभावित थे। उन्होंने नाटक में चर्खे खादी और कुटीर उद्योगों की जर्बदस्त हिमायत की है। उन्होंने इन्हें बेकारी और गरीबी निवारण का रामवाण उपाय सिद्ध किया है। जीवन को सादा और स्वावलम्बी बनाने की कुंजी खादी में छिपी है। बड़े कल-कारखाने मनुष्यों की रोजी-रोटी छीन लेते हैं और उनमें काम करने वाले मजदूरों की स्थिति कुछ अच्छी नहीं होती। पथिक जी ने यूरोपीय देशों के मजदूरों की स्थिति से भारतीय मजदूरों की अवस्था की तुलना की है। उनका कहना है बड़े उद्योग शोषण के प्रतीक हैं और उनके द्वारा पूंजी और आर्थिक शक्ति मुट्ठी भर लोगों के हाथों में केन्द्रित हो जाती है।

पथिक जी ने नाटक के एक दृश्य में समाज सेवाकों

और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं द्वारा गाँव और घरों के सफाई अभियान की एक झांकी प्रस्तुत की है।

पथिक जी ने आत्म रक्षा और नारी के शील की रक्षा के लिए हिसा का औचित्य सिद्ध किया है। नाटक में धर्म परायणता और ईश्वर-निष्ठा के जगह-जगह दर्शन होते हैं। यथा प्रसंग नाटक में पथिक जी ने अपनी काव्य प्रतिभा का भी परिचय दिया है।

आशा है यह नाटक पाठकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उनके लिए बोध प्रद भी सिद्ध होगा।

पथिक जी की धर्म पत्नी श्रीमती जानकी देवी पथिक ने अनेक कठिनाइयों के बीच पथिक साहित्य को प्रकाश में लाने को भगीरथ प्रयास किया है। पथिक जी अपने समय के राजस्थान के एक शक्तिशाली राष्ट्रीय नेता थे। राजस्थान की दलित और पीड़ित जनता के उत्थान के लिए उन्होंने अंग्रेजी सत्ता, राजशाही और सामन्तवादी ताकतों से जबर्दस्त मोर्चा लिया था। उनके साहित्य में दीनों और पीड़ितों की आकाक्षांयें मुखरित हुई हैं। श्रीमती जानकी देवी

को पथिक जी के साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए अनेक साधु वाद।

पथिक जी के एक निकट साथी के रूप में ये दो शब्द लिखते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है।

शोभालाल गुप्त

गाँधी जयन्ती, 1979

डी. ३१, गुलमोहर पार्क

नई दिल्ली

पाठक बन्धुओं से

स्व० पति देव (श्री पथिक जी) के सहयोगी एवं घनिष्ठ साथी भक्तों के प्रयास से राजस्थान सरकार के अनुदान से पथिक जी द्वारा लिखित कुछ साहित्य प्रकाशित होकर पाठकों के हाथ में पहुँच गया, किन्तु अभी उनका बहुत सारा साहित्य अप्रकाशित पड़ा है। उसके लिए मन में बार-बार एक टीस सी उठती रहती है, रात में जब नींद खुल जाती है तो मन में यही अन्तर्द्वन्द रहता है कि जिसने जीवन भर देश सेवा करने का व्रत लिया, अनेक प्रकार के दुःख उठाए, अनेक प्रकार की यातनाऐ सहीं, यहाँ तक कि भूख प्यास की भी परवाह न की और दिन में कोई देख न ले टट्टी पेशाब पर भी काबू किया। अन्त में जेल जाने के बाद भी देश की चिन्ताएं बनी रहीं। वहाँ भी खाली नहीं बैठे। वहाँ अनेक प्रकार का साहित्य रचते रहे। किन्तु जेल जीवन की अवधि पूरी करके बाहर आने के पश्चात् उनके साहित्य को सरकार ने बन्दी ही रखा।

स्वतन्त्रता के बाद कोशिश करने पर साहित्य मिला किन्तु पैसे के अभाव में छपा न सके और ईश्वर ने उन्हें समय के पहले ही उठा लिया। मैं तो अन्धकार में पड़ी ही थी कि क्या करूँ क्या न करूँ ? श्री पथिक जी के पुराने साथी श्री शोभालाल जी गुप्त के प्रयत्नों से राजस्थान सरकार ने अनुदान दिया और तीन पुस्तकें पथिक विनोद (कहानी संग्रह), पथिक प्रमोद (कविता संग्रह) और प्रहलाद विजय विजय खण्ड काव्य प्रकाशित हुए। शेष पुस्तकों के बारे में सोचती रही।

एक दिन श्री फूलसिंह जी व दीक्षित जी ने यह सुझाव दिया कि श्री पथिक जी गुर्जर जाति में जन्मे थे और राजस्थान उनका कार्य क्षेत्र रहा है। वहाँ के गुर्जर अच्छे सम्पन्न हैं और स्व० पथिक जी के भक्त भी हैं, अतः एक अपील निकाली जाय। उनके सुझाव से एक अपील निकाली। उसमें कुछ सफलता मिली। पथिक जी के भक्तों के पास अपील भेजी गई लगभग २५०/- पुस्तकें बिकीं। उन रुपयों से व कुछ पुस्तकालय की दुकानों के किराए से श्री पथिक जी का लिखा 'सुखिया-सुरेश' नामक यह नाटक छपने दिया।

यह नाटक दो खंडों में हैं। इस नाटक में उन्होंने उस समय के प्रशासन एवं वातावरण का अहसास करवाने का

प्रयास किया है। गोरे शासन में शासकों द्वारा एक भारतीय को कोई भी पद देने के पश्चात् दूसरे भारतीयों को कष्ट देने का हुक्म कैसे दिया जाता था। शासक कितनी मनमानी करते थे। उनके यहां पर चाटुकारों की भी कमी नहीं थी। इस नाटक में भी चटनी प्रसाद हैं जो महाराज की हाँ में हाँ मिलाने को ही अपना अहोभाग्य समझते हैं। उस समय के उच्चाधिकारी किस प्रकार दुर्बलों को अपना शिकार बनाते थे। इन सब प्रकार की परिस्थितियों को उन्होंने इस नाटक में प्रस्तुत किया है।

इस नाटक का पहला खण्ड तो छप कर तैयार हो गया। दूसरा खण्ड शेष रहा तो मैं बीमार पड़ गई। लम्बी बीमारी के कारण मेरी बीमारी में अधिक खर्च होता रहा। पुस्तक की तरफ ध्यान न दे सकी और पुस्तक अधूरी ही रही। कुछ दिन बाद श्री पथिक जी के पुराने साथी श्री राम नारायण जी चौधरी ने अपनी निजी संपत्ति को कई भागों में विभाजित कर कई संस्थाओं को दिये।

पथिक जी के जन्म स्थान गुठावली कलां, बुलन्दशहर में ५०००) रु० दिये। जो उनकी स्मृति को बनाए रखने हेतु किसी भी कार्य में खर्च किए आ सकते हैं। इस प्रकार की वसीयत मेरे पास आई। मैंने अपनी बीमारी के हाल

लिखकर ३००) पुस्तक में सहयोग देने की अपील की। श्री चौधरी जी ने तीन सौ का चैक भेज दिया।

इसके बाद पथिक जी के पुराने साथी श्री शंकर सहाय जी सक्सैना ने १११) रु० सहायतार्थ दिये तथा कोटा के स्व० श्री दुर्गादास जी कविराम की धर्मपत्नी श्रीमती उमादेवी जी ने १००) रु० दिये। इस तरह पुराने साथियों के सहयोग से पुस्तक तैयार होकर पाठकों के हाथों में आयी। इस तरह सब सहयोगी भाई बधांई के पात्र हैं।

अभी पथिक जी का छपा हुआ साहित्य (१) पथिक-प्रमोद (कहानी संग्रह) (२) पथिक विनोद (कविता-संग्रह) (३) प्रहलाद विजय (खण्ड काव्य) आदि की पाँच-पाँच सौ कापियां बची हुई हैं। पाठकों से सविनय अनुरोध है कि नये व पुराने साहित्य को शीघ्रातिशीघ्र खरीदें जिससे कि पथिक जी का अप्रकाशित साहित्य भी प्रकाश में आ सके।

विनीता –

श्रीमती जानकी देवी 'पथिक'

जानकी निवास, पथिक मार्ग,

जनरलगंज–मथुरा (उ.प्र.)

मङ्गलाचरणम्

अस्त गत सूर्य शिर छाये श्याम घन
जैसी-श्यामल लताओं से उरोजों के छिपाती हुई ।
सतत स्त्रवित सुधा भरे निर्झरों के
कण्ठ से स्वकण्ठ मिला, भैरवी-सी गुनगुनाती हुई ॥

सुन्दर सरस सुमनों के शिरस्त्राण बना
माँ के भाग्य भरे भाल पर पहनाती हुई।
अंक लिये अक्षय वसन्त की अनंत शोभा
देखे तुम्हें प्रेम से प्रकृति मुसकराती हुई ।

—राष्ट्रीय पथिक

खंड १

सुखिया-सुरेश

प्रथमाङ्क

दृश्य पहला

(स्थान मदनपुर (राजधानी) में प्रधान मंत्री गोवर गणेश की बैठक का कमरा। मन्त्री बैठा है। पीछे एक सेवक खड़ा चँवरी हिला रहा है। दाहिनी ओर सेक्रेटरी, मुन्शी चटनी प्रसाद बैठे हैं।)

द्वारपाल– (प्रवेश करके) हुजूर ! भूपालसिंह जी मिलना चाहते हैं।

मन्त्री– अच्छा आने दो।

(भूपाल सिंह प्रवेश कर चुपचाप प्रणाम करते हैं।)

मन्त्री– (अद्धोस्थित हो प्रणाम का उत्तर देता हुआ) आइये। बैठिये। कहिये कैसे तकलीफ की ?

भूपाल– तकलीफ तो आप को हुई साहब ! असल में मैंने अभी रास्ते में ही सुना कि आपने रेलवे और कपड़ों का कारखाना खोलने की अँग्रेजी कम्पनी को मंजूरी दे दी है। इसलिये तकलीफ दी। क्या यह सच है ?

मन्त्री– हाँ सच ही समझिये। अभी ही तो नही है, लेकिन देनी ही पड़ेगी।

भूपाल– और "आटे की चक्की" और मोटर सर्विस के बारे में क्या हुआ।

मन्त्री– इनका भी ठेका उन्हीं को देना पड़ेगा।

भूपाल– क्यों ? देना ही क्यों पड़ेगा ? इन्कार भी तो किया जा सकता है ?

मन्त्री– इन्कार ? इन्कार कैसे किया जा सकता है ? अँग्रेज व्यापारी हैं। बड़े साहब की सिफारिश लाया है। कल रेजीडेण्ट साहब ने खुद कहा है। ऐसी हालत में इन्कार कैसे किया जा सकता है ? क्यों चटनी प्रसाद ?

चटनी०– हुजूर ! बजा है ! रेजीडेण्ट के सामने कौन इन्कार कर सकता है ?

भूपाल– सिफारिश की चिट्ठी में क्या लिखा था ?

मन्त्री– यही की ये भरोसे के आदमी हैं। सरकार ने भी इनको कई काम दिये हैं। अगर आपका सौदा पट जाय तो चाहे जो काम दे सकते हैं।

भूपाल– और रेजीडेण्ट ने क्या कहा था ?

मन्त्री– उन्होंने पूछा था कि "क्या आपको मिस्टर विलियम की बातें पसन्द आ गईं।"

मैंने कहा "हाँ साहव आ गई।"

भूपाल– क्यों आपने यह क्यों कह दिया ?

मन्त्री– उह ! आप साहव लोगों के कायदे नहीं जानते। उनके रुख को देख कर जवाव देना पड़ता है। positive हो तो positive और negative हो तो negative क्यों न चटनी प्रसाद ?

चटनी– हाँ हुजूर। लेकिन ये क्या जाने ? इनमें इतनी अकल होती तो ये भी कहो दीवान बन जाते न ?

भूपाल– और दरवार की क्या मंशा थी।

मन्त्री– दर्बार की तो मनशा नहीं थी। वे तो पुराने ढंग के आदमी ठहरे। वे क्या समझें।

भूपाल– फिर ?

मन्त्री– फिर क्या, मैंने कह दिया कि आप इन्कार करेंगे तो मैं रेजिडेन्ट को लिख दूँगा कि आप रियासत की तरक्की में बाधक होते हैं।

भूपाल– क्यों ? उनका सवाल देख कर जवाव देने की जरूरत नहीं समझी ?

मन्त्री– अह ! अजी वे क्या अँग्रेज हैं ? फिर मैं साहब से हाँ जो कर आया था। क्या मैं अपनी बात खोता ? क्यों चटनी प्रसाद।

चटनी– हाँ हुजूर ! यह तो बिलकुल सीधी बात है।

भपाल– लेकिन आप जानते हैं कि इस समझदारी से कितनों का रोजगार चला जायेगा ? कितने घर धन्धे नष्ट हो जायेंगे ? कितने धुने, जुलाहे, लुहार, सुनार, इक्केवाले, गाड़ीवान, ताँगेवाले बेकार हो जायेंगे ? कितनी विधवाओं का, गरीबों का और अनाथ, अपंगों का जीना मुश्किल हो जायेगा ? आज के सब कोई कताई बुनाई, से कोई पिसाई-सिलाई से और कोई इक्के- गाड़ी चला कर अपना पेट भी भर लेते हैं और आजाद भी रहते हैं ।

मन्त्री– अजी ये तो दुनिया है । दुनिया का चरखा तो यों ही चलता रहता है ।

भूपाल– हम आप भी तो इस चरखे के एक एक पुर्जे ही हैं । दीवान साहब ! अगर शरीर की इन्द्रियाँ शरीर की पर्वाह न करें तो शरीर की क्या हालत होगी ?

मन्त्री– लेकिन इससे भी तो हजारों को काम मिलेगा क्यों न चटनी प्रसाद ?

चटनी– हाँ हुजूर ! काम मिलेगा और कपड़े भी बढ़िया बढ़िया मिलेंगे सो अलग ।

भूपाल– काम मिलेगा, लेकिन फल उसका भी बुरा ही होगा दीवान साहब । पहले तो दस बेकार होंगे और एक को काम मिलेगा । बाकी नौ लाचार होकर जुर्मों और बेजा कामों पर कमर बाँधेंगे ।

झूँठ, छल और ठगई बढ़ेगी। दूसरे जिन्हें काम मिलेगा वे भी आजाद धन्धे छोड़कर गुलाम बन जायेंगे और गुलामी से चरित्र बिगड़ना निश्चित ही है। तीसरे वे अपने पुराने धन्धों का ज्ञान और साधन खो बैठेंगे। फिर मिल, कारखाने तो जिस दिन मुनाफा कम हुआ बंद हो जायेंगे। तब इन के लिये जुर्मों के सिवाय क्या काम रहेगा ?

मन्त्री– अजी अच्छी फिकर की आपने भी। यह होगा तब देखा जायगा अभी मरने से पहले ही हाय हाय करने से क्या लाभ ?

भूपाल– पीछे ही नहीं, दीवान साहब। इस समय भी इसका नतीजा अच्छा न होगा। आज स्त्रियाँ तक घर में बैठीं अपने भरन-पोषण योग्य कमा लेती हैं। हम जैसे कुलीन लोगों की विधवायँ भी घर बैठे गुजर चला रही हैं। फिर यह न होगा यही नहीं, गाँवों तक की आजादी जाती रहेगी उनका पैसा मिल वालों की जेब में जायेगा शौकीन पन बढ़ेगा और वहाँ भी गरीबी, बेकारी, बेईमानी फैलेगी।

चटनी– तो रेल से आपका विरोध नहीं है ?

भूपाल– नहीं क्यों है ? रेल जहाँ जाती है वहाँ की खाद्य सामग्री खींच ले जाती है। जंगलों का नाश कर देती है। फलतः वर्षा कम होने लगती है। तथा

मंहगाई और अकाल रोज डेरा डाले रहते हैं।

मन्त्री– अच्छा भूपाल सिंह जी मुझे कुछ जरूरी काम हैं। इसलिए अब आप को किसी और वात पर कुछ कहना हो तो.....

भूपाल– नहीं, दीवान साहब। मैं सिर्फ इसी मामले पर बातें करने आया था।

मन्त्री– तो लाचारी है। मुझे अफसोस है कि इस मामले पर कुछ हेर फेर नहीं हो सकता।

भूपाल– तो मेरा कुछ कहना सुनना बेकार है ?

मन्त्री– हाँ, विलकुल बेकार है।

भूपाल– अच्छा तो आज्ञा हो। (प्रणाम करके प्रस्थान)

मन्त्री– चटनी प्रसाद।

चटनी– हुजूर।

मन्त्री– यह भूपाल सिंह भी अजब उजवक मालुम होता हैं। न जाने कैसी कैसी ऊबड़ बातें ले लेकर आता है। कल कहता था कि रंडियों को शहर बाहर कर दो और अस्पतालों की जगह औषधालय खुलवाओ। आज कल-कारखानों की मुखालिफत करने आ गया।

चटनी– हुजूर सिड़ी हैं। राजपूतों में अक्ल थोड़े ही होती है। फिर ये दरबार के पास बातों की सोहबत में रहता हैं।

मन्त्री– दरअसल अक्ल नहीं होती। चटनी प्रसाद विल्कुल कान वद मजा कर दिये। अच्छा जरा मँगाओ शराब ओर गाने वाली।

चटनी - जो हुकुम (प्रस्थन)

मन्त्री– (उठकर स्दागत) बातें तो कुछ २ ठीक हैं। दर्बार भी शायद नाराज होंगे (कुछ सोच कर) लेकिन हों। मेरा क्या कर सकते हैं ? मेरी तरफ बड़े साहब हैं, रेजीडेन्ट है, आधे सर्दार, साहूकार हैं, महाराज कुमार हैं। मैं क्या छुई मुई हूँ ? (गाने वाली आकर सलाम करती है। चटनी बोतल प्याले लाता है। एक खिदमतगार खिदमतगार एक चौकी और रकावी लाता है। सव सामान रखा जाता है।

मन्त्री– अच्छा चटनी प्रलाद ले आये। (बैठता है)

चटनी– हाँ हजूर। सव ले आया।

मन्त्री – अच्छा बैठो तुम भी। चटनी बैठता है। प्याले चलते हैं। गाने वाली से हाँ गाओ। जरा एक अच्छी सी ठुमरी होने दो।

गायिका- (गाती हैं)

(ठुमरी सिंदुरा)

घन कारे घोरत घूमि घूमि–
घुमड़त नभ लूमि लूमि। घन कारे०

चपला चमकि चमकि चमकावत।
देखि देखि मम मन घवरावत।
वर्षा बरसै झुकि झूमि झूमि। घन कारे०

मन्त्री- चटनी प्रसाद। शराब भी कैसी चीज है? पीते ही बस आँखों में लाली और तबियत पर बहाली छा जाती है।

चटनी- हाँ हुजूर! इसके बराबर और दुनियां में चीज ही क्या है? इसके सिबाय और कौन ईश्वर की कुदरत को उलट सकता है? जरूर इसका बनाने वाला शैतान का बाप होगा।

मन्त्री- शैतान का बाप?

चटनी- तावेदार का मतलव है "शैतान की तरह मशहूर हुआ होगा?

मन्त्री - शैतान की तरह नहीं बुद्ध भगवान की तरह कहो।

चटनी- खता माफ हुजूर। बन्दा भूल गया। दरअसल दर्बार इसी तरह फर्माया करते हैं।

मन्त्री- उंह। दर्बार की भली कही। वह तो पुराना ऊँट है। धरम ही धरम चिल्लाया करता है। इसलिये तो उससे साहब लोग नाराज हैं।

चटनी- और कुँवर साहब?

मन्त्री– हाँ, कुँवर साहव वड़ा अच्छा आदमी है चटनी ! हमारी उसकी खूव घुटती है। आज-कल रेजीडेन्ट साहव से वाल नाच सीखता है।

चटनी– वड़े अच्छे आदमी हैं हुजूर ! सब तरह का शौक करते हैं, मर्दों का, औरतों का, खाने का, खिलाने का, सैर का, शिकार का, पहनने का, औढ़ने का, गाने का, वजाने का।

मन्त्री– सव तरह का चटनी (मर्दों का, औरतों का, खाने का, खिलाने का, सैर का, शिकार का, पहनने का, ओढ़ने का, गाने, बजाने का) सबसे बड़ी वात तो यह है कि उसको भी शराव और औरत पसन्द हैं और मुझको भी। वह भी धरम कर्म सचाई कचाई के झगड़ों को झूँठे मानता है और मैं भी।

द्वारपाल– (प्रवेश करके) हुजूर ! विलियम साहव की वग्घी आ रही है।

मन्त्री– हैं ? विलियम साहव ! धत्तेरे की, सारा मजा विगाड़ दिया।

चटनी– हाँ हुजूर, सारा गुड़ गोवर कर दिया।

मन्त्री– अच्छा उठाओ ! जल्दी, सब हटाओ। (उठकर मुँह पोंछता है) डिब्बी में से पान खाता है। सेवक, चटनी प्रसाद आदि सब चीजें उठाकर

भाग जाते हैं। गाने वाली भी जाती है दो। कुर्सियां लाई जाती हैं।)

द्वारपाल– (कार्ड देता हुआ) विलियम साहब बाहर खड़े हैं, हुजूर ! (गोबर गणेश नेपथ्य में जाकर मि० विलियम के साथ लौटता है। दोनों बैठते हैं।)

विलियम– ये बोलो डीवान शाब ! आप ने हमारा बाट पर शोच लिया ?

मन्त्री– हाँ साहब सोच लिया है। यह तो पक्की बात है न ५०) रुपये सैकड़ा से कम मुनाफा नहीं होगा ?

विलियम– नही नहीं ! सो तो हमने बोल डिया है। फिर अगर नुक्शान होगा टब भी हम आप का शेअर पर टो फिफ्ठी परशेन्ट नफा होगा ही। टो माल बिकने में आपको मडड करना होगा।

मन्त्री– ठीक है तो फिर सब बातें मंजूर हैं। मेरे आधे शेअर रहेंगे। आप काम शुरू कर दीजिये। माल तो हम हुक्मन बिकवा सकते हैं।

विलियम– लेकिन हमको टहरीरी हुकुम मिलना चाहिए ना ?

मन्त्री– हाँ हाँ तहरीरी हुकुम आपके पास आज ही पहूँच जायेगा (नेपथ्य की ओर) चटनी प्रसाद जी।

चटनी– (प्रवेश करके) हुजूर ?

मन्त्री– साहब के वास्ते सिगार लाओ।

चटनी– जो हुकुम ! (प्रस्थान)

मन्त्री– (मि० विलियम से) वैसे हम भी आपको और फायदा करायेंगे साहब ! आप डाक्टरी पास हैं ना ?

विलियम– हां हां, "हामियो–पैथी" भी जानटा है और "ऐलोपैथी" भी जानटा है।

मन्त्री– तो बस ठीक है, हम आपको ही "सिविल सर्जन" और "हैल्थ आफिसर" भी मुकर्रर करेंगे।

विलियम– लेकिन हम एक–२ घन्टे से जाडा टाइम नहीं डेने सकेगा।

मन्त्री– हां, हां, एक क्या भले ही आप आधा २ घन्टा ही देना। हमारे तो नाम के लिये ही अंग्रेज अफसर चाहिए। हां आप हमारे आदमियों को अपनी "कानून बाजी" नहीं सिखाहयेगा। (चटनी प्रसाद एक रकावी में "सिगार माचिस रख जाता है।)

विलियम– नहीं २, डीवान शाव। हम सब रेजीडेन्ट शाव से मालुम कर लिया हम टुम्हारे शे जाडा बेका-

यडा काम नहीं लेगा। आप कुछ फिकर नई करना।

मन्त्री– नहीं साहब ! और तो मैं जानता हूँ। लेकिन आपके अंग्रेजी में कायदा कानून वहुत चलता हैं, इसी से कहा है।

विलियम– वैल, मैन ! वहाँ तो हम गोरा लोग को वहूत आदमी पर राज करना परटा है। इस लिए लोगों को खुश रखने के वास्टे ही और काम ठीक रखने के वास्टे भी और कायडा का जरूरठ है। यहाँ टो हम को टुम बोलेगा उसो माफक काम करने सकेगा।

मन्त्री– ठीक है साहब ! तव तो आप चैन की बंसी वजायें। उस राज को अपना ही समझिये। लिजिए, सिगार पीजिये ना ? (रकाबी सरकाता हैं।)

विलियम– (सिगार उठाता हुआ) अच्छा टो हम काम का आर्डर डे डेवें। (सिगार जेव में रखता हैं)

मंत्री– हाँ, हाँ, आप वे फिक्र होकर दे दिजिये।

विलियम– (उठता हुआ) अलराहट ! थैंक यू ! बैरी थैंक फुल टू यू ! गुडबाई ! (दोनों हाथ मिलाते हैं। मंत्री, विलियम को नेपथ्य तक पहुँचाकर लौटता है।)

मन्त्री– चटनी प्रसाद !

चटनी– (प्रवेश करके) हुजूर !

मन्त्री– अच्छा अब लाओ ! उड़ने दो आज महफिल ! काम पट गया तो दो लाख रुपये महावार की आमदानी होगी ।

द्वारपाल– (प्रवेश करके) हुजूर । कोतवाल साहव का एक आदमी, एक कैदी को लेकर हाजिर होना चाहता है ।

मन्त्री– (कुछ खीझकर) ऐसी तैसो कोतवाल की । सव को आज हीं मौका मिला है ।

चटनी०– हाँ हुजूर ! ये लोग वक्त वेवक्त कुछ नहीं देखते ।

मन्त्री– अच्छा बुलाओ ! (बैठता है । द्वारपाल का प्रस्थान) (स्वगत) "इधर शराब का नशा आ रहा है, उधर ये लोग चैन नहीं लेने देते ।"
(जमादार एक कैदी को लेकर प्रवेश करता है ।)

जमादार– (सलाम करता हुआ) हुजूर !

मन्त्री– सलाम ! क्या मामला है ?

जमादार– हुजूर ! यह कैदी पहले कोतवाल साहव के जमाने से एक साल से कैद है । खुराक अपने घर की खाता रहा है ।

मन्त्री– ठीक है यह तो मामूली वात है ।

जमादार- लेकिन हजूर ! चार पाँच दिन से इसकी औरत खाना नहीं लाती।

मन्त्री- क्यों नहीं लाती ? यहाँ क्या उसके नाना का घर है जो उसके खाविंद को खिलाया जाय।

जमादार- हजूर वह कहती है कि घर में जो कुछ था वह तो छः महीने में ही खतम हो गया था। अब तक आस पास से उधार लेकर काम चलाया, अब उधार भी नहीं मिलता।

मन्त्री- नहीं मिलता तो हम क्या करें ? वह उसका खाविंद है, उसे खिलाना ही पड़ेगा ? क्यों न चटनी ?

चटनी०- हाँ हजूर! खिलाना ही पड़ेगा । नहीं खिलाना था तो वह इसकी औरत ही क्यों बनी ?

मन्त्री- अच्छा, फिर इसे यहाँ क्यों लाये हो ?

जमादार- फिर हजूर खुराक का सवाल उठने पर इसे अदालत में पेश कर सजा दिलाने के इरादे से मिसिल ढूंढ़ी गई। लेकिन कोई मिसिल या रिपोर्ट नहीं मिली।

मन्त्री- हाँ, नहीं मिली होगी। बहुत से कैदी बिना मिसिल के भी होते हैं। क्यों चटनी प्रसाद ?

चटनी- हाँ, हजूर ! बहुत से कुत्ते भी तो कटी पूंछ के होते हैं।

मन्त्री- अच्छा फिर ?

जमादार- फिर, इसीलिये अदालत में न भेजकर इसे हुजूर के पास भेजा है कि क्या किया जाय ?

मंत्री तो मैं क्या करूँगा ? मैं कोई ज्योतिषी तो हूँ नहीं ? क्यों चटनी प्रसाद ?

चटनी- हाँ हजूर, मिसिल नहीं थी तो नया मुकदमा बनाना पुलिस का कर्म था।

मंत्री अच्छा इससे पूछो। (कैदी से) क्यों बे तू किस मामले में कैद हुआ था ?

कैदी- हजूर ! मेरे घर में एक भैंस अच्छी थी। वह पहले वाले कोतवाल साहब ने माँगी थी। मैंने इन्कार कर दिया। बस इसी पर मुझे कैद कर कर दिया।

मंत्री- झूठ है झूठ। कोतवाल बड़ा अच्छा आदमी था। यहाँ रोज आता था। क्यों न चटनी ?

चटनी- हाँ हजूर ! वह बड़ा शौकीन आदमी था। रोज नई रंडी लाता था।

कैदी- हजूर ! मैं सबूत दे सकता हूँ।

मंत्री- हमने कह दिया कि हम सरकारी आदमी के खिलाफ कोई बात नहीं सुन सकते। क्यों चटनी प्रसाद ?

चटनी- हाँ हुजूर । सरकारी आदमी के खिलाफ शिकायत सरकारी आदमी कैसे सुन सकता हैं ?

कैदी- हुजूर मुझे बड़ी तकलीफ है । औढ़ना-बिछौना भी नहीं है । हबालात में खटमल, जुएँ और मच्छरों की भरमार हैं ।

मंत्री- हम यह नहीं सुनना चाहते । यह हवालात वालों से कहना । हमें तो तेरा जुर्म बता । ऐसा नहीं हो सकता कि कोई बिला वजह कैद हो । क्यों चटनी ?

चटनी- हाँ हुजूर । जब हुजूर फर्माते हैं ती कैसे हो सकता हैं ? यह जरूर छिपाता है । या भूल गया हैं ।

कैदी- नहीं हजूर मैं कसम खाता हूँ ।

मंत्री- हाँ, यह मुमकिन हैं कि यह भूल गया हो । खैर जी इस पर १००) रु० जुर्माना किया जाता हैं ।

कैदी- हुजूर सौ ?

मंत्री- अरे यह तो तेरी तकदीर है कि मिसल नहीं मिलती, वरना न जाने कितना बड़ा जुर्म होगा ? यह तो बहुत कम है । क्यों न चटनी ?

चटनी- हाँ हजूर । इससे कम तो हो ही क्या सकता हैं ? हाँ आखीर में बिन्दी का अपशकुन माना

जाता है, इसलिये १०१) रु० कर दिया जाय तो यह भी खुश हो जायेगा।

मन्त्री– हाँ यह ठीक है। अच्छा १०१) सही।

कैदी– हुजूर। मैं एक सौ रुपये कहाँ से लाऊँगा? खाने को तो है ही नहीं।

मन्त्री– कहीं से देना। इसका हम क्या करें? यह सोचना हमारा काम थोड़े है। क्यों न चटनी?

चटनी– हाँ हुजूर। अपन इस तरह सोंचे तो एक ही दिन में मर जायें।

कैदी– हुजूर मैं बर्बाद हो चुका हूँ?

मन्त्री– अच्छा जी। अभी न दे सके तो इकरार लिखवा लेना और किस्तों से वसूल करना। जाओ।

(पर्दा गिरता है)

(दो मुसलमान और एक हिन्दू सिपाही प्रवेश करते हैं।)

मुसलमान– यार! साले सुखदेवा की औरत क्या है, परी है।

हिन्दू– हाँ भाई। चमारों में तो ऐसा रूप मैंने भी कभी नहीं देखा।

दूसरा– अरे चमारों में क्या, राजाओं के रनिवास में भी शायद ही हो।

मुसलमान– आखिर ये इसे लाया कहाँ से जी ?

हिन्दू– अरे हरीपुर की बताते है। कहते हैं इसका बाप वड़ा भगत आदमी था। वह मर गया। माँ भी इसकी शादी करके काशी चली गई।

मुसलमान– अरे चमारों में भी भगत होते हैं।

हिन्दू– हां भाई भक्ति और राजपूती किसी के वाप की थोड़े ही है। जो करे उसी की है। "रैदास" भगत भी तो चमार ही था।

मुसलमान– लेकिन यार इसे तो उड़ाना चाहिये। कोतवाल साहव की नजर पर चढ़ गई है। कामयावी मिल गई तो अच्छा खासा इनाम मिलेगा।

हिन्दू– नजर पर चढ़ने जैसी तो वह है ही। लेकिन भाई मामला मुश्किल है। वह साला सुखदेवा मजिस्ट्रेट साहव के मुंह लगा हुआ है।

मुसलमान– अरे तो ऐसे अनाड़ीपन से काम थोड़े ही किया जायेगा।

हिन्दू– तो किस तरह होगा ?

मुसलमान- होगा कैसे ? साली को रोज बेगार में घसीटो। वहाँ खूब तंग करो लालच दिखाओ। धीरे २ किसी न किसी दाँव पर आही जायेगी।

हिन्दू- हाँ, शायद तुम्हारी ये तरकीव चल जाय तो चल ही जाय।

दूसरा मुसल-भाई। तुम्हीं लोग करना। अपने से तो ऐसी गुंडाई नहीं हो सकती।

मुसलमान - ओ हो ! ये नई सीता-सती परगट हूई है। तुम भी भगत बनोगे क्या ?

दूसरा मुसल-जब भगत नहीं बना जाय तो फिजूल पाप भी क्यों करें ? किसी का भला अपने से न बने तो बुरा क्यों किया जाय ?

मुसलमान- अबे तुम हिन्दू लोग यों ही भूखे मरते हो।

पहला हिन्दू-अच्छा भाई। मरने दो इस झिक झिक को। अभी तो चलो मालिनियों से अपनी दस्तूरी ले आवें। हाँ चलो ! मेरे घर भी वीवी साग की राह देखती होगी।

(सब का प्रस्थान)

(दृश्य दूसरा)

(स्थान–मदनपुर में सुखदेवा चमार का घर। एक बच्चा गूदड़ी पर सो रहा हैं। दूसरा प्याज के साथ रोटी खा रहा है। साधारण खादी के कपड़े पहने सुखिया खड़ी है।)

सुखिया– (स्वगत) ओह ! शहरी जीवन कितना गंदा है ? कितना भ्रष्ट है ? यहाँ के आदमी क्या हैं, पिशाच है ? कोई किसी को बहन बेटी की निगाह से देखना तो जानता ही नहीं। जिधर जाती हूँ: लोगों की बुरी नजर से बचकर निकलना मुश्किल हो जाता है। न जाने क्या२ बकते हैं ? गन्दगी के मारे देखो तो सिर चढ़ जाता है। आज आवे, तो कहूँ कि किसी गाँव में चल कर रहें। आग लगे ऐसे शहर में मैं तो रोज एक मुहर मिले तो भी न रहूँ।

नेपथ्य में–अरे सुखिया ! ओ सुखिया ! किवाड़ खोल।

सुखिया– (स्वगत) है ? आ गए। (प्रकट) आई स्वामी। आती है ..... (किवाड़ खोलती है)। सुखदेवा अपने औजार लिये प्रवेश करता है।)

सुखिया– कब से बाट देख रही हूँ ? रोटी भी ठंडी हो गई।

सुखदेवा– (औजार रखता हुआ) क्या करूँ ? आने को तो कब से ही कर रहा था मगर मजिस्ट्रेट साहब ने रोक लिया। उनके बच्चे के पैर का नपैना लेना था।

सुखिया– खैर, गरम पानी तैयार है। नहा डालो। फिर रोटी ठंडी हो जायेगी।

सुखदेवा– (हँस कर, पैरों की धूल झाड़ता हुआ) हाँ, नहाना तो पड़ेगा ही। तुम तो मुझे पंडित बनाकर छोड़ोगी। अच्छा, तुम्हारे बाप रोज नहाते थे क्या ?

सुखिया– हाँ रोज क्या, वे तो दोनों वक्त नहाते थे। नहाने के बाद ठाकुर पूजा करते थे।

सुखदेवा– ठाकुर पूजा ?

सुखिया– हाँ, घर में ही एक छोटा सा मन्दिर बना रक्खा था। वैसे हमारे यहाँ गाँव के मन्दिर में भी दर्शन करने को कोई रोकता नहीं है। लेकिन सेवा घर के ठाकुर जी की ही करते थे। उसके बाद कीर्तन होता था और फिर रोटी खाते थे।

सुखदेवा– कीर्तन कौन करता था ?

सुखिया– हम सभी।

सुखदेवा– तो तुम लोग भी नहाती थीं ?

सुखिया– हाँ, हम सब नहाती थीं। हमारे घर में न कोई शराब पीता था, न मास, मुर्दा खाता था।

सुखदेवा– अच्छा तब तो मुझे भी ये चीजें छोड़नी पड़ेंगो ?

सुखिया– यह तो आपकी मर्जी पर है। मैं तो जबरदस्ती करने से रही।

सुखदेवा– जबरदस्ती आप ही होगी तुम तो वनाओगी नहीं ?

सुखिया– नहीं क्यों न वनाऊँगी ? आप खाओगे तो वनाऊँगी ही। हाँ मैं न खाऊँगो। आदमी खुद जिस वात को पाप गिने उससे दूर रह सकता है। किन्तु दूसरे को तो समझा बुझा कर ही रोक सकता है।

सुखदेवा– क्यों ? बुरी वात तो जबरदस्ती भी रोकनी ही चाहिये।

सुखिया– नही स्वामी। कौन जाने अपनी ही समझ गलत हो। फिर जबरदस्ती रोकने से बुराई रुकती कहां है ? रोकने पर व्यसनी उसे छिपे-चोरी से करता है। उसे छिपाने को झूठ बोलता है। छल प्रपंच करता है।

सुखदेवा– यौन और बुराई वढ़ जाती है ?

सुखिया- जबरदस्ती का फल तो यही होता है। सुधार तो हृदय के पलटे से होता है।

सुखदेवा- तो जबरदस्ती सब अवस्थाओं में अनुचित है? लेकिन मैं इन चीजों को छोड़ सकता हूँ सुखिया! आखिर ये कुछ अच्छी चीजें थोड़ें ही हैं। रोज तो वैसे भी नहीं मिलती फिर कभी कदा के लिये क्यों ईमान बिगाड़ूँ।

सुखिया- यह तो बात आप के लायक ही है स्वामी। मनुष्य देह बार २ थोड़े ही मिलती है? हाँ, हिंसात्मक सभी अवस्था में अतुचित है।

सुखदेवा- और विना हिंसा की?

सुखिया- अहिंसात्मक वल का प्रयोग उचित है। उसके बिना तो काम ही कहाँ चल सकता है? आखिरी जब कोई अपनी अनुचित बात दूसरे से जबरदस्त मनाने लगे तो उसे रोकने को तो अस्त्र चाहिये ही।

हरदेवा- क्यों माँ अपन तो किसी को मार कर तो नहीं खाते अपने से तो वो ज्यादा पापी है जो खाने के लिये ही जीवों को मारते हैं।

सुखदेवा- यह लो। तुम्हारा पैर पड़ते ही मेरे घर में भी भगती और पंडिताई शुरू हो गई।

सुखिया- (कुछ लजा कर) अच्छा चलो अब नहा डालो।

सुखदेवा- (अनुसुनी करके) लेकिन सुखिया ! तुम्हारे गाँवड़े गाँव में इतनी भक्ति कहाँ से आ गई ?

सुखिया- असल में हमारे गाँव का खातो बड़ा भगत आदमो था वह न तो झूठ बोलता था न किसी से बिना मेहनत का पैसा लेता था। खुद भूखा रह जाता परन्तु गरीब को जरूर खिलाता। भगवान का नाम तो हरदम उसके मुँह पर रहता था। किसी से लड़ते या किसी को गाली देते तो कभी किसी ने देखा ही नहीं।

सुखदेवा- बड़ा सत पुरुष था।

सुखिया- हाँ, उसे देखते ही मनमें अपने आप भक्ति पैदा होती थी। उसी की संगति से हमारे घर में भक्ति भाव पैदा हुआ लेकिन आपके इस शहर से तो मेरा जी बहुत घबराता है।

सुखदेवा- क्यों ?

सुखिया- क्यों क्या ? मुए रोज बेगार में पकड़ कर ले जाते है और दिन भर न जाने क्या २ कहते बकते है। यहाँ के आदमियों में धरम तो है ही नहीं।

सुखदेवा- हाँ शहर है। यहाँ आदमियों में लफंगाई तो ज्यादा है ही लेकिन क्या करे, भगवान ने अपने को तो पैदा ही ऐसी जाति में किया है कि बेगार से छूट ही नहीं सकते।

सुखिया– तो किसी गांव में क्यों नहीं चलकर रहते। वहाँ वेगार का काम कभी २ ही पड़ता है। वहाँ रूखा सूखा मिलेगा लेकिन इज्जत तो बचेगी।

सुखदेवा– (सिर हिलाकर) यह बात है। हाँ यह तो यहां पक्का रोग है। फिर अपनें लोगों की और गरीवी की इज्जत तो यहां इज्जत गिनी ही नहीं जाती। इसीलिये कई वार एसी मन में आती है कि न हो तो मुसलमान या ईसाई हो जाऊँ।

सुखिया– (कुछ घबराकर) क्यों ? मुसलमान, ईसाई क्यों ?

सुखदेवा– और क्या ? फिर न कोई बेगार में पकड़ेगा न कुछ कर सकेगा। सब बराबर बैठायेंगे और इज्जत करेंगे। यहाँ शहर में बीसियों भील. चमार, भंगी, वगैर: इस झगड़े के मारे मुसलमान, ईसाई बन गये। अब बे सिपाही बने फिरते हैं। उनकी तरफ कोई भी आँख उठा कर नहीं देख सकता।

सुखिया– नहीं स्वामी! कहीं ऐसा न करना। धर्म क्या संसारी बातों के बदले में देने लेने की चीज है। और इज्जत क्या है ? इज्जत तो धर्म पर दृढ़ रहने में ही है, धर्म छोड़ने में थोड़े ही है। आजधन या इज्जत के लिये धर्म छोड़ने वालों के नाम इज्जत से कौन लेता है ?

सुखदेवा– क्यों ? जिसे [illegible] में पशु की तरह रहना पड़े, उसके

रहने से फायदा क्या ?

सुखिया– इसमें धर्म का क्या दोष स्वामी ? यह तो लोगों का दोष है। भगवान की नजर में न ऊँच न नीच है। धर्म किसे कहते है कि गरीब को सताओ, कुकर्म करो ?

सुखदेवा– लेकिन होंता तो यही है खाली धर्म इन बातों को कहाँ रोकता है।

सुखिया– हुआ करै, अपना २ धर्म अपने साथ है। आखिर भगवान तो देखता है और सच्ची बात तो यह है कि इसके लिये दोषी हम ही हैं।

सुखदेवा हम दोषी किस लिये हैं ?

सुखिया– इसलिये कि 'धर्म' जहाँ 'कर्तव्य" है वहां "अधिकार" भी है धर्म के अनुसार जो अपना दर्जा हो उसे प्राप्त करना और कायम रखना भी हमारा धर्म है। हम यह नहीं करते इससे यह दशा है।

सुखदेवा– तो फिर क्या करूँ। शहर भी तो छूटना मुश्किल है। लैन दैन के सैकड़ों झगड़े हैं। और कुछ करे तो भी नहीं हो सकता। अकेला चना क्या भाड़ को फोड़ सकता है।

सुखिया– खैर अभी न हो सके तो न सही। जैसा होगा भुगतना पड़ेगा। घर रह सकूँ तो बच्चों को

भी सम्हालूँ सिखाऊँ, कुछ कात पीस भी लूँ। इसी से कहती थी।

सुखदेवा–अच्छा देख कल मजिस्टर साब से कहूंगा। लेकिन असल में तो सुखिया। तुम्हारा रूपही ऐसा है कि इसे देख कर आदमीं पागल हुए विना नहीं रहता। विचारे लोगों का क्या दोष ? मेरा खुह का मन ही दिन भर यहाँ लगा रहता है।

सखिया– (लजा कर मुंह फेरती हुई) ये लो, आप भीं ऐसी वातें करने लगे ? तो मुझे कोई ऐसी दवा ला दो ना जो ये रूप ही बिगड़ जाय सारा झगड़ा ही मिट जाय।

सुखदेवा– वाह ! रूप बिगाड़ दूँ ? तो फिर मैं क्या देखूँगा। सच कहता हूं सुखिया। पहले तो मैं यह सुनकर डरा था कि तुम कुछ पढ़ी हो। लेकिन.....

सुखिया– लो रहने दो इन बातों को। चलो, नहा लो।

सुखदेवा– सुनो तो सही।

सुखिया– (कानों को हाथों से पकड़ कर) ना ! मैं सुनती ही नहीं।

सुखदेवा– अच्छा वह नही, दूसरी बात कहता हूं।

सुखिया– (कानों से हाथ हटा कर) अच्छा सुनती हूं।

सुखदेवा– असल में पहले मैंने ब्याह इसी ख्याल से किया था कि पहली स्त्री से हुए बच्चों को पालने में सहायता मिले। लेकिन.....

सुखिया– आप तो अब भी वही ख्याल रखिये स्वामी! गृहस्थ का असली मतलब ही यही है।

सुखदेवा– नहीं सुखिया! अब मैं यह सोच रहा हूं कि मैंने गलती की है।

सुखिया– क्या गलती की है?

सुखदेवा– यही, आखिर ब्याह तो सुख, भोग, मौज के लिये होता है। मेरे यहाँ तुम्हें क्या सुख मिलेगा। एक अच्छी साड़ी भी तो नहीं।

सुखिया– नहीं स्वामी! शरीर को सजाना और शौक साधना समझदारों का काम थोड़े ही है। हमारे गाँवों में तो इसे बुरा मानते हैं। आदमी का अच्छापन और सुख तो अच्छे कर्म करने में है। रहा ब्याह उसका मतलब साँसारिक जीवन को पार करने में एक दूसरे की मदद करना है न कि सुख भोग।

सुखदेवा– साँसारिक जीवन में इससे क्या मदद मिलती है।

सुखिया– सभी मिलती हैं। एक के सुख दुख में दूसरा भाग लेता है। कठिनाई में एक दूसरे की सहायता करता है। एक दूसरे को सब काम करना, सम्हालना सिखाता है। बच्चों को योग्य बनाते हैं।

कमाया हुआ धन अच्छे काम में लगाते है। एक का अधूरा रहा हुआ काम दूसरा पूरा करता है। किसी काम में एक दूसरे का मुंह न देखना पड़े। एक गृहस्थ भी पूरी स्वतन्त्रा भोग सके। इसीलिये तो ब्याह किया जाता है।

सुखदेवा– तो दुनिया जो धर्म कर्म को छोड़ कर सुख के पीछे पड़ी रहती है। यह पागलपन है ?

सुखिया– धर्म को छोड़कर सुख के पीछे पड़ना तो पागलपन के सिवाय और हो ही क्या सकता है ? सुखेच्छायें कब तृप्त होती हैं क्या ? फिर उनके लिये धर्म छोड़ने से लाभ क्या ?

सुखदेवा– (कुछ आश्चर्य से) तुम तो बड़ी ज्ञानी हो। ये इतनी वातें तुम कहाँ से सीख गईं ?

सुखिया– (लजा कर) उंह ! मैं ज्ञानी काहे की हूं। मैं तो पिताजी की वातें सुना करती थी। वे ही कोई कोई याद है।

सुखदेवा– नहीं सुखिया ! अव मैं देखता हूं कि भगवान जो करता है, अच्छा ही करता है। तुम्हारे साथ से मेरा भी जन्म सुधर जायेगा।

सुखिया– लो रहने दो इन बातों को। चलो नहा लो।

सुखदेवा– (अनसुनी करके) अच्छा सुखिया। तुम्हारे यहाँ

कीर्तन कैसे गाए जाते थे ? देखें, एक सुनाओ तो ?

सुखिया– पहले नहा तो लीजिये ।

सुखदेवा– अच्छा, तुम्हें सच्ची वात वता दूँ ?

सुखिया– हाँ बताओ ।

सुखदेबा– मैं पहले ही नहा कर आया हूँ ।

सुखिया– और मैंने पानी गरम कर रक्खा है सो ?

सुखदेवा– नहीं, तुम यह तकलीफ मत उठाया करो । मैं नदी पर नहा आया करूँगा । हाँ अव कीर्तन सुना दो । देखूँ कैसा होता है ?

सुखिया– अच्छा सुनिये । कबीर साहब का पद है । (गाती है सुखदेवा बीच २ में हाथों से तान मिलाता है)–

(बरवा-तिताला)

जनम तेरो बातां में बीत गयौ ।
तैं न कवहूँ न कृष्ण कह्यौ ॥

(१)

पाँच बरस का आला-भोला, अव तो बीस भयौ ।
मकर पचीसी माया कारन, देस विदेस गयौ ॥

(२)

तीस वरस की अब मत उपजी लोभ बढ़ै नित नयौ,
माया जोरी, लाख करोरी, अजहूँ न तृप्त भयौ।

(३)

वृद्ध भयो तब आलस उपजी, कफ नित कँठ रह्यौ।
साधु की संगति कबहुँ न कीनी, विरथा जनम गयो॥

(४)

यों संसार स्वार्थ को लोभी, झूँठो ठाठ रच्यो।
कहत 'कबीर' समझ मन मूरख, तू क्यूँ भूल गयो॥

सुखदेवा– आहा ! कैसा अच्छा पद है ? सुनने से ही जैसे मन में गंगा वह उठी। अच्छा सुखिया। आज से मैं भी शराब, मांस, मुर्दार, झूठ सब छोड़ता हूं।

सुखिया– यही मेरे स्वामी के लायक बात है स्वामी। मेरे बड़े भाग्य हैं जो मुझको आपके चरणों में जगह मिली।

सुखदेवा (अनसुनी करके) अच्छा सुखिया, यह कोर्तन मुझे सिखा दो।

सुखिया– क्यों नहीं मैं तो बड़ी खुशी से सिखाऊंगी।

सुखदेवा– अच्छा तो सिखाओ। लो अभी सिखाओ।

सुखिया– अभी, पहले रोटी तो खालो।

सुखदेवा– ना रोटी पीछे खाऊंगा।

सुखिया– हे राम ! इतना शौक ? अच्छा गाइये ।
जनम तेरो बातों में बीत गयो ।

सुखदेवा– विकृत स्वर से, बेताल गाता है :—
जनम तेरो बातों में बीत गयो ।।

सुखिया– ऐसे नहीं । अच्छा पहले स्वर की अलाप लीजो ।
आः आः आः आपः
सा रे गा । रे ग मा । गा रे मा ।
हाय ! हाय ! हाय ! हाय !
सालेगा ! सालेगा ! सालेगा !

(पर्दा गिरता है)

(दृश्य तीसरा)

(स्थान–राजमार्ग । एक वृद्धा सिर पर गठड़ी लिए हुए प्रवेश करती हैं । उसके पीछे दो युवतियाँ घूंघट निकाले और कुछ सामान लिये आती हैं । सामने से रघुनाथ पण्डा आता हैं ।)

रघुनाथ– क्यों माँ जी । आज किधर बिस्तर दोरिया उठाया है ।

वृद्धा– कहीं नहीं भैया । अब इस शहर में नहीं रहा जाता । यहाँ सीतापुर में एक झोंपड़ा भाड़े लिया हैं । वहीं जा रही हूं ।

रघुनाथ– क्यों मां जी यहाँ क्या दुख था ? पीढ़ियों का बास ऐसे छोड़ते हैं क्या ?

वृद्धा– क्या करूं भैया ? हमें छोड़ने की हौंस थोड़े ही थी । इतने दिन से पड़ी ही थी । लेकिन अब नहीं रहा जाता t

रघुनाथ– क्यों अब क्या हो गया ?

वृद्धा– हो क्या गया भैया ? यहाँ रहकर खाऊं क्या ? हमारे घर में कोई आदमी तो कमाने वाला

है वहीं। सिलाई, कताई, पिसाई इन्हीं कामों पर गुजर होती थी। सो अब इन कारखानों के आगे इनमें से एक भी धन्धा नहीं रहा। फिर दुनियां भर के गुण्डे आ भरे हैं। मजूरों के आगे भाड़ा चौगना हो गया है। अब तो यहाँ या तो मालदारों की गुजर है या उनकी, जिन्हें इज्जत का डर न हो।

रघुनाथ– हाँ यह बात तो सच है मां जी।

वृद्धा– फिर भैया इन में ज्यादातर रंडुवे-भंडुवे है। यहाँ न उनका घरबार है न लुगाई, न जात-पांत, न कोई बढ़ा बूढ़ा। बिना अंकुश के है। जो मन में आवे बकते हैं। इज्जतवालियों का घर से निकलना मुश्किल हो गया है। फिर मेरे तो दों विधवा पतोहू हैं।

रघुनाथ– यह तो विलकुल ठीक है माँ जी। हमारे मुहल्ले में भीं बहुत से लोगों ने पहले तो लालच में आकर अपने घर किराये पर दे दिये, अब पछता रहे हैं।

वृद्धा– पछिताने की वात ही है भैया! मैं तो इसी लिए इस शहर को छोड़े जाती हूँ।

रघुनाथ– क्या करूँ माँ जी। मैं भी चलता, लेकिन जिज-मानी का झगड़ा है। खैर, कोई और मकान

हो तो निगाह करना। मैं भी बाल बच्चों को तो वहीं रक्खूँगा।

वृद्धा– ठीक है भैया। देखूँगी। अच्छा है एक से दो घर जान पहचान के हो जायँगे!

(सब का प्रस्थान)

(एक ओर से कोतवाल और दूसरी तरफ से मौला बख्श जमादार आते हैं।)

मौला०– सलाम हुजूर।

कोतवाल– सलाम मौला। कहो क्या खैर खवर है?

मौला०– और तो सब खैर सल्ला हैं हुहूर। खटीक से "दस्तूरी" का गोश्त और कलाल से शराब लेकर हुजूर के मकान पर पहुँचा आया हूँ। इधर गश्त पर गया था। आजकल इन कारखानों की वजह से जुर्मों की तादाद बहुत वढ़ गई है।

कोतवाल– हाँ, यह तो कुदरती वात है। क्या कोई पकड़ा गया है?

मौला०– जीं नहीं। पकड़ा तो किसी को नहीं है। ज्यादा-तर मामले जुआ खेलने और औरतों से छेड़खानी करने के थे। सो यों ही तय कर दिये गये।

कोतवाल– किस तरह ? कहो ना ? यहां कौन है ?

मौला०– (इधर उधर देखकर) हुजूर जुआ खेलने वालो से ३००) महावार ठहरा है। और जगह खेलने वाले पकड़े जायेंगे।

कोतवाल– और दूसरों से ?

मौला०– दूसरों से तो जैसा मामला हो, वैसा ठीक वक्त पर ठहराना ही ठीक होता है। फिर जैसी हुजूर की मर्जी।

कोतवाल– हाँ यह ठीक है। अच्छा जीं। उस सुखिया का क्या हुआ ?

मौला०– क्या बताऊँ हुजूर ? बड़ी ही बदजात है। हाथ ही नहीं धरने देती। दो चार दिन बेगार में वसीटता था। लेकिन वह पाजी सुखदेवा मजिस्ट्रेट साहब के यहाँ पहुँचा और उन्होंने झट मना कर दी।

कोतवाल– क्यों ? मजिस्ट्रेट तो ऐयास आदमी तो नहीं है ?

मौला०– नहीं हुजूर। अय्याश नहीं है। लेकिन वह सुखदेवा उन्हीं के तहत में काम करता है। मुँह लगा हुआ है। फिर आज कल मोचीखाना भी उन्हीं के तहत में है।

कोतवाल– ठीक ठीक। अब समझा। तो तुम एक काम करो ना ?

मौला०– वह क्या ?

कोतवाल– इस साले सुखदेवा को ही फाँसों ना ? क्यों, फाँस सकोगे ?

मौला०– नहीं क्यों हुजूर ? इतना भी काम न हो तो पुलिस में नौकरी ही क्या की ? आज ही लीजे।

कोतवाल– वस फिर देखें साली को कौन बचाएगा ?

मौला०– हाँ, फिर तो मजिस्ट्रेट का भी कुछ न चलेगा।

कोतवाल–अरे मजिस्ट्रेट क्या, किसी का भी न चलेया। यहाँ तो सब वनी वनी के हैं। अच्छा जाओ। जल्दी खवर लाना ?

मौला०– जो इरशाद। (सलाम करके दोनों का प्रस्थान। पर्दा उठता है।)

———

दृश्य चौथा

(स्थान-गिरधर पुर (मदनपुर राज्य के एक जागीरदार का पार-ग्राम) में सुरेश चन्द्र की हवेली। दरवाजा बन्द है! एक तरफ से एक वृद्ध और एक अधेड़ ब्राहमण प्रबेश करते है। और दूसरी ओर से रामदयाल राव।)

रामदयाल– नमस्कार पंडित जी। आज किधर ? सुरेश के यहां न्योता है। क्या ?

पंडित– आशीर्वाद रामदयाल जी। सुरेश अब पडितों को योड़े ही जिमाता है। वह तो अब गाँधी का चेला हुआ है। चरखा चलवाता है। अछूतों को खिलाता है। (साथी की ओर संकेत करके) ये महमान हैं। इन्हें ठाकुर साहब के पाभ ले जा रहाहूँ।

महमान– यह सुरेश कौन हैं जी ? हवेली तो वड़ी आलीशान है।

पंडित– अजी माली है।

महमान– (आश्चर्य से) हैं ? माली ? और सुरेश नाम ?

रामदयाल– हाँ साहब ! माली का लड़का होने से क्या

हुआ ? मालदार का लड़का है। इसका बाप यहां का नदार था। उसने सारी रहमत को लूट लूट कर घर भर लिया। कुछ जागीर भी है। फिर आप जानते हैं, "माया तेरे तीन नाम-परसा-परसी और परसराम"।

महमान– हाँ सो तो है ही, 'सर्वे गुणा कंचनम माश्रयन्ति'। लेकिन फिर ऐसे आदमी का लड़का गाँधी भक्त कैसे हो गया ?

रामदयाल– अजी इस गांधी ने हमारी तो महफिल ही बिगाड़ दी।

महमान– सो कैसे ?

रामदयाल– कैसे क्या ? यह सुरेश पहले इतना शौकीन था कि पूछो मत। दिन भर में दस पौशाकं बदलता था। शराब के बिना एक घड़ी न रहता था। गोश्त के बिना रोटी न खाता था। रण्डियों के गाना सुने बिना नींद न आती थी।

महमान– यह तो धन और धतूरे का स्वाभाविक गुण है। 'यह पाये बौरात जन, वह खाये बौराय'।

रामदयाल– अजी साहब, कुछ न पूछिये। इससे बड़ी २ उम्मेदें थीं। इस का बाप तो बड़ा कंजूस था। हाँ, यह मौला दोला था। इसलिये उम्मेद थी कि उसके मरने के बाद इस धन से मौज करने

को मिलेगी। लेकिन एकदम सब गड़बड़ हो गया।

महमान– किस तरह हुआ ? ऐसे बिगड़े युवक तो बहुत कम सुधरते हैं।

रामदयाल– हुआ क्या, एक ऐब इसमें ठेठ का था।

महमान– वह क्या ?

रामदयाल– यह कि जो बात इसके ध्यान में जंच जाती, वह कैसी ही हो फिर उसे न छोड़ता। भले ही सारी दुनियां एक तरफ हो जाय।

महमान– हाँ, इस आदत से कभी २ लाभ भी बहुत होता है।

रामदयाल– होता होगा। हमारा तो नुकसान ही हुआ है। न जाने कहां से एक बाबा चला आया और उसने यह कह कर सुरेश के यहाँ खाना खाने से इन्कार कर दिया कि तुम निगुरे हो। बस फिर लग गई उस धुन गुरु बनाने की।

महमान– फिर ?

रामदयाल– फिर क्या ? न जाने कहाँ से उसे एक गांधी का आदमी मिल गया। उसने उसे कुछ किताबें दे दीं। बस तभी पड़ गई मुरकी।

महमान– किताबों से क्या हुआ ?

रामदयाल– हुआ क्या ? पहले झूठ बोलना छोड़ा. फिर

शराब, फिर मांस, और अब अच्छा खाना-पहनना भी छोड़ दिया है। घर में धन भरा पड़ा है तो भी सूखी रोटी खाता है। और मोटी खादी पहनता है।

पण्डित- अरे भाई धन भोगना भी भाग में हो तब भोगा जाता है। कहा भी है, 'खाय न खर्चे सूम।' भाग में नहीं हो तो खर्चे कैसे ?

रामदयाल- खर्चता नहीं हो सो भी बात नहीं है पण्डित जी, खर्च खूब करता है, लेकिन करता है उल्टे कामों में। एक खादी भण्डार खोला है। एक कपड़े बुनने का कारखाना। बस, इस जुलाहे-पन में ही सारी माया लग रही है।

पण्डित- लेकिन क्यों जी ! ये गांधी जादूगर है क्या,? (महमान से) तुमने तो देखा होगा ना ?

महमान- हाँ, देखा तो है। क्यों ?

पण्डित- और क्या, जहाँ देखो, लोगों पर इसकी भुरकी पड़ जाती है। सुना है, लाट साहब की कौंसिल में भी उसने कितनों ही पर भुरकी डाल दी है।

महमान- नहीं जी ! ये तो लोगों की गप्पें हैं। बात यह है कि गांधी सत्य और धर्म की बातें कहता है। इसी से लोग उसे मानते हैं।

पण्डित– वाह ! यह कैसा धरम कि अच्छा मत खाओ। अच्छा मत पहनो। अछूतों को छुओ।

महमान– क्यों अपने प्राचीन ऋषि भी तो कंद मूल खाते थे। खाली कोपीन लगाते थे। राजा तक हाथ के कते बुने कपड़े पहनते थे। और सच पूछो तो आजकल कौन सी विदेशी चीज लेने का धर्म है ? विदेशी खांड में हड्डी रक्त पड़ता है। दवाओं में चर्बी का उपयोग होता है। चीनी के कहे जाने वाले प्याले, बर्तन, हाथी दांत के कहे जाने वाले बटन, कंघे, छत्री, ब्रुश, कलम चाकू के दस्ते वगैरा गायों, भैंसों की हड्डी के बनते हैं। चमड़े के सामान जीते जानवरों के चमड़े से बनते हैं। कपड़ों में चर्बी लगाई जाती है।

पण्डित– हाँ, इस दृष्टी से तो खादी बड़ी अच्छी चीज है।

रामदयाल– क्या सचमुच ऐसा भी अनर्थ होता है।

महमान– हां, हां, फिर इससे रोजगार कितनों का चलता है ? मिल का कपड़ा लें तो उसके पैसे एक मालदार की जेब में जाते हैं। खादी लें तो उससे कई गरीबों का पेट भरता है। क्यों कि कताई बुनाई पेट भरने के लिये गरीबों के सिवाय कोई नहीं करता।

पण्डित– तब तो यह स्वार्थ में ही परमार्थ है ?

महमान– और क्या ?

पण्डित– लेकिन अछूतों की बात तो हमारी समझ में नहीं आती भाई। भला यह कैसे हो सकता है ? अच्छा अब चलना चाहिये, फिर ठाकुर साहब कहीं चले जायेंगे तो मिलना न होगा।

रामदयाल– हाँ जाइये। अभी तो टैम है। अच्छा नमस्कार।
(परस्पर प्रणाम, आशिष करके सबका प्रस्थान)

सूरदास– (अन्धा तकली पर सूत कातता और गाता हुआ प्रवेश करता है)

(श्याम कल्याण)

हरि का चक्र सुदर्शन प्यारा।
रक्षक आठों याम तुम्हारा॥
हिंसा, स्वार्थ-भाव का नाशक,
शान्ति, सत्य, सन्तोष प्रकाशक,
विधवाओं का एक सहारा।

दीनों का दारिद्रथ निवारक,
धनिकों का भव सागर तारक,
संतों की सुरसरि की धारा।

बिन पैसे पर-हित का साधन,
अंग-हीन निर्धन का जीवन,
वस्त्र विदेशी अर्थ दुधारा।

तीसरी– वाह। तुही तो बड़ी लाठ है। सब से पहले तुलाएगी मैं दिन निकले की बैठी हूँ ?

दूसरी– बैठी है तो मैं क्या करूँ ? मेरे को तीन कोस जाना है। खबर भी है ?

चौथी– और मेरे को चार कोस जाना हैं। मुझे तुलाने दो। (बीच में घुसना चाहती है)

पांचवी– नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं सबसे आगे खड़ी हूं। मेरा पहले तुलेगा। (धक्का-मुक्की होती है)

सुरेश– लड़ो मत मां। सब का तुल जायेगा। धीरज रक्खो। (कुछ शान्ति होती है। एक वृद्धा, एक लड़की, और सूरदास पीछे खड़े है।)

लड़की– चलो मां। अपना भी सूत तुला दो ?

वृद्धा- औरों को तुला लेने दे बेटी। धक्का-मुक्की में कोन पड़े ?

लड़की– देख मां सूरा तो यहाँ भी खड़ा २ कताई कर रहा है।

वृद्धा– हाँ बेटी। उसके पास तकली है ना ? तकली से तो चलते २ भी काता जा सकता है।

लड़की– तो मां अपने भी तकली बनवा लेना ? यहां इतनी देर बैंठी रहती है, आती जाती है। तकली हो तो यहाँ और रास्ते में भी काता करें।

वृद्धा– हाँ, वेटी है तो ठीक। ये इतनी वखत यों ही ही तो जाती है। आज वनाउंगी। क्यों सूरे। तू इससे चलते २ भी कात लेता है।

सूर– हां मांजी। चलते २ क्या? इससे तो बातें करते, बैठे, सोते, सब तरह काता जा सकता है। विछोने पर भी जब तक नींद नहीं आती पड़ा २ काता करता हूँ। इसकी बदोलत दूनी कताई हो जाती है।

वृद्धा– ठीक है, भैया! आज मैं भी वनाऊँगी।

लड़की– अच्छा माँ, मेरा कल का सूत क्या भाव बिकेगा?

वृद्धा– कम से कम तीन पाव का तो विकेगा ही वेटी। कम्बोड़िया कपास लाई हूँ तव से तेरा सूत अच्छा आने लगा है।

लड़की– हा माँ। ये कपास वड़ी नरम है। षर 'महात्मा' इतने सूत का क्या करता होगा मां?

वृद्धा– कौन जाने वेटी। कपड़े बुनवाता होगा। ये भी सुनी है कि सूत से फिरंगियों को बांधता है।

लड़की– फिरंगी? वो जो अपने यहाँ पोथी मिठाई वाटने आते हैं। वो टोप लगाते हैं।

वृद्धा–..... हां वोई।

दृश्य पाँचवाँ

(स्थान- इञ्जिन की चक्की का कारखाना। कारखाने का मुसलमान मालिक टहल रहा है। कुछ स्त्रियाँ बैठी अनाज बीन रही हैं। कुछ आदमी भीतर काम कर रहे हैं।)

सुखिया- (प्रवेश करके) क्यों मियाँ साहब। मुझे भी कुछ मजदूरी मिल सकती है।

मियाँ- (मुस्कराता हुआ) हाँ हाँ, तुम्हारे लिये नजदूरी की क्या कमी है। सुखिया ! लो तुम ये (और स्त्रियों से अलग एक टोकरा बताकर) गेहूं बीनो।

(सुखिया बैठती है। मियाँ एक परात देता है। वह बीनना शुरु करती है।)

मियां- (स्वगत) औरत क्या है। हूर है हूर। तभी तो कोतवाल जान देता है। (एक मूढ़ा लाकर, सुखिया के पास बैठता है। सुखिया से) क्यों सुखिया ! क्या यह सच है कि तेरे खाविंद को कैद हो गई है ?

सुखिया- हां मियां साहब ! उनको झूठा इल्जाम लगा कर कैद कर दिया है। तभी तो मुझे यहाँ आना पड़ा है।

मियां– हा, झूठा इल्जाम लगाना तो इस राज में मामूली वात है सुखिया । लेकिन अब उसका छूटना मुश्किल है । मैंने सुना कोतवाल उससे नाराज है ?

सुखिया– हां साहव, कोतवाल की तो सारीं करतूत है ।

मियां– तव तो और भी मुश्किल है । वह वड़ा ही वद-कार है । इस राज में वैसे ही जेर तजवीज रहते २ कैदियों की उमर वीत जातीं है । फिर सरकारी आदमी खिलाफ़ हों, तव तो वात ही क्या ?

सुखिया– देखो मियां साहव ! गरीव का तो भगवान ही है । वह दिखावेगा सो देखना ही पड़ेगा ।

मियां– खैर. भगवान तो है ही सुखिया । मुझे तो यह फिकर है कि तेरी गुजर कैसे चलेगी ? सुखदेवा ने अड़े भिड़े वक्त के लिये कुछ जमा भी किया है कि नहीं ?

सुखिया– जमा कहां से करते साहव ! दिन भर तो मोची खाने में वेगार में काम करते थे । रात को थोड़ा वहुत काम घर पर होता उससे गुजर मुश्किल से चलती थी ।

मियां– अच्छा, ये वच्चे तो सुखदेवा की पहली औरत के हैं ना ?

सुखिया– जी हाँ, पहली के तो हैं ही।

मियां– तो तू उनके लिये क्यों आफत देखती है ?

सुखिया– मैं नहीं देखूँ तो अब और उनके लिये कौन है, मियां साहब ? अव तो वो मेरे ही हैं।

मियां– क्यों, उनको अनाथालय में रख देना ?

सुखिया– नहीं, मियां साहब ! मेरे हाथ पैर चलते हैं तब तक उन्हें अनाथ कैसे बना दूं। फिर अनाथालय वाले चमार के लड़कों को कहां लेते हैं।

मियां– और फिर भी तुम लोग इस हिन्दूपन को धता नहीं बताते ?

सुखिया– धरम छोड़ने की चीज थोड़े ही है मियां साहब ! वह तो भगवान और मनुष्य के वीच की बात है।

मियां– क्यों ? ऐसा धर्म क्या काम का, जिसमें जूते, धक्के, बेगार के सिवाय कुछ मिले ही नहीं। कोई पूछे तक नहीं। ये लोग बिल्ली का झूँठा दूध पी लेते हैं। रेल में खाना खा लेते हैं। अंग्रेजों के साथ चाय पीते हैं और तुम्हें छूते तक नहीं। हमारे यहाँ देखो। कोई हो कलमा पढ़ा और बराबर का भाई हुआ। उसी वक्त साथ खाना खा लेते हैं। एक के काम पड़े तो सब मदद करते हैं। तुम्हारे हिन्दुओं में ये बातें कहाँ ?

सुखिया- हाँ मियां साहब ! कहते हैं, हिन्दुओं में भी पहले तो ऐसा ही हुआ। अब लोग पुरानी बातें भूल गए हैं। लेकिन इसलिये धर्म थोड़े ही छोड़ा जाता है।

मियां- होगा पहले, आज तो कुछ भी नहीं। अच्छा, तुम एक काम करो ना।

सुखिया- क्या करूँ ?

मियां- लड़कों को हमारे यतीम खाने में भरती करा दो और तुम्हें मैं अपने मकान में नौकर रख लूँगा। तुम्हारा धर्म भी बना रहेगा और काम भी चल जायेगा।

सुखिया- क्या काम करना पड़ेगा ?

मियां- काम क्या है ? कोई छोटा मोटा काम हुआ तो कर देना नहीं तो बैठी रहना।

सुखिया- नहीं मियां साहब ! मैं ऐसी नौकरी नहीं करती मेरे लिये तो यही मजदूरी अच्छी है।

मियां- तुम तो पागल हो। इसमें क्या है ? यहां तो हजारों औरतें इस तरह नौकरी करती हैं।

सुखिया- करती होंगी साहब ! अपनी करनी पार उतरनी। जिसकी जो जाने।

(भीतर से कोई आवाज देता है।)

मियां- (उठता हुआ) तुम इस बात पर सोचो सुखिया!
(प्रस्थान)

(भीतर से दो युवक आते हैं।)

एक- क्या सुखिया यही हैं ?

दूसरा- हाँ यही तो है।

पहला- करम फूटे ! भला यह क्या चमार के घर रहने लायक है ?

दूसरा- हां जी, अल्ला मियां के यहाँ भी अन्धेर है। (सुखिया उसकी तरफ देखती है) क्यों सुखिया। गेहूं खतम हो गये क्या ?

सुखिया- हां भैया ! यह तो साफ हो गए और ला दो।

दूसरा- अच्छा वो भीतर बोरी पड़ी है, उसमें से ले आओ।

सुखिया- मुझे तो यहीं ला दो भैया ! मेरे दूसरे के घर में न जाने की सौगंध है।

पहला - अरे, अच्छा नखरा किया। जाकर ले क्यों नहीं आती ? मजदूरी और नखरे की थोड़े ही बनती है।

सुखिया - ना भैया, मैं भीतर नहीं जाऊँगी।

पहला- नहीं जायेगो तो अपगे घर जा। यहां क्या है, तेरी बहन और बहुत हैं।

सुखिया– अच्छा भैया जाती हूँ। लाओ इतने काम के तो जो पैसे बनते हों दिला दो।

दूसरा– अधूरे काम के पैसे नहीं मिलते ? पैसे लेने हों तो शाम तक काम करो।

सुखिया– अच्छा भैया तुम्हीं निहाल हो। (प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

सुखिया– (प्रवेश करके) अब क्या करूँ? प्रभो क्या इस संसार में गरीबी इतना बड़ा पाप है ? क्षुद्रता इतनी हेय है ? क्या मैं गरीब और शूद्र हूँ ? इसीलिये मुझे संसार में धर्म के साथ रहने को भी जगह नहीं ? सच्चाई के लिये संसार में मजदूरी भी नहीं ? तब क्या सत्य को छोड़ दूँ ? अपनी इच्छा का घात करके शरीर का सौदा करूँ ? नहीं भगवन ! यह मुझसे न होगा। मैं प्राण रहते धर्म को न छोड़ सकूँगी। किन्तु प्रभो ! तुम तो अशरण शरण कहलाते हो, सुनती हूँ, तुमने अनेकों की रक्षा की है। अनेकों का उद्धार किया। तुम जाति पांति नहीं मानते। फिर मैंने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम मेरी रक्षा नहीं करते ? मुझे कोई आश्रय स्थान नहीं बताते ? (गाती है)

कहते है लोग भीड़ भक्त पर पड़ी जहाँ।
पहुँचा है तेरा हाथ सदा ही तुरत वहां ॥

"प्रह्लाद-' को तूने ही वन नरसिंह बचाया।
आया तू ही गज के लिये दौड़ा हुआ यहाँ॥
हां लाज "द्रोपदी" की भी तूने बचायो थी।
सोया है मेरी बारही ऐ कृष्ण! तू कहाँ?
(अक्समात दो तीन मुसलमान और दो एक हिन्दू टूट पड़ते हैं। सुखिया चिल्लाती है।)

नेपथ्य में- खबरदार! घबराना नहीं! कौन है? (तलवार निकाले हुये भूपाल सिंह प्रवेश करता है। अपराधी भाग जाते है।)

भूपालसिंह-कौन सुखिया? ये लोग कौन ये?

सुखिया- (उठती हुई) कौन जाने ठाकुर साहब! भगवान आपका भला करे। आपने मेरी इज्जत बचा दी। आप मेरे लिये 'भक्त भय हारी कृष्ण बन गये। ठाकुर साहब। (हाथ जोड़ती है।)

भूपालसिंह-नहीं सुखिया, ऐसी बात मत कहो। भगवान तो बड़े हैं। मैं तो एक गरीब राजपूत हूँ। स्त्री की रक्षा करना तो मेरा धर्म है। इसमें कौन बड़ी बात हुई?

सुखिया- धर्म? इस पापी संसार में अपना धर्म ही कितने पालन करते हैं? ठाकुर साहब! आप गरीब हैं इसीलिये आप में धर्म है, नहीं तो देखिये न बड़े बड़ों को?

भूपाल०- आखिर तुम कह सकतीहो कि इन लोगों ने तुम्हारे

ऊपर क्यों हमला किया था ? तुम्हारे बदन पर तो कोई गहना, या बढ़िया कपड़े भी नहीं दीखते हैं ।

सुखिया– गहने कपड़े नही ठाकुर साहब ! जेहाँ तक मैं समझ सकी हूँ, कुछ लोगों की पाप वासना ही इस हमले का कारण है । कितने ही दिनों से ये लोग मेरे पीछे पड़े हैं । और अगर मेरा अन्दाजा ठीक है तो मेरे स्वामी भी इन्हीं के षड़यन्त्रों के शिकार हुए हैं । (आकाश की ओर हाथ तथा दृष्टि उठा कर) भगवन ! इसी नीचता को दुनियां उच्चता कहती है । इसी क्रूरता के हाथों असंख्य प्रजा का जीवन रहता है । यही पिशाच आपके वंशज हैं । यही आपका न्याय है ?

भूपाल०– समझ गया सुखिया ! यह सब अमृतलाल कोतवाल की करतूत है । वह वास्तव में मनुष्य नहीं पिशाच है । मुझे डर है कि तुझे वह घर पर भी चैन नहीं लेने देगा ।

सुखिया– यह डर तो पहले ही से है ठाकुर साहब ! इसीलिये रात को पड़ौसियों के यहाँ सोती हूँ ! किन्तु पापी पेट के लिये तो बाहर निकलना ही पड़ता है । हाय ! आज निर्बल का कोई नहीं सब सबल के हैं ।

भूपाल० - कोई चिन्ता नहीं सुखिया ! यदि तुम्हें मेरे ऊपर भरोसा हो तो मेरे साथ आओ ! मैं तुम्हें पड़ोस

में एक घर बता दूँगा और वहीं पर कुछ काम तलाश कर दूँगा। वहाँ कोई तुम्हें कुछ न कह सकेगा।

सुखिया– आपका भरोसा ? आपको इस शहर में कौन नहीं जानता ठाकुर साहब ? आज शहर राज्य से रक्षा पाने की उम्मेद तो पापी रखते हैं। दीन दुखी तो आपकी ओर ही देखते हैं।

भूपाल०– अच्छा सुखिया मेरे साथ चल। घर देख ले। फिर किसी को साथ भेज कर सामान मंगा लिया जायेगा।

सुखिया– चलिये ठाकुर साहब। ईश्वर आपका भला करे। (प्रस्थान) (जल्दी २ कुछ सिपाहियों और मौलाबख्श जमादार का प्रवेश)

एक– क्यों जमादार जी ! आप तो सब सुन रहे थे ना ? क्या २ हुआ ?

मौला०– अरे बहुत सी बातें हुई। वह तो घाघू है। समझ गया कि सब काम कोतवाल का है। अब वह उसे अपने ही घर रखेगा।

दूसरा– अजी ! साली उसके साथ कैसे राजी हो गयी ?

मौला०– अरे वह ऐसा आदमी थोड़े ही है। नहीं तो वह हरामजादी छाया तो पड़ने ही नहीं देती।

(कोतदाल का प्रयेश)

कोतवाल–कहां है ? क्यां हुआ मौला ! भाग गए क्या ?

मौला०– हुजूर ! मदद आने के पहले ही वह उसे लेकर चला गया। भागो तो ब्रिलकुल नही। भागना तो हुजूर के ही वन्दो को पड़ा।

कोतवाल–अच्छा दिल्लगी रहने दो। कहाँ ले गया ?

मौला०– अपने घर ले गया है। वहीं रखेगा।

कोतवाल–वहीं रक्खेगा ? तव तो हाथ डालना मुश्किल होगा।

मौला०– हाँ, वहा दाव लग ही नहीं सकता। साथ ही अव वह मजदूरी के सिल भी बाहर नहीं आवेगी। अव तो वस सर्द आहें भरिये और पड़े रहिये।

कोतबाल–क्यों ? क्यों ? क्या भूपालसिंह की भक्ति भी पोली ही है।

मौला०– नहीं, ऐसा तो ढंग नहीं है। वह कोतवालीं का नौकर थोड़े ही है। असल में वह सब जान गया, इसींलिये यह तजबीज हुई है।

कोतवाल–लेकिन उसकी हालत मैं जानता हूं। वह उसे क्या खिलाबेगा ? उसके घर तो खुद ही मुश्किल से काम चलता हैं।

मौला०– इतनी मुश्किल में, थोड़ी और मुश्किल देखेगा।

और क्या ? नहीं तो आप खर्चा भिजवा दीजे ना ? आखिर हुजूर की माशूका है ।

कोतवाल-यार मौला यह हंसी का वक्त नहीं हैं । मुझे इस भूपाल पर बड़ा ही गुस्सा आ रहा है ।

मौला०- गुस्सा तो आना ही चाहिए । नाक कटने की बात हो गई है ।

सिपाही- हाँ हुजूर ! अब इसे बहुत घमंड हो गया है । बात बात में आड़ा फिरता है ।

कोतवाल-ठीक है ! अब इसका घमंड तोड़कर ही आराम लूंगा । यह बच्चा पुलिस को क्या समझता है ? अभी दीवान साहब को भपारे पर चढ़ाता हूं और इसे घमंड का मजा बताता हूं । (तेजी के साथ प्रस्थान । दूसरे भी जाते है ।)

(मिल के मजदूर इकठ्ठे होते हैं ।)

एक- कहो भाई सब आ गए ?

दूसरा- सब कहाँ आ गए ? अभी मिस्त्री लोग आने हैं । बुनाई खाते के लोग आने हैं । कितने ही कोतवाली गए हैं ।

तीसरा- कोतवाली क्यों ?

दूसरा- अरे तुम्हें मालुम नहीं । कताई खाते के २० आदमी अड्डे के बाहर जुआ खेलते थे । वे पकड़ लिये गए ।

तीसरा– भाई अपने आदमी भी पूरे उल्लू हैं। जब एक जगह के पुलिस को रुपए दिए जाते है। तो दूसरी जगह क्यों खेलते हैं ?

चौथा– मैं कहता हूँ कि खेलते ही क्यों है ?

पाचवां– खेलें नहीं तो क्या करें ? मँजूरी तो पेट भरने लायक भी नहीं मिलती। फिर पाच बाल बच्चे।

छटा– और फैशन से रहना पड़े सो अलग।

दूसरा– क्यों अपने बाप दादे क्या फैशन से रहते थे ?

पांचवा– बाप दादे नहीं रहते थे तो उस वक्त कोई भी फैशन में नहीं रहता था। आज तो सब बड़े और भले आदमी फैशन से रहते हैं ?

छठा– हाँ, आज तो गुण औगुण पीछे देखा जाता है। जाहिरा तो बाहरी ठाठ ही पुजता है। फैशनेबुल चमार भी पान खाकर, सिगरेट पीता हुआ, निकले तो लोग पास बिठाते हैं और बिना फैंशन पण्डित को भी दुरदुराते हैं।

चौथा– तो कमाई तो फैशन में उड़ा दी जाय और खाने के लिये जुआ चोरी का सहारा लिया जाय। क्यों ?

पांचवा– करना ही पड़ता है "भूखा करे भंडाई।" आखिर बाल बच्चों को घर से निकाला तो नहीं जाता।

चोथा– निकालने की क्या जरूरत है। खिलाने को नहीं हो तो बाल बच्चे बढ़ावें ही क्यों ? कुटुम्ब बनावें ही क्यों ?

पांचवां– वाह ! यह एक ही । अरे ये भी किसी के हाथ को बात है क्या ? मेरी ही बात लें । १० बरस का था तब शादी कर दी । १४ बरस का था तब माँ बाप मर गए । घर में भूजी भाँग भी न थी । व्याह का कर्ज सिर पर था । द्वादशे में और कर्ज हो गया । अब बता ये सब मैंने किया क्या?

तीसरा– हां जी, बहुत सी आफतें तो इन कुरीतियों से ही पैदा होती हैं ।

पांचवां– आफत ? अरे मरना हो जाता है, मरना । अब बोल, मुझे १५ रुपये मिलते हैं । आधी तनखा कर्ज में जमा होती है । बाकी ७॥) रहे । और खाने वाले ? मैं मेरी औरत दो बच्चे, एक विधबा बहन ! अब बता, सत के पुतले बन कर बैठें तो कैसे काम चलेगा ?

चोथा– लेकिन भाई इन खोटे कामों का भी तो फल अपने ही को भोगना पड़ेगा । अब बोलो, इन्हें पाप लगेगा सो लगेसा । सजा अलग होगी ।

छटा– हाँ सो तो बनी ही बात है ।

सातबां– तो फिर क्या करें ? फांसी लगा कर मर जायें ?

चौथा– मर क्यों जायें ? जो अपनी कमाई से जेब भरते है । हजारों की पिसाई, कताई, बुनाई छुड़ा कर सब का पैसा खींच रहे हैं, उनसे तनख्वाह बढ़वावें ना ?

आठवाँ– हाँ जी, ठीक तो है। हमारी कमाई से ये तो तिजोरिया भरें और हम पेट भरने को भी पाप करते फिरे ? क्या हम इन सब जरूरतों को पूरी करने की मांग नहीं कर सकते ?

सातवां– नहीं क्यों न कर सकते ? आखिर विलायत के मजदूरों ने नाक पकड़ कर कारखाने वालों से अपनीं सब बातें मंजूर करा लीं कि नहीं ?

आठवां- हाँ उन्होंने तनखाह ही नहीं बढ़वाई, अपने लिये अच्छे मकान भी बनवाये हैं। मदरसे, अस्पताल खुलवाये हैं। धाय घर बनवाए हैं। उनके बच्चों की दुपहरी मदरसे में कराई जाती है। और इन सब बातों का खर्च कारखाने वालों को देना पड़ता है।

नवां– यही नहीं वहां काम करते किसी का अङ्ग भङ्ग हो जाये तो पेंशन मिलती है। बीमारी की तनखा दी जाती है। इज्जत का वर्तावा होता है।

तीसरा– और यहाँ ?

पांचवां– यहां साला फोरमेन भी ठोकर के बिना बात नहीं करता। कभी काम करते करते मर भी जायें तो उसके घर वालों को कुछ भी नहीं मिलता।

तीसरा– और साले बड़े बड़े औहदे तो सब अंग्रेजों को ही देते हैं।

चौथा- फिर वहाँ ६ ,७ घण्टे का दिन होता है, यहां १० से १५ घन्टे तक का।

तीसरा- लेकिन भाई सारा दोष तो अपने में है। अपनी फूट ही अपने को खाती है। नहीं तो इन्हीं को, ही ये सब बातें करनी पड़े।

पाचवां- हां करनी तो क्यों न पड़ें ? लेकिन इतना एका हो तब ना ? यहाँ तो "यूनियन" बनावें तो चन्दा देने में जान निकले एक करें तो आपस में फूट फैल जाय। यहाँ ये रोग न होता तो ३२ करोड़ पर पाँच लाख गोरे राज ही कैसे करते ? भला और भी कहीं ऐसा अन्धेर होता है ?

तीसरा- फिर वहां एक की मांग पूरी कराने को सब हड़ताल कर देते है। रेल, तार, डाक, कार, कारखाने, जहाज वगैरा के मजदूर और क्लर्क एवं हम्माल तक सब एक हो जाते हैं। वैसा एका यहाँ कहां ?

आठवां- अरे भाई एका भी करने से होता है। अपने आप तो रोटी भी पेट में नहीं जाती। पहले विलायत में भी यही हालत थी। कोशिश करने से ही आज की हालत पैदा हुई है।

(एक और मजदूर का प्रवेश)

आगन्तुक-भाई आज सभा नहीं होगी। कल होगी।

पांचवां- क्यों क्या बात हुई ?

वही– बात यह है कि अभी कुछ और आदमी पकड़े गये हैं। आज उन्हें छुड़ाने की कार्यवाही होगी।

तीसरा– किस मामले में पकड़े गए हैं ?

वही– कुछ तो चोरी के मामले में पकड़े गए हैं, कुछ एक औरत को बेचने के बारे में और कुछ एक लड़की को जेवर के लिये मार देने के अपराध में।

दूसरा– राम राम ऐसा अनर्थ होने लग गया। सब अपने कारखाने ही के थे क्या ?

वही– नहीं जी, सबसे ज्यादा तो पुराने इक्के, तांगों वाले और धुने जुलाहे वगैरह है।

तीसरा– भाई ये सब बातें सारे मजदूरों को बदनाम कर देंगी। कम से कम अपने आदमियों के लिये तो कुछ करना ही चाहिये।

चौथा– इसमें कहना भी क्या है ? कुछ न किया तो मुँह दिखाने को जगह नहीं रहेगी। कोई मकान तक भाड़े न देगा।

पांचवा– हां इस हालत का कुछ इलाज जल्दी करना चाहिए भाई।

छटा– बस, इलाज यही है कि सब एका करके हड़ताल करो और सब बातों को इन्तजाम कराओ। आखिर पेट तो सब का भरना ही चाहिये।

सातवां– हाँ जी, नही भूखों मरने वाले उतपात करेंगे ही। वैसे किसी के जुर्म करने की हौस थोड़े ही है ?

आठवां– अच्छा तों चलो आज इसी बात की तैयारी करो।

सब– हाँ चलो, आज यही हो।

(सब का प्रस्थान)

पर्दा उठता है

दृश्य छठा

(स्थान––गोवर गणेश की कोठी। कमरे में महफिल जमी है। कोतवाल, चटनी प्रसाद आदि भी बैठे हैं। एक तरफ गाने वाली बैठी हैं।)

दीवान– कोतवाल साहव ?

कोतवाल–हुजूर !

दीवान– मैंने उस भूपालसिंह को अभी बुलवाया है। देखिये ! आपके सामने ही उसे कैसा सीधा करता हूँ ? उस सुखिया को अपने घर में रक्खा है ना ?

कोतवाल–जी हां, वहीं एक कोठरी दे रक्खी है और अपने घर का काम-काज लेता है।

दीवान– बाहर कभी नहीं निकलती ?

कोतवाल–निकलती है तो भी किसी को साथ लेकर। अव उसे एक और भी मददगार मिल गया है ना ?

दीवान- वह कौन है।

कोतवाल–वही हमीर खाँ सिपाही, बेड़े में है ना ?

दीवान– अरे हाँ, वह भूपालसिंह के पड़ौस में रहता है। वही ?

कोतवाल–जी हाँ वही, वह भी ऐसा खप्ती सा है। दिन में तीन बार नहाता है। हर दम 'तसवीह' लिये रहता है।

दीवान– पहले तो वह पुलिस में था ?

कोतवाल-जी हाँ, लेकिन वह तो धर्मात्मा और सचाई का पुतला बनता है। ऐसे आदमी की पुलिस में गुजर कहाँ ? फिर उस में एक और ऐब था।

दीवान- वह क्या ?

कोतवाल-यही कि किसी के पूछने पर लोगों की बातें जाहिर कर देता था इसीलिए निकाल दिया गया।

दीवान- ठीक हैं, लेकिन उसे तो भूपालसिंह का पिछलगुआ ही समझना चाहिये।

कोतवाल–और क्या हुजूर ? वह तो पिछलगुआ ही है। असली झगड़े को जड़ तो यह भूपालसिंह ही है।

दीवान- ठीक है, आने दो बच्चा को। लेकिन, कोतवाल जी ! आखिर सुखिया इतनी क्यों भागती है ?

कोतवाल–गांवड़े को है हुजूर ! पुराने ख्याल दिमाग में भरे है फिर सुखदेवा के छूटने की उम्मेद है।

दीवान– और जो कहीं सुखदेवा मर जाय तो ?

कोतवाल फिर तो अपने आप ही सीधी होगी। आखिर जवानी दीवानी है। कितने दिन सती सीता बनी रहेगी ?

दीवान– तो यही सही ! खैर, तब तक एक गाना होने दो।

चटनी– (वैश्या से) हा, होने दो कोई मौके की चीज !

वैश्या– (गाती है) :–

बुल बुल तू गुलशनों में, कब तक छिपी रहेगी ?
जोशे जुनूँ की आतिश कब तक दबी रहेगी ?
दरिया उमंग का जब मौजों को ले चढ़ेगा।
किश्ती में सब्र की तब, कब तक टिकी रहेगी ?
फिर है बहार ही ये, कितने दिनों की महिमा ?
कुञ्जों की ढाल भी ये, कब तक बनी रहेगी ?
आखिर को खिजा में ये होंगे न गुल न गुलशन !
सैय्याद (सैयाद) से कहां तब, फिर तू बचो रहेगी ?

द्वारपाल– (प्रवेश करके) हुजूर ! भूपालसिंह जी आए हैं।

दीवान– अच्छा, आने दो ! (दरबान का प्रस्थान)

चटनी– अच्छा नन्हीं जान ! तुम जरा देर के लिये बड़े कमरे में चली जाओ ! (वैश्या का प्रस्थान)

भूपाल०- (प्रवेश करके प्रणाम करता हुआ) जनाव ! दीवान साहव ! कोतवाल साहव !

सव- (अद्धोत्थित होकर प्रणाम का उत्तर देते हैं।)

दीवान- आइये ! आइये ! आप ही का इन्तजार हो रहा था।

भूपाल०- (वैठता हुआ) आया साहव ! फर्माइये ! केसे कष्ट किया ?

दीवान- कैसे. क्या जी कुछ ऐसी ही ऊल जलूल वातें सुनी थी ?

भूपाल०- कैसी वातें ?

दीवान- आपने उस सुखिया चमारिन को अपने घर में रक्खा है क्या ?

भूपाल- हा, रक्खा तो है ! क्यों ?

दीवान- हाँ, वही मैंने सुना था। भला सोचिये ! आप जैसे खानदानी के लिये यह कितनी बुरी बात है। फिर आप तो दर्बार में भी आने जाने वाले है। आपके रिश्तेदार दर्बार के मर्जीदान हैं।

भूपाल-क्यों दीवान साहब ? इसमे बुराई की कौनसी बात है ? मेरे यहां तो बहन बेटी की तरह रह रही है। कुछ दुष्ट उसके पीछे पड़े हैं। इसीलिये मैंने उसे आश्रय दिया है।

दीवान– मुमकिन है, आपका उसका कोई बेजा तअल्लुक न हो।लेकिन आप जानते हैं, दुनिया का मुंह तो पकड़ा नहीं जा सकता। फिर वह जवान और खूबसूरत ! उसका खाविन्द जेल में। ऐसी हालत में, मेरी तो सलाह यही है कि आप उसे निकाल दें। क्यों न चटनो ?

चटनी– हां, हुजूर ! ऐसा सोना किस काम का जो नाक कान को तोड़े ?

भूपाल०– माफ कीजियेगा, दीवान साहब ! यह मुझ से न होगा। मैं बिलकुल बच्चा नहीं हूँ। ऐसी बातों के ख्याल से मैं एक असहाय सती को बदमाशों के चंगुल में फंसने के लिये नहीं छोड़ सकता।

दीवान– तो क्या आप समझते हैं कि ...

भूपाल०– समझता नहीं, जानता हूं दीवान साहब ! मुझे सब मालुम हैं। इसके सबूत के लिये कोतवाल साहब का यहाँ होना ही काफी है।

दीवान– (कुछ नरम होकर) खैर, भूपालसिंह जी। आप से चालाकी करना बेकार है। तो बात यह है कि मैं ही चाहता हूँ कि आप उसे निकाल दें। और मैं यह आपकी भलाई की नजर से चाहता हूँ।

भूपाल०–यह मुमकिन नहीं दीवान साहब।

दीवान– मैं सच कहता हूँ कि अगर आप मेरा कहना मानेंगे तो बहुत फायदा उठावेंगे। बस यह समझ लीजिये

कि आप मुजे मोल ले लेंगे। एक महीने के भीतर आपको जागीर दुगनी हो जायेगी ।

भूपाल०- दीवान साहब ! मैं अपने को ऐसे आदमियों से कुछ ऊंचे दर्जे का आदमी समझता हूँ। मुझे अपने धर्म का ज्ञान है। कुल का अभिमान है, मुझसे आप ऐसी उम्मेद न रखिये।

दीवान- तो आप एक चमारी के लिये हमसे .....

भूपाल०- हाँ दीवान साहब ! माफ कीजियेगा, आज मुझे उस चमारी पर जितनी श्रद्धा है, उतनी न पण्डितों पर है न रानियों पर। दर असल आप को शरम आनी चाहिये कि.....

दीवान- लेकिन आप जानते हैं, आपकी इस हरकत का नतीजा क्या होगा ?

भूपाल०- मैं नहीं जानता दीवान साहव ! लेकिन जो भी कुछ हो उसके लिये मैं तैयार हूँ। मुझे कोई भी बात धर्म के लिये च्युत नहीं कर सकती।

दीवान- देखो भूपालसिंह ! मान जाओ ! वरना पछिताओगे !

भूपाल०-आपको जो करना हो कीजिये, बन्दा जाता है।

दीवान- ठहरो ! जाते कहां हो ? है कोई ? गिरफ्तार (कोतवाल, चटनी और द्वारपाल आदि झपटते हैं।)

भूपाल०- (तलवार निकालकर घुमाता हुआ) खबरदार ! जो नजदीक आवेगा मारा जायेगा ! (सब पीछे हटते हैं। भूपालसिंह चला जाता है)

दींवान- बड़ा बदजात है जी !

कोतवाल-हां हुजूर बड़ा सरकश है।

चटनी- (गर्दन पर हाथ फेरता हुआ) हुजूर ! देखिये तो मेरी गर्दन पर मेरा सिर ठीक है या नहीं ? कोई जख्म तो नहीं है ?

दीवान - सिर तो मौजूद है। क्यों तुम्हें यह क्या खयाल पैदा हुआ ?

चटनी-हुजूर उस बदमाश ने ऐसी फुरती से मेरी तरफ तलवार घुमाई है कि मुझे पूरा शक हो गया था।

दीवान- क्या शक हो गया था ?

चटनी- यही कि मेरा सिर न कट गया हो !

कोतवाल-अजी, सिर कटता तो मालुम न होता क्या ?

चटनी- अजी साहब ! नशे में नहीं भी मालुम होता।

कोतवाल लेकिन आप बेफिकर रहिये ! आपका सिर ज्यों का त्यों है ।

चटनी- मालिक आपका भला करे, अब में बेफिकर हुआ । फिर भी आइने में देख लूँ ! (प्रस्थान)

कोतबाल–तो दीवान साहब ! अब क्या करना है ? मुमकिन है, वह कहीं आगे पहुँचे ।

दीवान- कोई परवाह नहीं जी ! तुम दर्बान के कपड़े-वगैरा फाड़ कर यहाँ फौजदारी करने का एक मुकदमा तैयार करो और मैं कुँवर साहब के पास जाता हूँ । देखो इसकी अक्ल किस तरह ठिकाने करता हूँ । (कुछ सोच कर) एक बात और है !

कोतवाल वह क्या ?

दीवान- तुम अपने आदमियों से साले को सब जगह बदनाम कराओ । ऐसी बातों पर दुनियां ऐतबार भी फौरन करती है। देखें कैसे नहीं मानता है ?

कोतवाल अजी नहीं, तो क्या न माने ? उसके फरिश्ते मानें । खासकर जब हुजूर ने उसे मनाने पर कमर बाँध ली है । अच्छा तो मैं जाऊँ ?

दीवान- हां जाओ ! उस साले सुखदेवा का भी झगड़ा पाक करो और ये दोनों काम भी कर डालो ! मैं भी जाता ही हूँ (उठते हैं)

(पर्दा गिरता है)

(सर्वथा श्रङ्गार हीन, जूड़ा बखेर, सुखिया प्रवेश करती है)

सुखिया– (उदभ्रान्त भाव से) आखिर दुष्टों ने मेरे पति के प्राण ले ही लिये। लिये भी नीचातिनीच उपाय से। पहले वन्दी बनाकर फिर विष देकर। वन्दी बनाए हुए व्यक्ति पर अत्याचार करना कदाचित राक्षस भी अनुचित मानें, किन्तु कुलीन कहलाने वालों के लिये विष दे देना भी उचित हो गया। और यह सब किस लिये? एक तुच्छ चमारी के लिये! नीच विलास-लिप्सा के लिये! और किसने किया? जिनके घर में धन, शक्ति की कमी नहीं, उन वड़े कहलाने बाले नीचों ने! जिन्हें विवाह करने के लिए शतशः कुमारियाँ मिल सकती हैं, उन मनुष्य कहलाने वाले दानवों ने! ओफ! हिन्दू जाति! ऋषि सन्तान, तेरा इतना पतन? हिन्दु कहलाने वालों का हिन्दुओं के साथ यह व्यवहार? प्रजा के रक्षक बनने वालों की यह दशा? आर्य-सन्तानोंके राज्यों में यह नर्क-लीला? तभी तो इन राज्यों की यह दशा है। तभी तो नरेश बनकर भी इन्हें गुलामी भोगनी पड़ रही है! तभी तो बाईस करोड़ होकर भी हिन्द पद दलित हो रहे हैं। अरे हिन्दुओं! कुलीनों! नरेशों! अपने ऊपर दया करो! अपने कृत्यों पर

शरमाओ ! अपने इन पापों से भय खाओ ! वरना तुम्हारे ये पाप तुम्हारा नाश कर देंगे ! तुम्हारी ही नीचता तुम्हें मिट्टी में मिला देगी ! तुम्हारे ये महल खंडहर बन जायेंगे और ये उपवन जंगलों में परिणत हो जायेंगे । सम्हालो ! सम्हल जाओ ! अब भी वक्त है ।

"डाल जुल्मों की कभी फलती नहीं ।
नाव कागज की कभी चलती नहीं ।।"

हमीर खाँ–(प्रवेश करके) है ? सुखिया ! तुम इतनी समझदार होकर रंज करती हो ! सोचो वहन ! अगर तुम इस तरह पागल बनोगी तो बच्चों की क्या हालत होगी ? रंज करने से अब सुखदेव अब लौट थोड़े ही आवेगा ।

सुखिया– नहीं, हमीर भैया ! वहां गया हुआ कौन लौटता है ? सब्र जानती हूँ । लेकिन दिल कहाँ मानता है, हमीर ! तुम नहीं जान सकते कि जिसका पति इस तरह अत्याचार का शिकार हुआ हो उसके दिल में कैसी भट्टी धधकती है । उसे प्रति हिंसा किस तरह पागल बना देती है !

हमीर खां–जानता तहीं, तो भी कुछ २ महसूस कर सकता हूं, वहन ! लेकिन इन्सान के हाथों में है भी क्या ? उसे तो सिर्फ अपने अकीदे पर डटे रह कर सब

हमीर खाँ–कहा बहन ? आजकल तो कोई शादी का यह मकसद नहीं समझता और सवाब के पैसे से फायदा उठाना या बिना महनत लेना तो बड़े २ पण्डित भी बुरा नहीं समझते। आखिर ये मांगने वाले साधू, फकीर, सेठ, साहूकार, अहल्कार जागीरदार, वगैरा क्या करते हैं ? कौन बदला चुकाना अपना फर्ज समजता है ?

सुखिया– नहीं समझते ? इस सिद्धन्त को भूल गए हैं। तभी तो दुनिया की यह हालत है हमीर ! तभी तो आज मुझे यह दिन देखना पड़ा है। तभीं तो मनुष्य जाति का प्रत्येक अङ्ग आज दूसरे अङ्ग को खाना धर्म मान रहा है।

हमीर खां–(कुछ विचार मग्न होकर) तो सुखिया ! इस हिसाब से तो दुनिया की ज्यादतर तकलीफें इसी गलती की बजह से है ?

सुखिया– हैं ही भैया ! इसी लिये तो दुनियाँ में दस मौज करते हैं तो सौ भूखों मरते है। इसी लिये तो धर्म के नाम पर सिर फूटते हैं। इसी लिये तो चार दिन की जिन्दगी भी कोई आराम से नहीं काट सकता। अगर सब अपनी खरी कमाई पर गुजर करें और अपना अपना फर्ज पूरा अदा करें, तो क्यों रहे इतना स्वार्थ और क्यों रहे इतनी आपोधापी ?

हमीर खां–तब तो ये जितने बड़े हैं, जितने पंडित, मुल्ला, हाकिम, हुक्काम हैं, उतने ही वड़े गुनहगार हैं ?

सुखिया– बुराई मनुष्य में नहीं हमीर। इस बड़प्पन में है। इसीलिये दुनिया सदा से वड़प्पन पर बन्धन लगाती आई है। इसीलिए हर मजहव त्याग सिखाता है।

नेपथ्य मैं–सुखिया ! ओ सुखिया !

सुखिया– आई आई ! मा जी ! (हमीर खा से) जाती हूँ भैया शायद भीतर बुलाती हैं। (प्रस्थान)

हमीर खां–(स्वागत) ओफ्फो ! ऐसी पाक दिल औरत को भी लोग चैन से नहीं रहने देते। न जाने इन लोगों के कैसे दिल हैं ? मैं तो जब इससे बातें करता हूँ, तब अगर दिल में कोई बुरा ख्याल हो तो वह भी जाता रहता है। दिल मैं सुवह मुनब्बर का सा उजाला फैल जाता है। और मजहब का इसे कितना गहरा इल्म है ? इसकी हरेक बात अंगूठी के नगीने की तरह जहन-नशीन हो आती है।

भूयाल०– (प्रवेश करके) कौन हमीर खाँ ?

हमीर खाँ–हां टाकुर साहव ! सलाम ! कहिये, किधर से आ रहे हैं ?

भूपाल०- क्या कहूं भाई ! तुमने तो सुना ही होगा ?

हमीर खा-हां, कोतवाल और उसके गुरगे आप को सारे शहर में वदनाम कर रहे हैं, यह तो सुना है।

भूपाल०- और सुनो ! अभी मुझे महाराज कुमार ने बुलाया था।

हमीर खा-क्यों ?

भूपाल०- इसलिये कि या तो मैं सुखिया को उनके हवाले कर दूं तो वरना ! मेरी जागीर छीन ली जायेगी और दीवान के आदमी पर हमला करने के जुर्म में फास दिया जाऊँगा।

हमीर खा-या खुदा ! ये लोग भी कहते हैं कि हम इन्सान हैं। अच्छा फिर आपने क्या जवाब दिया ?

भूपाल०- मैंने कह दिया कि मैं आपके हवाले तो नहीं कर सकता। हां, अपने घर से कल सुबह बिदा कर दूँगा।

हमीर खा-क्यों जी, ये राजकुमार हुए हैं, इनको शरम नहीं आती .....

भूपाल०- शरम कैसी भाई ! हमारे यहाँ एक कहावत है, "कामातुरणाँ भयं न लज्जा।" ऐय्यासी के

पागलों में न डर होता है न शरम। फिर, जो बाप की बुराई करने में नहीं शरमाता वह और किस बात में शरमा सकता है ?

हमीर खाँ-ओर ऐसे ही के कहने से आपने सुखिया को निकालना मंजूर कर लिया। तो फिर सुपुर्द करना ही मंजूर क्यों न कर लिया ? आखिर बात तो एक ही है।

भूपाल०- क्या करूँ हमीर खां ! मैं खुद शर्मिन्दा हूँ। यह मेरे धर्म के भी विरुद्ध है। लेकिन जागीर और इज्जत का सवाल है।

हमीर खा-ठाकुर साहब ! आपकी शागीर की कितनी सी आमदनी है। कुल ३००) रु० सालाना ही ना ?

भूपाल०- हाँ है तो यही। गुजर भी मुश्किल से होती है। तुम तो सब जानते ही हो ?

हमीर खां-जानता हूँ। तभी तो कहता हूँ। मेरा ख्याल है कि आप जैसा आदमी इरादा कर लेने पर इससे ज्यादा कमा सकता है ! फिर इसके लिये ऐसी हरकत.....

भूपाल०- सब समझता हूँ हमीर खा ! लेकिन .....

हमीर खां-लेकिन क्या ? कहिये ना।

भूपाल०– कुछ नहीं हमीर खां ! ऐसे मौके पर मां बाप पर गुस्सा आता हैं।

हमीर खा–क्यों ? इसमें मा बाप क्या करेंगे ? आप तो खुदा के फजल से पढ़े लिखे हैं। अकलमन्द हैं। मैं तो गँवार सिपाही हूँ। मेरे भी आपके बराबर परिवार है। फिर भी गुजर चलती ही है। यह तो सिर्फ इरादा कर लेने का सवाल है।

भूपाल०– यह सब ठीक है हमीर खां ! लेकिन वैसे हम में तुम में दिन रात का फरक है।

हमीरखाँ–क्या फरक है ?

भूपाल०– यही कि तुम्हें तुम्हारे मा बाप ने पढ़ाया नहीं, तो भी स्वावलम्बी बनाया है। सादगी से रहना और बिना किसी मदद के कमा खाना सिखाया है। इसीलिये तुम फर्ज पर नौकरी को ठोकर मार देते हो। लेकिन मेरे मां बाप ने मुझे पढ़ा कर भी गधा ही रक्खा है। मुझे खुद पैदा करने का तो कोई धन्धा सिखाया ही नहीं, सादा रहना भी नहीं सिखाया। मुझे तो दो बातें सिखाई गई हैं काम करने से नफरत करना और ठाठ वाट से रहना। यही वजह है कि हम लोगों में आत्म विश्वास नहीं। हम कितने ही पढ़े हों तो भी बिना जागीर अकेले की गुजर चला सकेंगे यह भी भरोसा नहीं।

हमीर खाँ-बिना महनत का खाना तो वैसे भी गुनाह है ठाकुर साहब !

भूपाल०- गुनाह है, लेकिन हम लोगों को सिखाया ही यह जाता है कि यह गुनाह तुम्हारा हक है। धर्म है।

हमीर खाँ लेकिन आप तो सब समझते हैं।

भूपाल०-समझता हूँ ! लेकिन समझना जितना आसान है उतना आसान अमल करना कहाँ है हमीर खाँ ?

हमीर खाँ–तो उस बिचारी को और कौन बचा सकता है ? वह तो तुम्हारे ही सहारे रह रही है। क्यों, दर्बार में आपके रिस्तेदार हैं। उनसे काम क्यों नहीं लेते ?

भूपाल०–दर्बार और अँग्रेज सरकार में विरोध पड़ रहा है। इसलिये न उनकी रेजीडेण्ट कुछ चलने देता है न खुद किसी काम में दिलचस्पी लेते हैं। ऐसी हालत में मैं और क्या कर सकता हूँ ?

हमीर खाँ-क्यों भूपाल सिंह जी ! अगले जमाने में भी राजपूत ऐसे ही होते थे क्या ?

भूपाल०-मुझे ज्यादा शर्मिन्दा मत करो हमीर ! मैं खुद ही बहुत शर्मिन्दा हो रहा हूँ। तुम से सच कहता हूँ। आज पूरे २ घन्टे रोया हूँ। लेकिन हिम्मत

मेरे पीछे असहाय कुटुम्बियों की जो हालत होगी, उसी के ख्याल ने मुझे कायर बना दिया है। वैसे तुम जानते हो कि अव तक जितनी बाधाऐं आई हैं। मैंने उनमें से एक कीं भी परवाह नहीं की। मैंने शोचा था कि कुँवर साहव तो इतने नीचे न उतरेंगे। लेकिन यहाँ तो काले २ सब एक है।

हमीर खाँ–भुझे माफ करिये ठाकुर साहब। मेरी गलती थी। दरअसल इस जमाने में इतना भी कितने राजपूत करते हैं? खैर, आप मकान पर चलिये, मैं भो आता हूँ। औह! आज उस बेचारी के लिये दुनियां अन्धेरी हो जायेगी।

(दोनों का दो ओर प्रस्थान)

(पर्दा उठता है)

दृश्य सात

(स्थान–भूपालसिंह का घर। सुखिया धान कूट रही है। हरदेवा पढ़ रहा है। दूसरा लड़का लिख रहा है।)

हरदेवा– क्यों मा ? ठाकुर साहब को कुंबर साहब ने क्यों बुलवाया है ?

सुखिया– अरे हरदेवा तू बड़ा नटखट है। न खुद पढ़ता है न मुझे काम करने देता है। तू ने कहा था न कि आज इस पाठ को पूरा याद कर लूंगा ?

हरदेवा– हां सो तो कर रहा हूँ। तू तो आज सुन लेना। और क्या करेगी ?

सुखिया– अच्छा तो पढ़, "गुरु गोविन्द·····

हरदेवा– (किताब में देखता और झूमता हुआ) "गुरु गोविन्दसिंह के लड़कों ने कहा कि हम अपना धर्म छोड़ने से मरने को अच्छा समझते हैं।" (सुखिया की ओर घूमकर) क्यों मां ! वे लड़के मरने से डरे नहीं ?

सुखिया- नहीं बेटा ! बहादुर लड़के मरने से थोड़ें ही डरते हैं ? धर्म और देश के लिये तो मरना किसी को सौभाग्य से मिलता है। मरना तो वैसे भी एक दिन है ही।

हरदेवा- (किताब में देख कर) "उन्होंने कहा, हम तिल-तिल कट जावेंगे। परन्तु अपना धर्म न छोड़ेंगे।" (सुखिया की ओर घूम कर) मां मैं भी इसी तरह धर्म पर मरूँगा ?

सुखिया हा बेटा ! तभी तेरा जन्म सार्थक होगा।

हरदेवा- तो मां तू रोएगी तो नहीं ?

सुखिया- ना बेटा ! धर्म पर मरने वाले के लिये कौन रोता हैं ? उसकी तो पूजा होती है। उसे स्वर्ग मिलता है।

दू० लड़का-माँ ! मुझे तो यह भजन याद हो गया।

सुखिया- हो गया ? पक्का ?

वही- खूब पक्का।

सुखिया- अच्छा तो सुना तो ! (हरदेवा से) देखा तुझसे तो रामदेवा ही अच्छा जिसने झट याद कर लिया ?

हरदेवा- तो मैं भी अभी किये देता हूँ। (पुस्तक लेकर एक ओर बैठता है।)

रामदेव- (गाता है) -

(कालिङ्गड़ा तिताला)

सत्य को रख दृढ़ कर रे।
सत्य से क्या बढ़ कर रे।

(१)

हिरण्यकश्यप ने निज रक्षा में क्या रखी कसर रे।
पर प्रह्लाद सत्य के सम्मुख चली न एक गुजर रे।।

(२)

रिश्चन्द्र ने सब कुछ छोड़ा, रक्खा सत्य सबर रे।
फिर सब कुछ आ मिला, मिटा क्षण में विपत्ति का ज्वर रे।।

(३)

एक बार ही दिया युधिष्ठिर ने झूठा उत्तर रे।
उसके बदले पड़ा देखना उन्हें नर्क का दर रे।।

(४)

फिर जो दिन भर झूठ बोलते छोड़ कुफल का डर रे।
यम के घर उनकी क्या हालत होगी, किसे खबर रे।।

(५)

जिसने रक्खा 'सत्य' तरा वह सदा बिश्व सागर रे।
'पथिक' सत्य-शर लेकर काटो चौरासी चक्कर रे॥

(भूपालसिंह प्रवेश करता है)

हरदेवा– यह लो ठाकुर साहव आ गए।

(सुखिया घूंघट निकालती हुई खड़ी हो जाती है)

भूपाल०– सुखिया। (कहते २ गला भर आने से रुक जाते है)

सूखिया– (समझकर) कहिये, कहिये ठाकुर साहव। रुक क्यों गए ?

भूपाल०– बुरी खबर है सुखिया। कैसे कहूँ ?

सुखिया– कहिये ठाकुर साहब। आप तो निश्चिन्त होकर कहिये। जो कुछ सुन चुकी हूँ उससे बुरी खबर अब मेरे लिये संसार में नहीं हो सकती।

भूपाल०– मुझे आज कुँवर साहब ने बुलाया था सुखिया। सुखिया-हा सो तो मालुम है। फिर क्या कहा ?

सुखिया– हा सो तो मालुम है। फिर क्या कहा ?

भूपाल०- कहा कि अगर तुम मुखिया को जपने घर से न निकाल दोगे तो तुम्हारी जागीर छीन ली जायेगी और मार पीट का इल्जाम लगा कर गिरफ्तार कर लिये जाओगे।

सुखिया- इसमें क्या अनौखी बात है ठाकुर साहब ! जो लोगों के रक्त से भरे भौगों को भोगने में नहीं लजाते और पवित्र राज्य शक्ति को पापेच्छाएं पूर्ण करने की साधन मानते है, उनके लिये यह कोई इड़ी बात नहीं। किन्तु मैं यह न देख सकूंगी ठाकुर साहब ! अपने लिये अपने पिता तुल्य उपकारी की हानि न होने दूंगी। आपने मेरे लिये काफी कष्ट देखे हैं। कोतवाल से दुश्मनी मोल ली। दीवान के कोप भाजन हुए बदनास हुए ! मैं अभी जाऊँगी।

भूपाल०- अभी ? ऐसी अंधेरी रात में कहा जायेगी सुखिया ?

सुखिया - जहां भगवान ले जायेंगे वहीं जाऊंगी, ठाकुर साहब ! मेरे लिये तो अब सारी दुनियां अंधेरी है,

यह आवर्त पूर्ण कर्तव्य भी नहीं है। यह टूटी फूटी जीवन नौका है और मैं हूँ।

भूपाल०- तुम्हारी कर्तव्य निष्टा को मैं जानता हूँ सती! किन्तु रात में अकेली जाना तुम्हारे लिये, कम से कम इस नर्क पुरी में खतरे से खाली नहीं है। इसलिये .....

सुखिया- खतरा? खतरे की अब क्या चिन्ता है ठाकुर साहब! हिन्दू रमणी को खतरों का भय तभी तक रहता है जब तक वह सधवा रहती है। उस समय उसे दुःख होने से उसके पति को दुःख होगा, इसलिए वह खतरों से डरती रहती है। विधवा होने के बाद वह भय नहीं रहता। फिर वह अबला नहीं रहती भर उस अकेली पर पति के और अपने दोनों के कर्तव्य का भार आ पड़ता है और उसमें दुगनी ही शक्ति आ जाती हैं। इस समय में भी वही सबला हूँ अब में खतरे से बचना नहीं चाहती, हूँ। संग्राम करना चाहती हूँ। आप तो मुझे अभी आज्ञा दीजिये।

हमीरखाँ– (प्रवेश करके) ठीक है सुखिया ! अभी चलना ठीक है। सुबह तो और ज्यादा खतरा हो सकता है।

भूपाल०– (हमीर खाँ की ओर घूमकर) हैं ? हमीर खा, तुम तो हथियार वगैरह से सज कर आए हो।

हमीरखां– हां ठाकुर साहब ! मुझे आपने सब बातें तो कह ही दी थी। मैं सिर्फ तैयार होने ही घर गया था। आखिर अपना बस चले तो सुखिया को किसी बेखटके की जगह पहुँचा देना चाहिये।

भूपाल०– लेकिन तुम्हारी नौकरी। बदमाशों को पता लग गया तो नाम कटा कर ही छोड़ेंगे।

हमीरखां– नौकरी की परवाह नहीं ठाकुर साहब ! वापस आऊंगा तब देख लूंगा। नाम कट जायेगा तो मजदूरी कर खाऊँगा। आखिर फर्ज तो नौकरी से बड़ा ही है।

भूपाल०– तुम्हारी हिम्मत पर तो मुझे रश्क आता है हमीरखाँ ? मगर कहां ले जाओगे ? क्या इसके पीहर ? नहीं ठाकुर साहब ! पीहर में इसके कौन

बैठा है ? फिर उस जगह से सब वाकिफ है, वहां इसे कौन चैन लेने देगा ?

भूपाल०– तब ?

हमीरखा– मैं इसे गिरधरपुर ले जाऊंगा। वहा का जागीरदार भी अच्छा है। और खादी का कारखाना भी है। वहां से यह बेफिकर भी रहेगी और अपनी गुजर भी चला सकेगी। (सुखिया सामान की गाठ वाँधती है)

भूपाल०– हां, जगह तो ठीक है। लेकिन दूर बहुत है। अगर सवारी हो सकती तो ठीक होता।

हमीरखां– सवारी का इन्तजाम कर आया हूं ठाकुर साहब ! आप तो सिर्फ मेरे आने तक बाल वच्चों की खबर लेते रहना।

भूपाल० ठीक है, इन बातों के लिए तो बेफिकर रहो हमीरखां। तुम धन्य हो भाई ! आदमी हो तो तुम्हारे जैसा हो !

हमीरखां- लो ठाकुर साहब ! भली वात कही आपने । मैं किस लायक हूँ ? (सुखिया से) अच्छा तो सुखिया तैयार हो गई ?

सुखिया- हाँ भैया ! तैयार ही हूँ । मेरे को क्या गाड़ी घोड़े लादने हैं ? (भूपाल सिंह के पैर छूती हुई) अच्छा ठाकुर साहब प्रणाम ! दया दृष्टि रहे । दीन दुखी के लिए आपने जो कुछ किया सही है उसका बदला आपको भगवान देगा । मैं तो आपके लिए शुभ कामना ही कर सकती हूँ । दर असल ये पृथ्वी आकाश आप जैसों के सहारे खड़े हैं। भगवन्..... .....

भूपाल०- मैंने क्या किया हैं, सुखिया ? यह तो मेरा धर्म था । मैं तो उल्टा इस वात के लिये लज्जित हूँ कि मैं उसे अन्त तक नहीं निभा सका । हमीरखा के बराबर भी हिम्मत नहीं रख सका ।

(जेब से कुछ रुपये निकाल कर) लो ! यह हाथ खर्च लेती जाओ !

सुखिया- नहीं ठाकुर साहब ! इन्हें रहने दीजिये । मेरे लिये चिन्ता न करिये मैं आपकी अवस्था जानती हूँ ।

भूपाल०– नहीं सुखिया ! तुम यह न लोगी तो मुझे बड़ा दुख होगा। हजार अवस्था बुरी हो तब भी हम लोग घरवार लेकर बैठे हैं। तुम्हारा वहा अनजानी जगह में कौन होगा ? हां, यह मैं जानता हूँ कि तुम में अटूट साहस है। तुम्हारा सत तुम्हारा सबसे बड़ा रक्षक है। फिर भी नई जगह में काम न मिलने पर तुम्हें इससे कुछ सहारा मिलेगा और मुझे कुछ सन्तोष रहेगा।

सुखिया– अच्छा ठाकुर साहब ! आपकी इच्छा है तो लेना ही पड़ेगा। (लेती है फिर प्रणाम करती है)

समाप्त

ध्वजार्पण संगीत

स्व० विजयसिंह 'पथिक'

प्राण भले ही गमाना, पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।
तीन रंगा है झण्डा हमारा, बीच चरखा चमकता सितारा ।।
शान है ये ही इज्जत हमारी, सिर झुकाती इसे हिन्द सारी ।।

इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

ये है आजादपन की निशानी, इसके पीछे हैं लाखों कहानी ।।
जिन्दा दिल ही हैं इसको उठाते, मर्द हैं इस पै सर तक चढ़ाते ।।

तुम भी सारी मुसीबत उठाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

रे ! क्या भूले हो जलियान वाला, या वो डायर का इतिहास काला
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, नींव आजादी की जब पड़ी थी ।।

याद हो गर वो खूँ में नहाना ।
तो न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

उसने तो था न क्या जुल्म ढाया, पेट के बल पै हमको चलाया ।।
कोसो बच्चों को पैदल भगाया, माओं-बहिनों को घर २ रुलाया ।।

याद है तुम्हें जो वह फसाना ।
तो न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

और अब भी न क्या हो रहा है, कौन सुख नींद में सो रहा हैं ।।
लाखों पाते न भर पेट खाना, सच्च बोलो तो है जेलखाना ।।

है इसी से छिड़ा यह तराना ।
होना आजाद या मिट ही जाना ।।

पस यह करलो अहद मर मिटेंगे,पर न इस वृत से तिलभर हटेंगे
कुछ हो यह मुल्क आजाद होगा, उजड़ा गुल्शन ये आबाद होगा

गायेंगे आज सब ये गाना ।
हिन्द होगा, न अब जेल खाना ।।

झण्डा यह हर किले पर चढ़ेगा, इसका दल रोज दूना बढ़ेगा ।।
तीरो तलवार बेकार होंगे, सोने वाले भी बेदार होंगे ।।

सब कहेंगे कि सर है कटाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

शाँत हथियार होंगे हमारे, पर वे तोड़ेंगे अरि के दुधारे ।।
पस भला हो जो अँग्रेंज जागे, लोभ हिन्दी हुकूमत का त्यागे ।।

वरना बदला है क्या यह ठिकाना ।
उनसे बदलेगा सारा जमाना ।।

हे प्रभो ! शक्ति दो धीर हो हम, टेक रक्खेंगे सर्वस्व खो हम ।।
हम ही क्या, कह उठे सब जमाना, दूध देखो न माँ का लजाना ।

प्राण अपने भले ही गमाना ।
पर न झण्डा ये नीचे झुकाना ।।

---o---

खंड २

सुखिया-सुरेश

दूसरा अंक

दृश्य पहला

(स्थान— गिरधरपुर जागीरदार सुधीरसिंह का दरीखाना (बैठक) पंक्ति बांधे कुछ सर्दार, अहल्कार बैठे हैं। जागीरदार का आसतन खाली पड़ा है।)

सुरेशचन्द्र- (प्रवेश करके) बन्देमातरम् साहब।

सब- (बैठता हुआ) कहिये। आज मुझे कैसे याद किया ?

कामदार हमने याद किया है या आपने हमें याद करने को मजबूर किया है ?

सुरेश- मैंने ? मजबूर किया है ?

एक अहल्कार -हां सरेशचन्द्र जी। यह आपको क्या सूझा है ? जागीरदार होकर गाधी-पंथ में जा मिले हो। खादी और चरखे के पीछे पड़ रहे हो।

सुरेश- भाई साहब ! मुझे जो धर्म और उचित मालुम देता है, वही करता हूँ और अभी तक तो मेरा विश्वास इस काम पर अधिकाधिक वढ़ ही रहा है। और कुछ नहीं तो हजारों को तो हिल्ला मिल ही गया है।

दूसरा- हाँ, यह वात तो माननी ही पड़ेगी। लेकिन वारीक और सस्ते कपड़ों के सामने खादी को लेता ही कौन है ?

तीसरा- और इस विज्ञान के पुग में तो यह उल्टा पूँछ की तरफ जाना है।

सुरेश- यह तो समझ का फेर है साहव। आखिर जो समझदार हैं वे तो मंहगी और मोटी होने पर भी खादी लेते हैं। रहा विज्ञान का प्रश्न प्रश्न, सो मैं उसे वहीं तक अच्छा समझता हूँ, जहां तक व्यक्ति के स्वावलम्वन को नष्ट नहीं करता और व्यक्यिों के नफा उठाने का साधन नहीं वनता।

पहला- तो जो खादी नहीं लेते वे बेवकूफ हैं।

सुरेश- नहीं मैं तो यह नहीं कहता। हाँ खादी लेने बाले ज्यादा समझदार जरूर हैं।

वही- कैसे ? जरा साफ साफ कहिये ?

सुरेश- सवाल यह है कि आप ज्यादा समझदार किसे कहेंगे ? जो ऐसा स्वार्थ साधता है जिसमें दूसरों का भी भला हो, या उसे जो केवल अपना स्वार्थ साधता हो।

बूसरा- स्वार्थ में परमार्थ साधने वाला ही ज्यादा समझदार कहा जायेगा।

सुरेश- और यह भी आप मानेंगे कि खादी की कीमत गरोब का पेट भरती है और मिल के कपड़े की कीमत एक ज्यादा मालदार की जेब भरती है।

चौथा- वाह ! देखो कैसे अच्छे ढंग से अपनी बात साबित की है।

सुरेश- दूसरी बात यह है कि बारीक कपड़े पसीना नहीं खींचते और चमड़ी को कमजोर बनाते हैं। इससे तन्दुरुस्ती खराब होती है। फिर यदि वे सस्ते हैं तो कई कपड़े पहनने पड़ते हैं, इसलिये अन्त में मंहगे ही पड़ते हैं और देखा देखी में गरीबों में शौकीनपन फैलता है सो अलग।

दूसरा- तो शौकीनपन फैलना बुरा है क्या ?

सुरेश- गरीब के लिये तो बुरा ही है। प्रत्यक्ष देखलो ना ? अपने यहां के सिपाही, चपरासी, चार २ आदमियों का कुटुम्ब रखते हैं। दस रुपये तनख्वाह पाते है। उसमें भी शौक साधते हैं।

इसीलिए ईमान पर नहीं रह सकते। फिर औरत सब की बेकार रहती हैं ।

बही- तो इनसे शौक साधने को कौन कहता है ?

सुरेश- कहता कोई नहीं। तो भी बड़ों की नकल सभी करते हैं और जब बड़े अपना बड़प्पन गुणों में न समझकर चटक-मटक में रखने लगे तो दूसरे वैसा क्यों न करें ?

वही- और खादी से क्या होगा ?

सुरेश- खादी से सादगी बढ़ेगी। साथ ही सबके घर की औरतें तक कुछ कमाने लग जायेंगी।

तीसरा- बात तो ठीक है जी। तभी तो पुराने आदमी चटक-मटक को बुरी मानते हैं।

कामदार- लेकिन सुरेशचन्द्र जी ! मुझे तो डर है कि आप इस हलचल की बदौलत नुकसान उठावेंगे।

सुरेश- कोई हर्ज नहीं कामदार साहब। मैं इसके लिए सब कुछ खाने को तैयार हूँ। फायदे की नजर से तो मैं वैसे भी इस हलचल में शामिल नहीं हुआ हूँ।

कामदार- अजी और तो कुछ नहीं, लेकिन जागीर पर जरफ आवे तो बुरा हो। और चीजें मिल

सकती हैं, लेकिन जागीर बार बार कहां मिल सकती है ?

सुरेश– कोई चिन्ता नहीं साहब। जागीर क्या साथ जानी है ? चिन्ता तो मनुष्य को अपने कर्तव्य की करनी चाहिये।

चोवदार– खम्मा अन्यदाता पधारते हैं।

(सब खड़े हो जाते हैं जागीरदार आकर बैठता है। सब प्रणाम करते हैं फिर सब बैठते हैं)

कामदार– हुजूर ! ये सुरेशचन्द्र जी हाजिर हो गये हैं।

जागीरदार– हा !, कल हमने वह कागज पूरा नहीं सुना था। क्या बात है ?

कामदार– हुक्म, किसी ने रेजीडेन्ट को गुमनाम तार दिया है कि यहाँ सुरेशचन्द्र जी जोरों से गांधी हलचल कर रहे हैं। इस पर रेजीडेन्ट ने रियासत से जबाव तलब किया है। और रियासत ने यहाँ से जबाव मांगा है।

जागीरदार– ठीक है तो सुरेशचन्द्र जी ! आप सिर्फ खादो का काम करते हैं या गवर्मेंट के खिलाफ होने वाले 'ब्रटिश इण्डिया" के आन्दोलन में भी हिस्सा लेते हैं।

सुरेश– नहीं श्रीमान् गवर्नमेंट के खिलाफ होने वाली हलचलों से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है। हम लोग तो सिर्फ रचनात्मक काम करते हैं। रही यहाँ की राजनैतिक हलचलें सो उनका तसफिया हो ही चुका है।

जागीरदार० तो इसमें तो कोई आक्षेप हो सकने जैसी बात नहीं है। (कामदार से) आप ये बातें लिख दीजिये।

कामदार– लेकिन हुजूर गवर्नमेंट तो खादी से भी चौंकी है।

जागीरदार– चौंका करे। देखना तो यह है कि दरअसल कोई चौंकने जैसी बात है या नहीं ?

कामदार– लेकिन हुजूर ! खादी की हलचल तो गांधी की ही चलाई हुई है।

जागीरदार– (हंस कर) तो इससे क्या हुआ ? यह कोई जरूरी बात थोड़े ही है कि जिसकी हमें एक बात पसंद न हो। उसकी दूसरी अच्छी बात भी न मानें। गांधी जी तो सत्य बोलने पर भी जोर देते हैं। तो हमें सत्य बोलना भी छोड़ देना चाहिये ?

कामदार– ठीक है, हुजूर ने जैसा फर्माया है वैसा ही लिख दिया जायेगा।

जागीरदार- (सुरेश से) कहिये, अब तो आपको अच्छी कामयाबी हो रही है ?

सुरेश- हाँ, हो तो रही है, लेकिन ठिकाने की तरफ से मदद न मिलने से रुकावट पड़ती है। आखिर लोग तो बड़ों की नकल करते हैं।

जा० दा०- लेकीन लोगों को यह हलचल पसंद तो बहुत है। इस वार के दौरे में हमने देखा कि गांव २ में बरखे-करघे चल निकले हैं। और सब जगह यही चरचा है। पारशाल का अकाल लोगों को बिलकुल नहीं अखरा।

सुरेश- हां, गांवों में तो इससे काफी सहायता मिलो है।

जा० दा० - तो सिर्फ कस्बे के बारे में आपको शिकायत है ?

सुरेश- जी हां।

जागीरदार- (कामदार से) अच्छा कामदार जी आज ही हुक्म जारी कर दीजिये। एक तो ये कि दरीखाने में आने वाले और ठिकाने के नौकर, अहलकार सब खादी के कपड़े पहन कर आवें दूसरा ये कि खादी पर निर्यात कर न लगे।

कामदार- हुजूर। अपने यहा ?

जागीरदार- हां अपने यहां। क्यों ? आप इतने घबरा क्यों गए ? अपने यहां तो ठाठ से खादी पहनी जाती है। कल कारखाने तो कल परसों से चले हैं।

कामदार- और कुछ नहीं हुजूर सरकार.... ....

जागीरदार- अजी, आप भी अजब वहमी आदमी हैं। भला सरकार का इसमें क्या है? जब खादी से हमारा और हमारी रैय्यत का फायदा होता है तो हमें उसे क्यों न अपनाना चाहिये। हाँ, एक बात तो मैं भूल ही गया था। अपने यहाँ के स्कूलों में भी कताई बुनाई की शिक्षा अनिवार्य कर दी जाय।

कामदार- लेकिन हुजूर निर्यात कर उठाने से तो आमदनी का नुकसान होगा।

जागीरदार- तो उसकी जगह बिलास सामग्री की आमदनी और रुई की रफ्तनी पर टैक्स लगा दो।

कामदार- जो हुकुम।

चोबेदार- अन्नदाता। वह कल वाला गवैया हाजिर हुआ है।

जागीरदार- अच्छा आने दो।

(गवैया प्रवेश कर प्रणाम करता है)

जागीरदार-(गवैया से) कल तुम ही आए थे?

गवैया- हुजूर, ताबेदार ही था। (कामदार से) कहिये। आज क्या सुनाने को हुक्म होता है?

कामदार- आजकल तो फागुन का महीना है। कोई अच्छी होली सुनाओ। (जागीरदार की ओर देख कर) क्यों हुजूर?

जा० दा०-हाँ ठीक है, लेकिन श्रृंगार रसमयी न हो।

सुरेश- और आजकल की व्यवस्था पर हो तो शायद और भी ठीक होगी।

जागीरदार हां ऐसी हो तो सबसे अच्छी। (गबैया से) क्यों याद है ?

गवैया- हुजूर। ऐसी ही है। सुनने में आवे। (सितार लेकर बैठता है।)

देख तो लो बनवारी ।
बनी क्या भूमि तुम्हारी ॥
श्री विहीन बड़ ऋतु अब आती हैं जैसे बेगारी।
घन आते ले शोक-श्याम-मुख, नयन-अश्रु. हृद-भारी।
लुटी सी हैं कृषि क्यारी।
देख तो लो वनवारी ॥
दीन गोपिका भक्ति छोड़ तन हित फिरती हैं मारी।
भारत भूमि द्रौपदी है अब गोरों की पनिहारी।
दुःशासन नृप अधिकारी ।
देख तो लो वनवारी ॥
ले जा रहीं धान्य, धन रेलें. लाती मँहगी, भारी।
वस्त्र-कलें, गृह शिल्प, गरीबों पर धर रहीं कटारी।
बढ़ रही नित बेकारी ।
देख तो लो वनवारी ॥
सत्य, अहिंसा गए, खिली है छल-बल की फुलवारी।
फूट, कुरीति, बिलास, स्वार्थ के हाथ गई रखवारी।
शान्ति मर रही विचारी।
देख तो लो वनवारी ॥

दूध कहाँ ? होती गौओं की गोरों के तरकारी।
कुञ्ज कहां ? "जलियां वाले" "अलवर' में चाह हभारी।
रही यह होली विहारी।
देख तो ला वनवारी ॥

(पर्दा गिरता है)

सुखिया- (प्रवेश करती हुई) इस दूराचार के आगे कहा जाऊँ ? इस शरीर को कहां छिपाऊँ ? भगवान ! तुमने मुझे यह रूप क्यों दिया है ? क्या तुम्हारी यही इच्छा है कि मैं उमर भर इसकी वदौलत खवार होती फिरूँ ? कहीं भी तो चैन नहीं मिलता। वहां से यहाँ आई। अभी दो साल भी पूरे नहीं हुए कि मेरे भाग के यहां कुछ गुन्डे आ ही पहुँचे। अब तो गांव में रहना ही आफत हो गया है। पड़ौसी भले-मानस न हों तो एक दिन भी बेफिकर होकर न सोया जाय।

(सहसा कुछ गुन्डे "पकड़ लो। पकड़ लो साली को।" कहते आक्रमण करते हैं।)

सुखिया- (कमर से छुरा निकाल कर) खबरदार नर पिशाचो आज मेरे हाथ से एक आध का खून हो जायेगा। (छुरा घुमाती हुई चिल्लाती है) अरे कोई हो तो दौड़ना। चोर चोर।

नेपथ्य में- कौन है ? घबराना नहीं। (सुरेश प्रवेश करता है। गुन्डे भाग जाते हैं।)

सुरेश- कौन है वहन ? तू ही चिल्ला रही थी। क्या ?

सुखिया-हां भैया। मैं ही चिल्ला रही थी। भाग गए दुष्ट। भैया आज तुमने एक गैर की रक्षा की है। ईश्वर ...

सुरेश- (ध्यान से देखकर) हैं ? तुम तो हमारे यहां काम करती हो। तुम्हारा नाम सुखिया है ना ?

सुखिया- हां भैया। में वही सुखिया हूं। कुछ गुन्डे, कुछ दिन से मेरे पीछे पड़ रहे हैं। गांव में रहना भारी कर रखा है।

सुरेश- तो तुम अकेली ही हो क्या ?

सुखिया- मैं एक विधवा चमारी हूँ, महाराज। वड़ी दुखिया हूं। मेरी सारी उमर दुराचार से लड़ने में वीती है। मदनपुर में मेरे पति को मार दिया गया, वहां एक राजपूत और एक मुसलमान ने मेरी रक्षा की। फिर यहां भाग कर आई। अव यहां भी वैसी ही हालत होने वाली है। मेरे साथ दो वच्चे हैं। गाँव में कताई के सिवाय कुछ पिसाई-सिलाई भी मिल जाती है। इसी लालच से वहाँ पड़ी हूं।

सुरेश- (स्वागत) हां ठीक है। अव समझ में आया। कल की भूपाल सिंह की चिट्ठी में इसी का जिकर था। (सुखिया से) कोई चिन्ता नही सुखिया तुम गांव छोड़कर आश्रम में आ जाओ। वहा तुम वहन वेटी की तरह रहोगी कताई के सिवाय तुम्हें रसोई या कसीदे का काम दे दिया जायेगा।

सुखिया–लेकिन मैं तो चमारी हूँ भैया ?

सुरेश - तो क्या हुआ सुखिया ? हमारे यहां जन्म से ही छूत नहीं मानी जाती ।

सुखिया–धन्य हो भैया । भगवान तुम्हें अमर पद दें । तुमने मेरी जीवन रक्षा की । ..... (कुछ सोच कर) मैं वहुत ठगाई हुई हूँ भैया । क्या तुम इस दुखिया अनाथ की राखी स्वीकर कर लोगे ? मेरा संसार में कोई नहीं है । मुझे इससे वड़ा सन्तोष होगा ।

सुरेश– हां हाँ, वडी प्रसन्नता से बहन । आज से ही तुम मुझे अपना भाई समझो और मैं तुम्हें अपनी वहन समझूंगा ।

सुखि०–भैया । तुमने मेरी रखी स्वीकार करके मुझे अहसान के वोझ से लाद दिया है । लाओ दस्तूर भी कर दूँ । मेरे पास चांदी सोने की राखी तो नहीं है भैया । (चोली में से एक सूत की कूकड़ी निकाल कर) इस कच्चे सूत की ही राखी बांधती हूँ (हाथ बढ़ाती है)

सुरेश– (हाथ बढ़ाता हुआ) धर्म का बंधन तो पवित्र हाथ कते सूत का ही होता है । मेरे लिये यह चांदी सोने से वढ़ कर है । हाँ इसके साथ ही यह भी आशीर्वाद दो कि भगवान मुझे भाई की तरह ही तुम्हारी रक्षा करने की भी सामर्थ्य दें ।

सुखि०–मैं क्या आशीर्वाद दूँ भैया ? तुम्हारा धर्म सब से अधिक समर्थ है और कुछ नहीं तो तुम्हारे आश्रम में मैं भी हिन्दू जाति की एकता का तो अनुभव करूँगी ।

सुरेश- एकता का हीं नहीं बहिन। तुम अपने पीहर का अनुभव करोगी। अच्छा अब मेरे साथ आओ। पहले स्थान देख लो. फिर सामान लाना।

सुखि०-हां भैया चलो। (दोनों का साथ २ प्रस्थान)

(दो विद्यार्थीयों का प्रवेश)

एक- तो तुम भी वालचरों में भरती हो गये ?

दूसरा हां, हुआ तो हूँ।

पहला-अच्छा तो आज लोक सेवा के धन्टे में सेवा का क्या काम किया ?

दूसरा-और क्या किया ? कुछ देर सोये और फिर वाग में घूम घाम कर चले आए।

पहला वाह तव तो तुम बड़े पक्के वालचर हो ?

दूसरा-अरे तो वे बातें भी करने की हैं क्या ?

पहला -नहीं तो क्या सिर्फ कहने की हैं ?

दूसरा-और क्या ? मैं तो यही समझता हूँ। देखो. ना ? गुरु जी अपने को तो लोक सेवा का काम करने को भेजते हैं। और खुद आराम कुर्सी पर उल्टे होकर पड़े रहते हैं। अपने से खादी पहनने को कहते हैं। खुद रेशमी रूमाल रखते हैं। विलायती मोजे पहनते हैं। फिर इतने लड़कों को रोज २ लोक सेवा का काम भी कहाँ मिले ?

पहला-अरे अव वह बात नहीं रहेगी।

दूसरा–क्यों अब क्या होगा।

पहला–एक तो कताई शुरू होगी !

दूसरा–कताई ? तब तो बड़ी आफत होगी।

पहला–क्यों ?

दूसरा–अरे कातना तो औरतों का काम है।

पहला–औरतों का काम है। तो महात्मा जी क्यों कातते हैं ? और हजारों लोग क्यो कात रहे हैं ?

दूसरा अरे – यह महात्मा जी का तो इन्द्रजाल है ही। असल में तुम नहीं जानते। इसमें बड़ी चाल है।

पहला–क्या चाल है ?

दूसरा–बात यह है कि महात्मा जी औरतों को मर्द बनाना चाहते हैं। और मर्दों को औरत।

पहला–किस तरह ?

दूसरा सब तरह मर्दों से चरखा कतवाते हैं औरतों से पर्दा उठवाते हैं। मर्दो को अहिंसा सिखलाते हैं। औरतों से बाल कटाने को कहते हैं। नाक, कान छिदाने बंद करते हैं। इन सब बातों का और क्या मतलब है। हो सकता है ?

पहला–अबे, उल्लू की दुम। अच्छा मतलब लगाया।

दूसरा अरे मानते ही नहीं हो। थोड़े दिन में देख लेना, वे मर्दों से बच्चे जनने को कहेंगे।

पहला अरे मानें तो तब, जब मानने लायक हो। भला महात्मा जी ऐसा क्यों करने लगे ?

दूसरा - इसका भी कारण है।

पहला- क्या कारण है ?

दूसरा- यही कि हिन्दुस्तान के मर्दों से खासकर मुसलमानों से, सत्याग्रह नहीं होता। वे उपद्रव कर डालते हैं। इसी लिए औरतों का काम धीरे २ मर्दों के सिर डाल कर फिर औरतों से सत्याग्रह करावेंगे,

पहला- तेरी ऐसी तैसी।

दूसरा- खैर तो हम झूठे ही सही। हाँ,बता और क्या होगा ?

पहला- और सुरेशचन्द्र जी की निगरानी में रात्रिय पाठ-शालाएं खुलेंगी।

दूसरा उनमें अपन पढ़ायेंगे ?

पहला- हा, पढ़ायेंगे और कातना सिखायेंगे।

दूसरा-यह तो मुझे पसंद है अच्छा और ?

पहला- और म्यूनिसिपैलिटी वालों से मिल कर रोज एक मुहल्ले की सफाई करनी पड़ेगी।

दूसरा- देखले आ गई न वह बात ?

पहला- कौन सी बात ?

दूसरा वही मर्दों को औरत बनाने की। ये घरों में झाड़ू लगाना और कूड़ा बाहर डालना औरतों का काम है कि नहीं ?

पहला- तेरे तो दिमाग में गोबर भरा हुआ है।

दूसरा- और तेरे दिमाग में गोबर भरा हुआ है। हां तो, मानता ही नहीं।

नेपथ्य में- घंटी बजती है।

पहला- अच्छा अभी तो घण्टा पूरा हो गया शाम को बात करेंगे। (दोनों का प्रस्थान)

दूसरा- हां, अभी तो चलो शाम को सही,

पर्दा उठता है

(दृश्य दूसरा)

[नगर का चौरहा। कुछ विद्यार्थी, अध्यापक, एक मुसलमान डाक्टर (दाड़ी वाले), एक चश्मा लगाये हुए है और सिर पर अँग्रेजी बाल रखाए हुए म्यूनिस-पैलिटी के सदस्य। कुछ दूसरे लोग। कुछ झाड़ू लिये हैं कुछ टोकरे, फावड़े आदि।]

एक— (डाक्टर से) अजी यह देखिये डाक्टर साहब! इस मकान में से कितना जखीरा निकला है? (डाक्टर पास जाता है। वह एक २ चीज उठाकर दिखाता हुआ) यह देखिये फटा हुआ जूता फूटी हुई बोतल, टूटा हुआ टीन डिब्बा, टूटी हुई कीलें, तेल भरने का टूटा हुआ पम्प, बूट के तस्मे, फूटे हुए कबेलू।

डाक्टर-या खुदा! अजीब लोग हैं! भला इन चीजों को जमा रखने से फायदा!

म० मालिक–(प्रवेश करके) सलाम साहब ! क्या मामला है ?

डाक्टर–सलाम साहब ! पहले यह वताइये कि ये अजायबघर वनाने की चीजें आपने क्यों रख छोड़ी हैं ? ये कुछ काम आवेंगी क्या ?

म० मालिक-काम तो क्या आवेंगी ? ये तो निकम्मी चीजें हैं ! यो ही पड़ी हैं ! लेकिन इतने से कूड़े से क्या होता है ?

डाक्टर–क्या होता है ? (अपने साथी से) जरा हटाना भाई साहब ! (साथी कूड़े को सरकाता है ! कुछ विच्छू, कनखजूरे निकल कर भागते हैं) यह देखिये, ये बिच्छू, कनखजूरे किसी को काटते या नहीं ?

मकान मा०–(कुछ आश्चर्यान्वित होकर) हां साहब ! यहां तो वच्चे दिन भर खेलते हैं ! ये तो काटते ही। लेकिन ये कौन जानता था कि इतने से कूड़े में भी ये वला होगी ?

डाक्टर–इसीलिये तो घर में जरा सा भी कूड़ा न रखना चाहिये। और उसमें लगता क्या है ? दो कदम आगे जाकर ढोल में डाल दिया।

म० मालिक–हाँ साहब काम तो एक मिनट का ही है। ठीक है, अव हमारे यहाँ आप को कभी यह शिकायत न होगी।

डाक्टर–"थैंक यू ओल्ढ चैप"।

(दूसरे दरबाजे पर एक वृद्धा खड़ी है। सामने एक विद्यार्थी खड़ा है।)

विद्यार्थी– अजी डाक्टर साहव, इधर आइये। इस घर में एक बीमार है।

डाक्टर– (वहां पहुँच कर) कहां है ? कौन बीमार है भाई ?

वृद्धा– यहां भीतर है, मेरे साथ आइये साहव। (दोनों का नेपथ्य में प्रस्थान)

विद्यार्थी– (दूसरे से) यार। ये लोक सेवा अपने को पसंद नहीं आई।

दूसरा– क्यों ?

वही– अरे और क्या ? यह तो सेवा क्या धूल फांकना है। मैं तो बढ़िया कपड़े पहन कर आया था।

दूसरा– तुमने सोचा होगा कि वहां खड़े २ दूसरों पर हुकुम चलाओगे और लैक्चर फटकारोगे। क्यों ?

वही– हा भाई। मैं तो यही समझा था। मैंने तो बड़े २ लीडरों को यही करते देखा है।

दूसरा– तो वैसी सेवा के दिन अब गये भाई। अव तो गांधी से पाला पड़ा है। अब आराम कुर्सी की राजनीति नहीं चल सकती।

(डाक्टर और वृद्धा का प्रवेश)

डाक्टर– यह कितने दिन से बीमार है मां जी ?

वृद्धा– बीमारी तो इस मकान में जिस दिन से आये हैं मिटती ही नहीं है भैया, सदा एक न एक को बुखार खांसी बना ही रहता है। इसे भी दो महीने हो गये।

डाक्टर-फिर किसी से इलाज नहीं करवाया ?

डाक्टर- फिर किसी से इलाज नहीं करबाया ?

वृद्धा- इलाज क्या-कराती। 'बरनी बिठाली" "उतारा करा दिया।' कुछ भी तो फरक नहीं पड़ा। ये क्या बीमारी है भैया
ये तो कोई भूत पलीत की माया है।

डाक्टर- भूत पलीत नहीं है मांजी। मलेरिया है। (इधर-उधर देखकर) अच्छा मांजी। तुम्हारे यहां घर के सब कुल्ला दांतन यहीं करते हैं क्या ?

वृद्धा- हां भैया, यहीं करते हैं।

डाक्टर तो बस इस घर का भूत इसी में रहता है। देखो तो कितनी मिट्टी, खखार, कोयले, दांतन के टुकड़े वगैरह पड़े हैं ? पूरा एक बालिस्त ऊँचा है।

वृद्धा- ऊहं, इससे क्या होता है ?

डाक्टर- इससे तो अनर्थ हो जाता है मांजी। (विद्यार्थी से) लाना भाई जरा फावड़ा। (विद्यार्थी फावड़ा लाकर खोदता है) देखो। देखो मांजी। ये छोटे छोटे हजारों कीड़े हैं कि नहीं।

बृद्धा- हां भैया हैं। तो सही !

डाक्टर- बस ये ही बीमारी पैदा करते हैं। आप ऐसी जगहों को धुलवा कर साफ रक्खो। फिर देखो १५ दिन में बीमारी भाग जाती है कि नहीं।

वृद्धा- अच्छा भैया ये भी कर देखूंगी।

डाक्टर- (वृद्धा से) अच्छा लो ये गोलियां। तीन-तीन घन्टे

वाद एक गोली देना। (जेब से निकाल कर गोलिया देता है। वृद्धा लेती है।) लेकिन सफाई न रक्खोगी तो दवा का कुछ असर न होगा।

वृद्धा– सफाई रक्खूंगी भैया। जरूर रखूंगो।

डाक्टर– (विद्यार्थी से) अच्छा भाई। (सब झाड़ू निकालते हुए एक ओर जाते हैं। पीछे से कुछ छोटे २ बच्चे आकर साफ की हुई जगह में शौंच क्रियार्थ बैठ जाते हैं।)

चश्मे वाला–(लड़कों की तरफ हाथ उठा कर) अजी डाक्टर साहब। यह देखिये। आपकी महनत की कदर।

डाक्टर– (देखकर) धत्तेरी बेवकूफी की। (जोर से) अरे यह क्या करते हो। (लड़कों की तरफ झपटता है। लड़के भागते हैं। भला ऐसे लोगों को कोई किस तरह सफाई सिखावे? (विद्यार्थी से) बुलाना भाई जान भंगी को।

एक वृद्धा (प्रवेश करती हुई) कौन है, जो बच्चो को डराता है? वाह! ये क्या बात है?

डाक्टर– डराते कहीं मांजी। लेकिन देखो तो, हमने तो महनत करके सफाई की और वे टट्टी जाने बैठ गए।

वृद्धा- बैठेंगे ही। हमारे बच्चे सदा से यहीं टट्टी जाते हैं।

एक विद्यार्थी-तब तो ये सनातन धर्म है डाक्टर साहब। यह कैसे छूटेगा?

वृद्धा- हां भैया ठेठ की रीति कैसे उठेगी ?

डाक्टर- लेकिन माजी सोचो । इससे नुकसान किसका होता है ? मुहल्ले में गन्दगी रहने से बीमारी फैलती आने जाने वालों के पैर और कपड़े खराब होते हैं । वे मुहल्ले वालो को गाली देते हैं ।

एक गृहस्थ-(प्रवेश करके) लेकिन साहब ! हम तो जैनी हैं ।

डाक्टर- सो इससे क्या हुआ ?

गृहस्थ- हमारे शास्त्रों के अनुसार ये क्रियाऐं सूखी भूमि पर ही करनी चाहिये, ताकि ज्यादा जीव पैदा होकर न मरें ।

विद्यार्थी- और आदमी भले ही बीमार होकर मरें ?

डाक्टर- (स्वगत) यह वही बाजे और मस्जिद वाला सवाल । (प्रगट) अरे भाई साहब । वह शास्त्रों की बात गांवों के लिये है । उस जमाने की है जब बड़े २ शहर नहीं थे । जब पखाने और इबादत खाने शहर में बनाने जरूरी न थे लोग जरूरत के वक्त बाहर जा सकते थे। आज यह कायदा कैसे चल सकता है ?

गृहस्थ- तो भी हम उसके खिलाफ कैसे चल सकते हैं साहब ।

डाक्टर- तो भाई । घर में ही ठीकरे वगैराह में राख रख कर काम चलाया करो और बाद में उसे ढोल में डाल दिया करो । वरना हमें मजबूरन यहां दिन भर के लिये एक भंगी मुकर्रर करना पड़ेगा और उसका खर्चा तुम्हें देना होगा ।

गृहस्थ- हां यह हो सकता है।

डाक्टर- (दूसरी तरफ देख कर) अच्छा यह चबूतरा किसका है ?

गृहस्थ- यह तो पंचायती चबूतरा है।

डाक्टर तो इसके पास में ये ईंट पत्थरों का ढेर क्यों हैं ?

गृहस्थ- एक जने की चीज हो तो वह सम्हाल कर रखे। पंचायती को कौन सम्हाले ?

विद्यार्थी- और फिर भी हम पंचायती स्वराज्य चाहते हैं ?

गृहस्थ- फिर अब यहां कोई सोता बैठता नहीं।

डाक्टर- क्यों ? अब क्यों नहीं सोते बैठते ?

गृहस्थ एक मुसाफिर यहा पर मर गया था। तब से जो यहां सोया उसे ही सर्प ने काट लिया।

डाक्टर- यों कहो न कि वही मुसाफिर भूत बन गया और वही सर्प बन कर काटता है ?

गृहस्थ- हां लोगों का ख्याल तो ऐसा ही है।

डाक्टर- (विद्यार्थीयों से) अच्छा भाई ! कुछ भंगियों और मजदूरों को लेकर होशियारी से इस ढेर को हटवाओ। देखो अभी इनका भूत निकलता है। न जाने हिन्दुओं के दिमाग से यह पागल-पन कब दूर होगा ? (चश्मे वाले से) अच्छा साहब ! अब इस दूसरी हवेली का दरवाजा खुलवाना ?

(चश्मे वाला दरवाजा खटखटाता है।)

एक युवा– (घर में से निकल कर) क्या है साहब। (डाक्टर को देखदर) ओहोः डाक्टर साहब। आज यह क्या हालत है ? आपकी तो दाढ़ी वेतरह भर गई है।

डाक्टर– क्या कहूँ भाई ? मैं तो यही सोच रहा हूँ कि ये गाँधी जी की खोपड़ी अल्ला मियाँ ने किस मसाले की बनाई है ?

युवक– क्यों, क्या हुआ ?

डाक्टर– और क्या जितनी बातें सूझती हैं, उल्टी ही उल्टी। पहले चरखा कताना गुरू किया, अब झाड़ू दिलाने लगे। यह हुई हमारे बी० ए०, एम० ए० की कदर।

चश्मेवाला-हाँ साहब, मैं तो समझता हूँ, गांधी का अवतार ही पढ़े लिखों की मिट्टी पलीद करने को हुआ है।

तीसरा– यह तो साफ़ ही है जी। भला कहाँ ये चमेली का तेल पड़े हुए फेशनेबुल बाल, लेवेण्डर लगे हुए कपड़े और सोने की कमानी के चश्मे और कहाँ ये झाड़ू ? ये सड़क की घूल ?

चौथा– भाई यहाँ के पढ़े लिखे, फैशन भक्त भी बहुत हो गए थे। दरअसल उन्हें एक एसे ही गुरु की जरूरत भी थी ?

युवक– तो यों ही कहिये ना कि गांधी जी ते आप लोगों को अहदीपन में गिरने से बचा लिया।

डाक्टर- यही क्यों, वैसे तो यह कहना चाहिये कि पढ़े और बेपढ़ों के एक दूसरे के दुश्मन बनने से बचा लिया, छोटे बड़े के भेद को बहुत कुछ मिटाने का रास्ता निकाल दिया।

युवक- तब तो नाराज न होकर उनका शुक्रिया अदा करिये। अच्छा कहिये : मुझे क्यों याद किया है ?

डाक्टर- इसीलिये (झाड़ू दिखाकर) यह देखते नहीं हो।

युवक- (हंस कर) क्या करियेगा ?

डाक्टर- नहीं जी ! आप का घर साफ करेंगे।

युवक- हमारा घर आप साफ करेंगे ? तो फिर हम किसलिये हैं ?

डाक्टर- क्या करें भाई। आप लोग न करें तो हमें तो करने ही पड़ेंगे। सुरेशचन्द्र जी का हुकुम ठहरा।

युवक- नहीं साहब। ये तो हम लोगों के लिये बड़ी शरम की बात होगी। भला यह कैसी बात कि रहें हम और झाड़ें दूसरे। आप तो सिर्फ बाहर की सफाई की फिक्र कीजिये। मकानों की भीतर की सफाई का प्रबन्ध हम करेंगे।

एक- आप क्या करेंगे।

युवक- हम आज सब मुहल्ले के लोगों को इकठ्ठे कर पक्का इन्तजाम कर लेंगे।

डाक्टर- लेकिन हमारा इत्मीनान कैसे होगा ?

युवक- वैसे आप रोजाना देख सकेंगे।

डाक्टर- थैंक यू मिस्टर। आपके जैसे समझदार सब लोग मिल जायें तो एक हफ्ते में यह कस्बा बहिश्त बन जाय अच्छा बन्दे०।

युवक- बन्दे ! (दरवाजा बन्द कर लेता है। डाक्टर आदि आगे बढ़ते हैं। इसी समय कोई ऊपर से टोकरा भर मलवा डाल देता है। सब भागते हैं। फिर भी सब के सिर दाढ़ी आदि में धूल भर जाती है)

डाक्टर- अरे यह क्या बला है ? (डाढ़ी के बालों में से उंगलियां निकाल कर देखता हुआ) लाहौल विला कुवत। इन हिन्दुस्तानियों को कूड़ा रखना भी तो नहीं आता।

एक विद्यार्थी-(हंसता और अपने कपड़े झाड़ता हुआ) क्या हुआ डाक्टर साहब कोई खुशबूदार चीज मिली हुई है क्या ?

डाक्टर- नहीं जी, किसी भले आदमी ने कूड़े में थूक रखा था। (हाथ दीवार से पोंछते हुये) अरे जरा पानी मंगाओ भाई ! अजब मनहूसों से काम पड़ा है।

चश्मे वाली-क्यों डाक्टर साहब क्या मिला ?

डाक्टर- मिला तुम्हारा सिर।

दूसरा वि०-मिला है लोक सेवा का महाप्रसाद। बोलो महात्मा गाधी की जय।

बृद्धा- माफ करना भैया। ये बहू बड़ी पागल है। सो तो मैंने कह दिया था कि किसी भले मानस को देख कर डालना। लो मुँह धोलो न (डाक्टर मुँह धोता है)

चश्मे वाला–तब तो मां जी। इसने आपके हुकुम की तामील की। क्यों कि हम सबसे भले मानुस ये डाक्टर साहब ही हैं।

वृद्धा– ना भैया। बड़ी मूरखता हुई। मैंने तो इसीलिये सफाई कराई थी कि आप लोग देखने आवेंगे।

तीसरा– खैर मा जी गलती तो होती ही है। आप तो आयंदा ही ध्यान रखना। क्योंकि हमें तो रोज आना पड़ेगा और रोज ऐसा महान प्रसाद मिलने लगा तो वस.....

वृद्धा– नहीं भैया। अब ऐसा न होगा। अब मैं खुद अपने सामने सब कूड़ा ढोल में डलवाऊंगी। आप लोग तो हमारे फायदे के लिये ही पच रहे हैं।

डाक्टर और गटर में भी न डलवाओ तो एक इन्तजाम तो जरूर करना मां जी ?

वृद्धा– वह क्या भैया ?

डाक्टर– यह कि कूड़े में कोई थूके नहीं। इससे मेरे जैसे डाढ़ी वाले को बड़ी आफत हो जाती है।

बृद्धा– थूका तो जाज भी नहीं था भैया। असल में आज ग्वार-पाठे की तरकारी बनाई थी, उसी का रस होगा।

डाक्टर- हां था तो ऐसा ही चिकना चिकना माता जी खैर, जो कुछ हो। अच्छा भाई अब चलना चाहिये।

दूसरा– हां चलिये ! (जाते हैं। पर्दा गिरता है।)

(कुछ स्त्रियों का सूत की छोटी २ गाठें लिये प्रवेश)

एक- (सूरदास को देख कर) ऊँह ! ये मुआ सूरा तो जहाँ देखो आगे ही मिलता है।

दूसरी अरे सूरदास ! क्या तूने भी कातना सीख लिया है ?

सूरदास- क्या करूँ बहिन ! भीख मांगने से भी कोई बुरा काम है क्या ? जने जने के सामने हाथ फैलाना, दुत्कारे खाना, भला हो गांधी बाबा का। अब चरखा और तकली की बदौलत मेरे जैसे अन्धे भी बिना किसी की खुशामद किये पेट भरलेते हैं।

एक- हाँ भैया। बात तो सच्ची है। हम लोगों को ही देखो ना ? इन मिल के कपड़ों के आगे रांड विधवा का जीना ही भारी हो गया था।

दूसरी- और सुनार, लुहार, धुने, जुलाहे, सब धूल फांकते थे।

तीसरी- ओह ! पारसाल ही काल पड़ गया तो हमें खाने को मिलना कठिन हो गया। पच्छिम में गई तो वहाँ गुन्डों के मारे आफत हो गई। आधी औरतें कारखानों में ही गायब हो गई। कोई मुसलमानी हो गई, कोई ईसाई।

चौथी- तो वहां तो वन बन की लकड़ी इकठ्ठी होती है बहना। न जांत पांत का डर है न बुराई भलाई का !

पांचवी- हां बहन ! इसीलिये तो पुराने लोग मोटा पहनना

पसंद करते थे। घर धन्धे तो इज्जत की ढाल है। किन्तु आज सुरेश भैया अभी तक क्यों नहीं आये।

सूरदास- अव आते ही होंगे वाई। टैम तो हो गई है।

(सुरेश का दो साथयों सहित प्रवेश)

एक- ये लो, आ ही गए। बन्देमातरम् महाराज।

सब- बन्देमातरम्।

सुरेश- वन्दे, माताओ ! आओ ! (अपने साथी को ओर संकेत करके) पहले सब अपना सूत इन्हें दिखाओ। ये सूत के अंक और मजबूती की जांच करेंगे। (दूसरे को लक्ष्य करके) फिर इनसे तुलाओ और तव भण्डार से दाम लो।

(एक जना-भण्डार खोलता है।)

एक- तो महाराज पहले मेरा सूत तोल लो। क्योंकि मुझे वाजार से धान और सौदा भी लेना है ।कल राखी है। थोड़ा गुड़, तेल, ले जाऊँगी।

दूसरी- और इसके साथ ही मेरा तोल लो। हम दोनों एक ही गांव की हैं। साथ २ जायेंगी।

तीसरीं- वाह ! तू ही तो बड़ी लाठ है। सब से पहले तुलाएगी। मैं दिन निकले की बैठी हूं।

दूसरी- बैठी है तो मैं क्या करूँ ? मेरे को तीन कोस जाना है। खवर भी है ?

चौथीं- और मेरे को चार कोस जाना है। हटो मुझे तुलाने दो। (बीच में घुसना चाहती है।)

पांचवी– नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं सबसे आगे खड़ी हूँ। मेरा पहले तुलेगा। (धक्का मुक्की होती है)

सुरेश– लड़ो मत मां। सबका तुल जायेगा। धीरज रक्खो (कुछ शान्ति होती है। एक वृद्धा, एक लड़की और सूददास पीछे खड़े हैं।)

लड़की– चलो मां ! अपना भी सुत तुला दें ?

वृद्धा– औरों को तुला लेने दे बेटी ! धक्का मुक्की में कौन पड़े ?

लड़की– देख मां सूरा तो यहाँ भी खड़ा २ कताई कर रहा है।

लड़की– तो मां अपनी भी तकली बनवा लेना ? यहाँ इतनी देर बैठी रुहती है, आती जाती है। तकली हो तो यहां और रास्ते में भी काता करें।

वृद्धा– हां, बेटी है तो ठीक। ये इतनी बखत यों ही तो जाती है। आज बनाऊँगी। क्यों सूरे ! तू इससे चलते २ भी कात लेता है।

सूर– हां माजी ! चलते २ क्या ? इससे तो बातें करते, बैठे, सोते. सब तरह काता जा सकता है। बिछोने भी पर जब तक नींद नहीं आती पड़ा २ काता करता हूँ। इसकी बदौलत दूनी कताई हो जाती है।

वृद्धा– ठीक है. भैया ! आज मैं भी बनाऊँगी।

लड़की- अच्छा माँ, मेरा कल का सूत क्या भाव विकेगा ?

वृद्धा - कम से कम तीन पाव का तो विकेगा ही बेटी। कम्बोडिया कपास लाई हूँ तब से तेरा सूत अच्छा आने लगा है।

लड़की- हां माँ। ये कपास बड़ी नरम है। पर 'महात्मा' इतने सूत का क्या करता होगा माँ ?

वृद्धा कौन जाने बेटी। कपड़े बुनवाता होगा। ये भी सुनी है कि सूत से फिरंगियों को बांधता है।

लड़की- फिरंगी ? वो जो अपने यहां पोथी मिठाई बांटने आते हैं। वो टोप लगाये।

वृद्धा - हां वोई।

लड़की- तो महात्मा उन्हें क्यों बाँधता है ?

वृद्धा- बांधता होगा बेटी। ये गरीब गुरबा को सताते हैं, इसलिये। ये कल कारखाने इन्होंने ही तो चलवाये हैं। ये मरे जब से इस देश में आये हैं तब से रोज 'छपन्या काल' ही पड़ता रहता है।

सुरेश- लो आओ मां जी। तुम्हारा भी सूत तुला दें।

(बृद्धा, सूरदास आदि सूत तुलाते हैं। दूसरी स्त्रियाँ रुपए पैसे सम्हालती हैं। पर्दा गिरता है।)

सुखिया (प्रवेश करके स्वागत) उफ ! संसार कितना निष्ठुर है ? कितना दयाहीन है ? कितना पाप पूर्ण है ? कोतवाल ने मेरे पति को झूठा जाल बना कर जेल भिजवा दिया है और मुझे उनसे मिलने भी नहीं दिया। यह क्यों ? ....सब समझती हूँ किन्तु भगवान ! (आकाश की ओर देखकर)

दुनिया किस लिये इतनी अन्धी हो जाती है ? क्यों मौत को भूल जाती है ? आखिर यहां कितने दिन जीना है ? और यह रूप क्या है ? रक्त मांस के पिंजर पर पानीं का झोल ही ना ? फिर इस तुच्छ के लिये इतना पाप ? इतनी हाय तोबा ? ..... परन्तु अब मैं क्या करूँ ? पहले पीस कात कर कुछ पैदा कर लेती थी। कारखाने खुलने से वह भी गया। अब तो बच्चों को पालने के लिये बाहर ही मजदूरी पर जाना पड़ेगा। फिर वही आफत सामने आवेगी। .... तब ? (कुछ सोचकर) खैर कुछ भी हो, बच्चों को तो पालना ही पड़ेगा। यदि वास्तव में इस संसार का स्वामी है, तो भगवान ही है, और वह सत्य का रक्षक है तो वह मेरी भी रक्षा करेगा। मैं उसी के बल पर इन पापियों को दिखाऊँगी कि सत्य के सामने पाप की नहीं चल सकती। मनुष्य चाहा करे परन्तु मालिक के हुकुम बिना एक डाल भी नहीं हिल सकती।

(प्रस्थान) पर्दा उठता है।

(स्थान—इञ्जिन की चक्की का कारखाना। कारखाने का मुसलमान मालिक टहल रहा है। कुछ स्त्रियां बैठी अनाज बीन रही हैं। कुछ आदमी भीतर काम कर रहे है।)

सुखिया– (प्रवेश करके) क्यों मियां साहब ! मुझे भी कुछ मजदूरी मिल सकती है ।

मियां– (मुस्कराता हुआ) हां हां, तुम्हारे लिये मजदूरी की क्या कमी है सुखिया । लो तुम ये (और स्त्रियों से अलग एक टोकरा बता कर) गेहूँ बीनो ।
(सुखिया बैठती है । मियां एक परात देता है । वह बींनना शुरु करती है)

मियां– (स्वगत) औरत क्या है । हूर है हूर । तभी तो कोतवाल जान देता है । (एक मूढ़ा लाकर सुखिया के पास बैठता है । सुखिया से) क्यों सुखिया ! क्या यह सच है कि तेरे खांविद को कैद हो गई है ?

सुखिया– हाँ मियां साहब । उनको झूठा इल्जाम लगा कर कैद कर दिया है । तभी तो मुझे यहा आना पड़ा है ।

मियां– हाँ, झूठा इल्जाम लगाना तो इस राज में मामूली बात है । सुखिया । लेकिन अब उसका छूटना मुश्किल है । मैंने सुना कोतवाल उससे नाराज है ?

सुखिया– हाँ साहब कोतवाल की तो सारी करतूत ही है ।

मियां– तब तो और भी मुश्किल है । वह बड़ा ही बदकार इस राज में वैसे ही जेर तजवीज रहते २ कैदियों की उमर बीत जाती है । फिर सरकारी आदमी खिलाफ हों, तब तो बात ही क्या ?

सुखिया- देखो मियां साहब। गरीब का तो भगवान ही है। वह दिखावेगा सो देखना ही पड़ेगा।

मियां- खैर, भगवान तो है ही सुखिया। मुझे तो यह फिकर है कि तेरी गुजर कैसे चलेगी? सुखदेवा ने अड़ें भिड़े वक्त के लिये कुछ जमा भी किया है कि नहीं?

सुखिया- जमा कहा से करते साहब। दिन भर तो मोची खाने में बेगार में काम करते थे। रात को थोड़ा बहुत काम घर पर होता उससे गुजर मुश्किल से चलती थी।

मिया- अच्छा, ये बच्चे तो सुखदेवा की पहली औरत के हैं ना?

सुखिया- जी हा, पहलो के तो हैं ही।

मियाँ- तो तू उनके लिये क्यों आफत देखती है?

सुखिया- मैं नहीं देखूँ तो अब और उनके लिये कौन है, मियां साहब? अब तो वो मेरे ही है।

मियाँ- क्यों. उनको अनाथालय में रख देना?

सुखिया- नही, मियां साहब। मेरे हाथ पैर चलते हैं. तब उन्हें अनाथ कैसे बना दूँ। फिर अनाथालय वाले चमार के लड़कों को कहां लेते हैं?

मियां- और फिर भी तुम लोग इस हिन्दूपन को धता नहीं बताते?

सुखिया- धरम छोड़ने की चीज थोड़े ही हैं मियां साहब। वह तो भगवान और मनुष्य के बीच की बात हैं।

मियां- क्यों ऐसा धर्म क्या काम का, जिसमें जूते, धक्के, बेग.र, के सिवा कुछ मिले ही नहीं। कोई छुए तक नहीं। पूछे तक नहीं। ये लोग बिल्ली का झूँठा दूध पी लेते हैं। रेल में खाना खा लेते हैं। अँग्रेजों के साथ चाय पीते हैं और तुम्हें छूते तक नहीं। हमारे यहाँ देखो। कोई हो कलमा पढ़ा और बराबर का भाई हुआ। उसी वक्त साथ खाना खा लेते हैं। एक को काम पड़े तो सब मदद करते हैं। तुम्हारे हिन्दुओ में ये बातें कहां ?

सुखिया- हां मियां साहब। कहते हैं हिन्दुओं में भी पहले तो ऐसा ही था। अब लोग पुरानी बातें भूल गए हैं। लेकिन इसलिये धर्म थोड़े ही छोड़ा जाता है।

मियां- होगा पहले, आज तो कुछ भी नहीं है। अच्छा. तुम एक काम करो ना ?

सुखिया- क्या करूँ ?

मियां- लड़कों को हमारे यतीम खाने में भरती करा दो और तुम्हें मैं अपने मकान में नौकर रख लूंगा। तुम्हारा धर्म भी बना रहेगा और काम भी चल जायेगा।

सुखिया- क्या काम करना पड़ेगा ?

मियां- काम क्या है ? कोई छोटा मोटा काम हुआ तो कर देना नहीं तो बैठी रहना।

सुखिया- नहीं मियाँ साहब। मैं एसी नौकरी नहीं करती। मेरे लिये तो यही मजदूरी अच्छी है।

मियां- तुम तो पागल हो। इसमें क्या है ? यहां तो हजारों औरतें इस तरह नौकरी करती हैं।

सुखिया- करती होगी साहब ! अपनी करनी। पार उतरनी जिसकीजो जाने, (भीतर से कोई आवाज देता है।)

मियां- (उठता हुआ) तुम इस बात पर सोचो सुखिया। (प्रस्थान)

(भीतर से दो युवक आते है)

एक- क्या सुखिया यही है ?

दूसरा- हा यही तो है ?

पहला- करम फूटे ! भला यह क्या चमार के यहाँ रहने लायक है ?

दूसरा- हां जी, अल्ला मियाँ के यहाँ भी अन्धेर है। (सुखिया उसकी तरफ देखती है) क्यों सुखिया। गेहूँ खतम हो गये क्या ?

सुखिया- हां भेया। (यह तो साफ हो गये, और ला दो।

दूसरा- अच्छा वो भीतर वोरी पड़ी है, उसमें से ले आओ।

सुखिया- मुझे तो यहीं ला दो भैया। मेरे दूसरे के घर में न जानेकी सौगन्ध है।

पहला- अरे, अच्छा नखरा किया। जा कर ले क्यों नहीं आती ? मजदूरी और नखरे की थोड़े ही बनती है।

सुखिया- ना भैया, मैं भीतर नहीं जाऊँगी।

पहला– नहीं जायेगी तो अपने घर जा। यहाँ क्या है, तेरी बहन और बहुत हैं।

सुखिया– अच्छा भैया जाती हूँ। लाओ इतने काम के तो जो पैसे बनते हों दिला दो।

दूसरा– अधूरे काम के पैसे नहीं मिलते ? पैसे लेने हों तो शाम तक काम करो।

सुखिया- अच्छा भैया तुम्हीं निहाल हो। (प्रस्थान)

(पर्दा गिरता है)

सुखिया– (प्रवेश करके) अब क्या करूँ ? प्रभो ! क्या इस संसार में गरीबी इतना बड़ा पाप है ? क्षुद्रता इतनी हेय है ? क्या मैं गरीब और शूद्र हूँ ? इसीलिये मुझे संसार में धर्म के साथ रहने को भी जगह नहीं ? सच्चाई के लिये संसार में मजदूरी भी नहीं ? तब क्या सत्य को छोड़ दूँ ? अपनी इच्छा का घात करके शरीर का सौदा करूँ ? नहीं भगवन ! यह मुझ से न होगा। मैं प्राण रहते धर्म को न छोड़ सकूंगी। किन्तु प्रभो ! तुम तो अशरण शरण कहलाते हो। सुनती हूँ कि अनेकों की रक्षा की है। अनेकों का उद्धार किया है। तुम जाति पांति नहीं मानते। फिर मैंने ऐसा क्या अपराध किया है जो तुम मेरी रक्षा नहीं करते। मुझे कोई आश्रय स्थान नहीं बताते ?

(गाती है)

कहते हैं लोग भीड़ भक्त पर पड़ी जहां।
पहुँचा है तेरा हाथ सदा ही तुरंत वहां॥
'प्रह्लाद को तूने ही बन नरसिंह बचाया।
आया तू ही गज के लिये दौड़ा हुआ यहां॥
हाँ लाज 'द्रोपदी' की भी तूने बचायी थी।
सोया है मेरी बार ही ऐ कृष्ण! तू कहां?

(अक्समात दो तीन मुसलमान और दो एक हिन्दू टूट पड़ते हैं सुखिया चिल्लाती है।)

नेपथ्य में- खबरदार! धबराना नहीं! कौन है?

(अपराधी भाग जाते हैं।)

दृश्य तीसरा

(अलावख्श (एक बुड्ढा) गाता हुआ प्रवेश करता है।)

इलाही हुआ वक्त कैसा रुजू है।
जमाना रास्ती का उद्दू है॥
गुलिस्तां में जा हर शजर गुल को देता।
न तेरी सी रंगत न तेरी सी बू है॥
मन्दिर, मस्जिद सभी ख्वान डाले।
इबादत है तेरी नहीं जुस्त जू है॥
गई रूह मुर्दा पड़ा है यहाँ अब।
शैतान जामे में तेरे नमू है॥
ईमान के माने हैं, बेईमानी।
वदी आज कहला रही नेक खू है॥
सिज्दे में भी गौर है गर्ज ही पर।
मगर मुंह से कहते खुदा तू ही तू है॥

अ० अली-(प्रवेश करके) कौन ? अली वख्श।

अलाबख्श हाँ अनवर। कहाँ जा रहे हो ?

अनवर कहीं नहीं। यहीं आश्रम जाता हूँ। कातने के लिये रुई ले आनी हैं। तुम यहाँ क्यों खड़े हो ?

अलावख्श-मैं सुरेशचन्द्र जी के लिये खड़ा हूं। वे कसबे में से आने वाले हैं।

अनवर- अच्छा अलावख्श कल की बातों के बारे में तुम किसी नतीजे पर पहुँचे ?

अलावख्श-हां, दो बातों के बारे में तो मैंने अपना अकीदा बना लिया है।

अनवर - किस किस के बारे में ?

अलावख्श-एक तो गोश्त, कुर्बानी वगैरह के बारे में दूसरा झूठ बोलने के बारे में।

अनवर- यानी कुर्बानी और गोश्तखोरी जायज है ?

अलावख्श-नहीं ! बिलकुल नहीं।

अनवर- क्यों ? मजहब में इजाजत है सो।

अलावख्श-मुझे तो ऐसा मालुम होता है कि हर मजहब में ऐसे फतवे पैगम्बरों और औतारों ने उस वक्त की जरूरत और खास हालत के माफिक दिये हैं। मजहब और अल्ला मियां किसी का मारना जायज़ नहीं ठहरा सकता।

अनवर- हाँ वैसे जान तो सब ही के बराबर होती है। बकरा हो या गधा। फिर एक का खाना जायज और एक का नाजायज क्यों ?

अलावख्श-वैसे भी जिसे अल्ला मियां ने जीने के लिये बनाया है उसे मारने का हमें हक कैसे हो सकता है ?

अनवर- और असली खुराक तो वह है जिसके बिना इन्सान जी ही न सके। लेकिन अलावख्श लोग कहते हैं कि आवाज वगैराह में भी जान होती है।

अलावख्श-हो तो भी, उन्हें तो उनकी उम्र खतम होने पर काम में लाया जाता है।

अनवर- तो इस हिसाब से तो ये हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वगैराह के वखेड़े भी फिजूल हैं ?

अलाइख्श-और क्या ? हकीकत की नजर से तो फिजूल हो है। आखिर मालिक तो एक है। एक बाप की औलाद में फिरके बन्दी कौन अच्छी कहेगा ?

अनवर- तो फिर ये लोग आपस में एक दूसरे को इतना गैर क्यों समझते हैं ? क्यों दीन के नाम पर खुदा के वन्दों का खून वहाते हैं ?

अलालख्श-इसकी वजह आम लोगों की जहालत और कुछ लोगों की वदमाशी। चालांक लोग अपना तलब वनाने के लिये बेवकूफों को लड़ा देते हैं।

अनवर- क्यों, क्या मुमकिन नहीं कि एक मजहव के लोग गुमराह होकर गलत रास्ते पर जा रहे हों, और इसलिये दूसरे उन्हें गैर समझते हों।

अलावख्श-हां, यह भी मुमकिन है। लेकिन अनवर भूल से खाली दुनियां में कौन है ? हम यह भी क्यों न माने कि शायद हम ही गलती पर हों और इसलिये जैसे हम गलत हों या सही अपने अकीदे पर चलने की आजादी चाहते हैं। वैसी दूसरों को दें।

अनवर- और जो वह अकीदा दूसरों को नुकसान पहुँचाता हो तो ?

अलावख्श-तो उसे छोड़ दें। क्योंकि अकीदे की आजादी अपने ही दायरे में मानी जा सकती है। वरना दूसरे भी हमारी आज़ादी का ख्याल क्यों रक्खें ?

अनवर- वही बात है कि, "जैसा बरताव तुम दूसरों से चाहते हो वैसा ही बर्ताव खुद करो" ?

अलावख्श-और क्या ? मैं तो इसी कायदे को सब से ज्यादा अहमियत देता हूँ ।

अनवर- तो तुमने गोश्त छोड़ने का इरादा कर लिया ?

अलावख्श-हा भाई ! सिवाय ऐसे मौके के कि जब उसका ऐहसान जान बचाने के लिये जरूरी हो तो मैं उसे हराम ही समझूंगा ।

अनवर- अच्छा झूठ के बारे में क्या तय किया ?

अलावख्श-वही कि, झूठ बोलना मजहब की नजर से ही नहीं दुनियां की नजर से भी बेजा है ।

अनवर- क्यों लोग तो कहते हैं कि झूठ बोलना बुरा है । भले काम के लिये झूठ बोलना बुरा नहीं ?

अलावख्श-तब तो चोरी, डाके, खून के जरिये से माल इकट्ठा कर उससे मस्जिद बनवाने में भी सवाब होगा ?

अनवर- अरे खून करके भी कहीं सवाब हो सकता है ? खून के नाम से ही रूह कांपती है ।

अलावख्श-तो उसूल तो वही है अनवर ! खून एक बड़ा गुनाह होने से बुरा मालूम होता है । लेकिन है तो झूठ भी गुनाह ही । और जब सवाब के लिये खून करना बुरा है तो झूठ बोलना भी बुरा है ।

अनवर- लेकिन सच बोलने से किसी बेकुसूर को नुकसान पहुँचता हो तो ?

अलावख्श-तो कहने से इन्कार किया जा सकता है और उसका नतीजा हो उसे बर्दाश्त किया जा सकता है ।

अनवर- अच्छा दुनिया की नजर से ?

अला०- दुनिया की नजर से उसकी जरूरत और भी ज्यादा है। आखिर जितने जुर्म और झगड़ें होते हैं उनकी जड़ में झूठ और फरेब ही तो होता है। आज एक काम दूसरी कौम ले, पड़ौसी-पड़ौसी से, मुल्क-मुल्क से चौकन्ना रहता है। एक दूसरे से चढ़ती फौज रखता है, एक दूसरे के खिलाफ साजिश करता है, इसकी क्या वजह है ?

अनवर- इसकी वजह तो यही है कि कोई किसी का भरोसा नहीं करता।

अला०- और भरोसा इसलिये नहीं है कि सब ने सच्चाई छोड़ रक्खी है। अगर कोई झूठ न बले और दूसरे के हक पर हाथ न डाले तो कोई किसी से धक्का खाने का खौफ न रक्खे और इससे जो वक्त और रुपया बचे उसमे ही सारा मुल्क आराम से रहे।

अनवर- ऐसी हालत में जुर्म भी कम हो जाये। पुलिस बुलिस का भी इतना झगड़ा न रहे। क्यों ?

अला०- और साथ ही व्यापार वगैरा में जो बेईमानी जा घुसी है वह भी दूर हो जाय !

अनवर- सुभान अल्ला ! वह बन जाय तो वह दुनिया भी कैसी बढ़िया हो ?

अला०- लेकिन वह दुनिया भी रक्खी कहाँ है, अनवर ! आज तो सब बातें उल्टी हैं। इन्सान मजहबी

उलझनों में फँसकर उल्टा भूल भुलैया में पड़ जाता है।

अनवर– हां, यह तो है ही। अभी तो अपने ख्यालात अपने वालदैन को ही पसंद नहीं आते। अच्छा खादी के वारे में क्या सोचा है ?

अला०– खादी पहनने के बारे में तो कोई उजर हो ही नहीं सकता। उसके फायदे लाकलाम हैं। हां कातने में मुझे जरा हिचकिचाहट होती है।

(सुरेश का प्रवेश)

अनवर– ये लो सुरेश चन्द्र जी भी आ गये। बन्देमातरम साहव।

अला०– बन्देमातरम !

सुरेश०– वन्देमातरम। कहो भाई आज दोनों में क्या बहस हो रही है।

अनवर– ये कहते हैं जि हमें चरखा कातने में शरम मालुम होती है।

सुरेश०– क्यों अलावख्श ?

अला०– जी नहीं, मेरा ख्याल यह है कि जिन्हें जरूरत नहीं है वे क्यों कातें ?

सुरेश०– सवाव के लिये कातें !

अलावख्श-सवाव और तरह भी तो किया जा सकता है ?

सुरेश०–किया जा सकता है, लेकिन इससे और भी फायदे हैं।

अला०– वे क्या ?

सुरेश०– देखिये। वैसे किसी को खैरात करने से वह अहदी बनेगा और इसके जरिये कमाऊ वनेगा।

दूसरी आजकल सबसें बड़ी खराबी यह पैदा हो गई है कि खेती, चरखा वगैरा के जो काम करोड़ों को धन्धा दे सकते हैं उन्हीं को लोग छोटे काम समझने लगे हैं। उन से उन्हें घृणा है! देखते ही हो, कितने ही भूखे मरते रहे तो भी मजदूरी नहीं करते। हां, चोरी कर लेंगे।

अला०- हां, यह तो दिन रात देखा जाता है।

सुरेश०- और इसके लिये बड़े ही लोग जिम्मेदार हैं।

अला०- क्यों बड़े उन्हें कब कहते हैं कि मजदूरी मत करो, चोरी करो।

सुरेश- लेकिन इन धन्धों को छोटे मानकर दूसरों से यह ख्याल पैदा वे ही करते है। आखिर छोटे बड़ों की ही नकल करते हैं। इसलिये बड़ों को ही खादी पहन कर और कात कर अपने इस गुनाह को धोना चाहिये।

अला०- अच्छा. और ?

सुरेश- दूसरे यह कि इसके जरिवे से वे भी सवाब कर सकते हैं जिनके पास पैसा नहीं है। फिर इसके लिये दूसरे की मदद की जरूरत नहीं। खास वक्त निकालने की जरूरत नहीं ? कीमती सामान की जरूरत नहीं। वच्चे, बुड्ढे. मर्द, औरत, गरीब, अमीर, सब इसे कर सकते हैं।

अला०- बस ?

सुरेश०- और सुनो ! आखिर दो चार घन्टे तो सब गप-शप, हंसी-दिल्लगी घूमने फिरने में खोते ही हैं। बड़े

आदमी, साधु, फकीर, शहरियों खासकर पढ़ें लिखों की औरतें दिन रात निकम्मी रहती हैं।

अनवर– हाँ. यह तो रिवाज ही हो गया है।

सुरेश – तो इतने निकम्मे वक्त को इस काम में लगाया जाय तो देश का कितना फायदा हो ? अगर ऐसे आदमी दस करोड़ मान लें और वे एक एक पैसा का सूत भी रोज कातें तो ढाई करोड़ आने रोज देश में बढ़ें या बाहर जाने से बचें। इतने निठल्लों की कमा कर खिलाने का कुछ बोझ तो गरीबों पर से कम हो औरतों के खाबिन्दों को कुटुम्ब के खर्चे के लिये बेईमानी का आसरा कम लेना पड़े। और एक पैसे का सूत कातने लायक वक्त कौन फिजूल नहीं खोता ?

अनवर– हां, इतना तो वक्त ज्यादा काम करने वाले भी फालतू बातों में खोते ही हैं।

सुरेश०– फिर बड़े लोग. बड़े तो छोटों से पैसा खींच २ कर ही बन रहे हैं ना ? इसके द्वारा वे उसमें से कुछ उन्हें वापिस दे कर उन्हें खुश रख सकते हैं। नहीं तो योरोप की तरह यहां के गरीबों को भी उन्हें मिटा देने पर कमर कसनी पड़ेगी। क्या अब भी तुम्हारी नजर में यह फिजूल है ? अच्छा, मुझे आज ही दौरे पर जाना है।

अला०– तो चलिये हम भी आश्रम चल रहे हैं।

सुरेश०– हां ? तब तो अच्छी बात है। आओ ! (सब का प्रस्थान)

पर्दा उठता है

दृश्य चौथा

(स्थान–एक ग्राम। ग्राम वासी और शहना आदि खड़े हैं)

एक– क्यों शहना जी ये झाड़ू निकालने की बात कैसे है ?

शहना– कौन सी बात ?

वही– हमने सुना है कि गिरधर पुर में बड़े बड़े आदमी झाड़ू निकालते हैं।

शहना– हां वह ! वह तो लोगों को सफाई रखने की आदत डालने के लिये शुरू किया था। शुरू २ में तो बड़ी दिक्कत पड़ी थी। लेकिन अब सब लोग समझने लगे हैं।

दूसरा– तो अब नहीं निकालते ?

शहना– नहीं, अब तो साधारण देख भाल से ही काम चल जाता है।

तीसरा– सफाई तो अच्छी है साहब ! हमारे यहां भी सुरेश चन्द्र जी ने खबर भेजी थी। उसी दिन से सब अपने २ मकानों के चारों तरफ रास्ता तक साफ रखते हैं।

चौथा– साफ रखते हैं तो देखो, अच्छा भी कैसा लगता है।

पहला– और क्यों साहब ! वे बेगार का पचड़ा कैसा है ? क्या यह बलाय फिर हमारे पीछे लगेंगी ?

शहना– नहीं भाई। सिर्फ इसी मौके पर लेने का हुकुम हुआ है। और करते भी क्या, एकदम बलाय आ पड़ी।

दूसरा– तो कुंवर जी के पहले आने की कोई खबर नहीं आई थी ?

शहना– कोई कुंवर जी की आई थी न दीवान साहब की ! दोनों रात को एकदम आ पहुँचे, तब इत्तिला मिली। और उन का भी क्या दोष ? मौका ही कहां मिला जो खबर भेजते ?

तीसरा– क्यों, क्या हुआ शहना जी ? मौका क्यों नहीं मिला ?

शहना– होगा भाई ! बड़े घरों की बड़ी बातें होती हैं। अपने को क्या लेना देना है ?

दूसरा– तो हम क्या किसी से कहने जाते हैं ?

तीसरा– क्यों हमारा इतना भी भरोसा नहीं क्या ?

शहना– भरोसा क्यों नहीं है भाई ! और यह क्या छिपाने वाली बात है ? लेकिन फिर भी कहीं बात न करना। बात यह है कि मदनपुर में बलवा हो गया है। लूटमार मची है। इन कुंवर जी और दीवान साहब से तंग आकर ही लोगों ने ऐसा किया है।

चौथा– राम राम ! बुरा हुआ भाई ! बिचारे दर्बार की बुढ़ापे में बिगड़ गई।

दूसरा– हा भाई ! कपूत से किसका घर बसता है ? इनके मारे तो सारा राज तबाह था।

तीसरा– तो फिर राज का क्या हुआ होगा शहना जी ?

शहना– हुआ क्या ? अभी तो सब गड़बड़ हो रही है। अँग्रेजी फौजें दौड़ रही हैं।

चौथा– तो आजन्ट साहब तो हमेशा वहीं रहते थे। उन्होंने पहले ही इन लोगों को क्यों नहीं रोका ?

शहना– अह ! उनको क्या गरज पड़ी थी जो रोकते ? पोल-पट्टी की बदौलत उल्टी उनकी पांचों घी में रहती थीं। और अब सीधा, सारे राज पर कब्जा करने का मौका मिल गया।

पांचवां– तो अब यहां अँग्रेजी हो जायेगी क्या ?

शहना– ढंग तो ऐसे ही दीखते हैं भाई, फिर राम जाने ?

तीसरा– ये तो और भी बुरा होगा।

चौथा– बुरा क्या होगा ? रियासत को तो कुछ आराम ही मिलेगा। अच्छा है, जने जने की लूट और बेगार से जान बचेगी।

शहना– आराम तो क्या खाक होगा जी ! रियासतों में तो ये भी ऐसे ही बन जाते हैं।

दूसरा– हां जी, भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है। असल में तो किसी का राज हो, रय्यत को तो सुख तभी रहता है जब उसमें एक और जोर हो।

तीसरा– हां भाई ! आजकल तो जीने के लिये भी जोर की जरूरत है।

शहना– फिर ये लोग पैसे के लिये जान देते हैं : तरह २ से नई नई चीजों से लोगों का पैसा खींच लेते हैं।

पहला– लेकिन अपन क्या करें भाई ? इन राजाओं के काम ही ऐसे हैं। खोटी करे सो खोटी पावें।

(कुछ सैनिकों और एक अफसर का प्रवेश)

ग्रामीण– जय चार भुजा की साहब ! (सब खड़े हो जाते हैं)

अफसर– जय चार भुजा की भाई। क्यों शहना जी। सब तैयारी हो गई ?

शहना– हां साहब हुई है। कुछ तो ये आ गए हैं। कुछ खा पीकर आ रहे हैं।

पटैल– (दूसरे साथी से) अरे एक चारपाई ले आ तो। दौड़। (अफसर से) सब तय्यार हो ही रहे हैं साब। बैठिये। तमाखू-पानी पी लीजे। (चारपाई आती है। अफसर बैठता है। सब बैठते हैं। एक साथी से) लो भरो भाई तम्बाकू। (दूसरे से) तू जा थोड़ा सा दूध इकठ्ठा करा ला।

अफसर– ना ना पटैल, यह तकलीफ क्यों करते हो ?

पटैल– नहीं साहब। इसमें तकलीफ की क्या बात है ? हमें क्या मोल लाना पड़ता है ?

अफसर– भाई। ठाकुर साहब ने कहलाया है कि आप लोग ये न समझें कि बेगार वापिस शुरू की जाती है। ये खास मौका आ गया है, इसलिये हुकमन आदमी मांगे गये हैं। वैसे सब को पूरी मजदूरी और कीमत दी जायगी।

पटैल– कोई बात नहीं साब। ऐसे मौके बेमौके काम करने से इन्कार थोड़े ही है। यों तो हमारे काम पड़ जाता है तो हम भी मदद लेते ही हैं।

दूसरा– हां जी, अपने भी त्यौहार, ब्याह-बरात में सबारी. सिपाई, जो कुछ चाहिये, ठाकुर साहब से मांग ही लाते हैं।

अफसर- और कहो। आप लोगों के गांव में तो सब चैन-चान हैं। कोई तकलीफ तो नहीं ?

तीसरा- नही साव। सब मौज हैं। सब ठाकुर साव को आसीस देते है।

चौथा- तकलीफ हो भी किस बात की ? अब तो गांव गांव में गांव वालों का राज हैं। शहने, चौकीदार, मास्टर, वैद्य सबको रखने निकालने का पंचायत को इखतियार हैं। अपने २ गांव जंगल का वन्दोवस्त गांव गांव के हाथमें है। फिर किसी को सताने का वार ही कहां से लगे ?

पांचवां- रही सही कमी सुरेश जी ने पूरी कर दी है। अव कपड़े लेने को भी बाजार में नही जाना पड़ता। वस राज की कौड़ी राज को दे देते हैं। और मौज करते हैं।

अफसर - यही चाहिये भाई। राज की तो सबसे बड़ी माया रइयत है। रइयत खुश रहे तो सब भला।

(एक जने का दूध का घड़ा और दूसरे का कटोरे गिलास लिये प्रवेश)

पटैल- इसमें क्या है साव। ये तो हमारी तरफ की खातिरदारी है। आप को पैसे थोड़े ही देने पड़ेंगे।

एक सि०-(हंसता हुआ) अरे भाई। पैसे नहीं दें और फिर तुम शिकायत कर दो तो ?

दू०सिपाही-हां, कहीं फिर वो गांधी जी वाला सत्याग्रह छेड़ दो तो ठाकुर साहब हमारी जान ले लें।

पटैल- नहीं साहब। अब तो उन बातों के लिये जगह ही कहाँ है ? उस वक़्त तो आप भी जबरदस्ती लेते थे। अब तो राजी बाजी का सौदा है।

(गिलास कटोरे भर भर दिये जाते हैं। सिपाही, अफसर पीते हैं)

एक सि०-देखिये तहसीलदार साहब। दूध इस का नाम है। अपने यहां तो कोरा सफेद पानी विकता है।

अफसर- असल में इस बुराई की जड़, दूध बेचने का रिवाज है। लोभ वश लोग पानी मिलाते हैं।

दूसरा सि०आपका फर्माना बजा है। मुझे याद है कि पहले जब लोग दूध नहीं बेचते थे तब घी के लालच से मवेशियों को खूब और अच्छी चीजें खिलाते थे। तब दूध भी अच्छा होता था।

चौथा- दाना-बांटा कहाँ जी अब दूध बढ़ाने को एसी एसी चीजें देते हैं कि दूध तो किसी काम का निकलता ही नहीं, जानवर भी सूख कर कांटा हो जाता है। बच्चों तक के लिये दूध नहीं छोड़ा जाता है।

दूसरा- और फिर दूध बन्द होते ही उन्हें कसाईयों को बेच देते हैं।

तीसरा- हां भाई। कहा भी है. "लोभ पाप का मूल।" इसलिए तो हिन्दुओं में पहले दूध बेचना दोष माना जाता था।

पटैल- हमारे यहां तो आज भी दूध बेचना और पूत बेचना बराबर समझा जाता है। साहब।

सिपाही- और किसी को जरूरत पड़े तो ?

एक ग्रा- यों अड़े-भिड़े वक्त पर तो देते लेते ही हैं। यों थोड़े बहुत के लिये कौन इन्कार करता है ?

दूसरा सि०और किसी को ज्यादा दूध की जरूरत हो, या सिर्फ शोकिया ही लेना चाहे तब ?

पटैल- तो उसकी कीमत का दाना लेकर गाय को खिला देते हैं। दूध का पैसा घर में तो नहीं रखते।

१ सिपाही-यह सब से अच्छी बात है।

२ सिपा०- लेकिन शहरों में ये कहाँ निभ सकता है साहब।

अफसर- भाई ! शहर कस्बों के लियें मुझे सुरेशचन्द्र जी की स्कीम पसंद हैं। असल में शहर कस्बों में सार्वजनिक गोशालाओं के सिवाय और किसी को दूध बेचने की इजाजत ही नहीं होनी चाहिये।

१ सिपा०-अच्छा साब ! अब चलना चाहिये। फिर धूप भी बढ़ जायेगी।

अफसर-हाँ, अब चलना चाहिये। (सब गमनोद्यत होते हैं। पर्दा गिरता है)

(एक ओर से एक वृद्ध ब्राह्मण दूसरी ओर से कुछ ग्रामीणों का प्रवेश)

ग्रामीण- नमस्कार महाराज !

ब्राह्मण- आशीर्वाद भाई ! आज किधर ?

ग्रा०- अरे आपको मालुम नहीं। आज सुरेशचन्द्र जी आ

रहे हैं। गांव २ में लोग उनके स्वागत को जा रहे हैं।

ब्राह्मण- हां ? तब तो बड़ी अच्छी बात है भाई ! चलो मैं भी चलूँगा। असल में मैं बाहर गया हुआ था। आज ही आया हूँ। इसी से खबर नहीं लगी। तो फिर चलो ना ?

दूसरा- हाँ चलते हैं, जरा गिरवरदास के छोरे को बुला लें। (नेपथ्य की ओर) अरे हरीदास ! ओ हरीदास !!

नेपथ्य में- आया ! आया ! आता हूँ !

ब्राह्मण- लेकिन भाई इतने छोटे लड़के को कहाँ ले चलते हो। वहां भोड़ में इसे कौन सम्हालेगा ?

एक- इसे ले चलना है महाराज ! इस से एक काम लेना है।

ब्राह्मण- क्या काम लेना है ?

दूसरा- अजी गिरधर दास ने इस मौके के लिये एक भजन बनाया है। वह इस से गवाया जायेगा।

ब्राह्मण- हां, तब तो ठीक है। कण्ठ तो इसका बड़ा मीठा है।

तीसरा- भाई भाई ! जैसे कोयल बोलती है।

हरीदास- (प्रवेश करके) लो आ गया चलो।

दूसरा- चलें कहां ? पहले भजन तो गा के सुना।

तीसरा- हां ठीक है, पहले जांच कर लें। नहीं तो ठीक मौके पर अपने गांव की हंसी हो।

चोथा- हा, पंडित जी भी आ गए है। कुछ टेढ़-बांक होगी तो भी बता देंगे।

पहला- (हरीदास से) हां तो गावे ना। ठूँठ की तरह खड़ा क्यों है!

दूसरा- शर्माता है क्या? तब तो ले ही क्यों चलें?

हरीदास- नहीं नहीं, शर्माता थोड़े ही हूँ। (खांस कर गाता है।)

धन्य है आज का दिन हमारे लिये।
जो हैं दर्शन हमें आपके फिर हुए॥
दीन हैं, भेंट हम क्या तुम्हारी करें।
कैसे भावों को अपने भजन में भरें?
मन में आती है तुम को हृदय में धरें।
आंखों में रख के फूलों में फिरते रहें।
मस्त गाते फिरें प्रेम-प्याला पियें।
धन्य है आज का दिन हमारे लिए॥
पाया है हमने दुर्लभ्य तुमसा रतन।
सत्य के संग है जिसका जीवन मरन।
ऐसी कर दो कृपा अशरण के शरण।
रख सकें हम उसे करके कण्ठा भरण।
जिसने तन मन-धन सभी धर्म पर धर दिये।
धन्य है आज का दिन हमारे लिये॥

एक- कहो पण्डित जी! कैसा?

ब्राह्मण- बिल्कुल बावन तोले पाव रत्ती का है भैया। मालिक ने चाहा तो अपने गांव को सब सराहेंगे।

दूसरा- अच्छा तो चलो, अब चलें।

सब- हां चलो!

(सब का प्रस्थान)

(पर्दा उठता है)

दृश्य पांचवा

[स्थान-सुरेशाश्रम में सुखिया का घर। सुखिया बिस्तर के पास खड़ी है। एक सन्दूक रक्खा है। और एक घड़ा और लोटा।]

सुखिया–(चिन्तित भाव से टहलती हुई) न जाने क्यों, आज मेरी दाहिनी आंख बड़े जोर से फड़क रही है? मन में व्यर्थ ही तरह २ की आशंकाऐं उठ रही हैं? नींद नहीं आ रही है? रह रह कर मानो कोई कह रहा है कि आज कोई अघटित घटना घटने वाली है। शंका के लिए कारण भी हैं। वह दुष्ट दीवान और कुँवर यहां भी आ पहुँचे हैं। वह नर पिशाच मौला भी दिन भर आश्रम में चक्कर लगा रहा था। सुरेश भैया भी यहां नही है। खबर भेजी है, किन्तु क्या पता पहुँची कि नहीं। किन्तु कुछ भी हो, आज कुछ होगा अवश्य। इतना उद्विग्न तो मेरा मन उमर भर में कभी रहा हो नहीं। कुछ (कुछ सोच कर) ठीक है, सुरेश भैया ने पिस्तौल तो दे रक्खा है। अगर कुछ हुआ तो आज उसी से काम लूँगीं। (संदूक में से पिस्तौल निकाल कर देखती है।) हां भरा भराया तैयार है।

(चारों ओर हल्ला होता है।)

नेपथ्य में– हां यही है यही। बहुत दिनों में शिकार हाथ आया है। आज बात है।

सुखिया- हैं ? यह क्या है ? भगवान । यह क्या है ? देखूँ दरवाजा तो अच्छी तरह बंद है। (दरवाजे को देखती है) हाँ बंद तो है। और एक लकड़ी लगा दूँ। (लकड़ी आड़ी लगाती है।)

(कुछ लोग दरवाजे पर लात और लकड़ी मारते हैं।)

नेपथ्य में-अरे खोल हरामजादी। बहुत दिन हुए हैं। आज देखें तुझे कौन बचाता है ?

सुखिया- हे ! भगवान ! आखिर मेरी आशंका सच ही हुई। किन्तु सुखिया। अब घबराने का समय नहीं है। धैर्य धर। सच्ची हिन्दू रमणी की तरह विपत्ती का सामना कर। (आकाश की ओर दृष्टि उठाकर) भगवान ! अनाथ-नाथ । दीनबन्धो। इस अवज्ञ अवला को कर्तव्य पथ दिखाओ। इस अनाथ विधवा, दुखियानी की ओर अपनी सहायता का हाथ बढ़ाओ।

नेपथ्य में-अरे खोलती है कि नहीं। तोड़ डालो जी। देखते क्या हो ?

सुखिया- (आकाश की ओर उभ्भ्रान्त भाव से देखती हुई) हैं ? आज की घटना टलने वाली नहीं ? तो फिर ठीक है। यही है तेरी इच्छा पूर्ण हो। (दरवाजे की ओर) अरे तुम लोग कौन हौं ?

नेपथ्य में-हैं तेरे खसम ! हरामजादो खोलती ही नहीं।

सुखिया- अरे सुनो ! देखो। मेरे पास हथियार है।

नेपथ्य में- सो क्या हमें मारेगी। देखो डराती है। बड़ी बदमाश है जी।

सुखिया- सुनो। तुम्हें न मारूँ तो भी मैं खुद मर सकती हूँ।

नेपथ्य में- "तो मरती क्यों है।" "हां जी, उल्टे इसके तो भाग्य खुल रहे हैं।" अरे पागल है पागल।

सुखिया- अच्छा सुनो। एक बात है। अगर तुम्हारे कुँवर साहब और दीवान साहब मुझसे यहाँ अकेले में मिलें तो मैं उनसे बातें करके सब तय कर सकती हूँ।

नेपथ्य में-और हम ऐसा न करें तो ?

सुखिया- ऐसा न करो तो तुम्हे मरी लाश ही मिलेगी मैं नहीं मिलूँगी।

नेपथ्य में-अच्छा अच्छा हम खबर भेजतें हैं। अरे आधे जाओं। ये साली बड़ी अल्लामी है। कहीं भाग जाये तो और आफत हो। (शन्ति होती है)

सुखिया- (स्वगत) ओह। अब समझ में आया। भूल भगवान के घर नहीं होती। भूल मेरी ही थी। अब बच्चे होशियार हो गए हैं। कमाने-खाने लग गये हैं। एक ऐसे आश्रम में जगह पा गये हैं। जहां न उन्हें कोई नीच गिनता है न अछूत। जहां उन्हें अपनी योग्यता बढ़ाने की पूरी सुविधा है। सब बातें का आराम है। फिर मेरे इस संसार में रहने की क्या आवश्यकता थी ? मुझे अपने स्वामी के पास पहुँचना था या सन्यास लेकर सेवा में लगना था। खैर, अब वह अवसर स्वतः प्राप्त हो गया है। किन्तु प्रभो। (ऊपर देखती हुई) इन दुष्टों को

यहां बुला कर मैंने अपने ऊपर एक नया भार ले लिया है उन्हें इस घर में बुलाने का निश्चय करके एक भारी जोखम सिर पर ले ली है। मैं अपने हाथ से इन पापियों का वध करना चाहती हूँ। सम्भव है, तुम्हारे न्याय में यह अनुचित हो। सम्भव मुझे यह प्रेरणा करने वाली मेरी निर्पेक्ष बुद्धि न होकर पति की प्रति हिंसा हो। किन्तु मैं केवल संसार को यह दिखाना चाहती हूँ कि अवला को भी अधिक सताना अच्छा नहीं होता। सत्य के सहारे भी एक अवला भी बड़े बड़े शक्तिशालियों को धूल चटा सकती है।

(बाहर हल्ला होता है।)

नेपथ्य में– अरे पकड़ो। सबको पकड़ो! कोई जाने न पाये।

सुखिया– हैं? जान पड़ता है कि सब आश्रमवासी पकड़े जा रहे हैं। भगवान! अब मैं समझ रही हूँ कि मैंने अकेली होने पर भी इतने दुष्टों से घिर कर यह नाटक खेलने में कितनी भारी जोखम सर पर ली है? कितना दुःसाहस किया है? किन्तु मैंने यह सब अपने भरोसे पर नहीं किया है। भगबान यह सब तुम्हारे भरोसे पर किया है। मेरे सतीत्व पर जब जब संकट पड़ा है तब तब तुम्हीं ने कोई रक्षक भेजा है। जब जब असहाय रह गई हूँ तब तुम्हीं ने नया सहायक पैदा किया है। वरना मेरी क्या सामर्थ्य थी कि बिना किसी मित्र सम्बन्धी के, बिना किसी परिचत के, और बिना किसी बिद्या बुद्धि के इतनी शक्तियों से अपनी रक्षा कर सकती।

किन्तु यह अवसर सबसे अधिक विकट है भगवन। यह विकट भी है और अन्तिम भी है। ऐसा न हो. कि लोग कहें कि अन्त में सत्य को ही असत्य से हारना पड़ा। सुखिया की भगवान के शरण में भी भौतिक शक्ति के सामने रक्षा न हो सकी। भगवन! मैं अधम हूँ, नीच हूँ! किन्तु आप मेरी ओर न देखिये। मेरी भूलों पर दृष्टि न डालिये! आप तो केवल अपने विरुद्ध की ओर देखिये (गाती है)

भगवान! भक्त भय हरण। कृपा कर आओ,
दुष्टों ने घेरी गऊ दया दिखलाओ,
जिस तरह "ग्राह" ने "गज" को दहलाया था
जिस तरह "इन्द्र" "वृज" पर चढ़ कर आया था
थी द्रुपद सुता ज्यों दुशासन ने घेरी
वैसी ही है आ बनी लाज पर मेरी
प्रभु! होकर गरुढ़ारूढ़, विनय सुन धाओ,
दुष्टों ने घेरी गऊ दया दिखलाओ.

मैं हूं अबला बल हीन बिपत्ति की मारी
बीती है मेरी आयु दुखों में सारी
छोड़ा है सत के लिये सभी त्रिपुरारी
ऐसा न हो कि हो जाय अन्त में ख्वारी।

हां, प्रभो! दीन पर करुणा कर फैलाओ,
दुष्टों ने घेरी गऊ दया दिखलाओ,

नेपथ्य में- अरे, यह उजाला कैसा है ? अरे मशाल का है मशाल का। जानता नहीं, कुँवर साहब आ रहे हैं।

सुखिया प्रभो ! ये दुष्ट आ रहे हैं ! कुछ क्षणों में ही सामना होगा। प्रभो ! इस अबला को शक्ति दो। साहस दो। यदि मैंने तन मन से अपने को पवित्र रखा है। यदि मैंने मन वचन से अपनी बुद्धि के अनुसार गार्हस्थ्य धर्म का पालन किया है। यदि मैंने एक क्षण के लिए भी अपने सौतेले बच्चों को गैर नहीं समझा है। यदि मैंने सदा शत्रु तक पर न्याय दृष्टि रक्खी है। यदि मैंने कभी झूठ कपट का आश्रय नहीं लिया है तो मुझे आज दानव-दलनी की शक्ति दे दीजिये। थोड़ी देर के लिए मुझे रणचंडी बना दीजिए। जिस सत के साथ मुझे जीवित रक्खा है, उस सत के साथ मुझे उठा लीजिए।

शेपथ्य में- सुखिया ! ओ सुखिया ! ले आ गए ! खोल !

सुखिया- अच्छा ठहरिए ! मैं कहूँ तब भीतर आइयेगा ! (पिस्तौल देखती है फिर दरवाजे की सांकल खोल कर दूसरे कोने पर जा खड़ी होती है। पिस्तौल वाला हाथ साड़ी में छिपा लेती है।) हां अब आ जाइये ! (दरवाजा खुलता है। दीवान और कुंवर प्रवेश करते हैं !) हां दरवाजा बन्द कर लीजिये ! (दीवान दरवाजा बन्द करता है)

कुँवर- (नशे में कुछ झूमता हुआ) सुखिया ! देख तेरे लिये ही मैं सोते से उठ कर जाया हूँ। (आगे बढ़ता है)

सुखिया- बड़ी कृपा की महाराज। किन्तु वहीं ठहरिये। मैं कुछ कहती हूँ, सुन लीजिए। (कुँवर रुकता है)

दीवान - (झूमता हुआ) हां कहो सुखिया। कह डालो। आज तो बादशाहत तुम्हारे ही हाथ में है। राजा दीवान, सब तुम्हारे सामने खड़े हैं।

सुखिया - महाराज कुँवर साहब और दीवान साहब। मैं ये कहना चाहती हूँ कि आपको भगवान ने रहमत और खास कर गरीबों की रक्षा के लिए बनाया है। मैं एक विधवा, अनाथ और तुच्छ चमारी हूँ। मेरे ऊपर बल दिखाने में आपकी कीर्ति नहीं बढ़ेगी। महाराज। हम सब बड़े हों या छोटे अज्ञानी जीव हैं। गलती सबसे होती है। किन्तु समझदार वही जो अपनी गल्ती को पहचान ले और छोड़ दे। इसीलिए मेरी प्रार्थना है कि आज हम सब यहां अपनी गल्ती सुधार लें। मैं आपको राखी बांध दूँ। आप मुझे अभयदान देकर पधारें। इससे इस संसार में आपका गौरव बढ़ेगा और परलोक में सद्गति मिलेगी।

दीवान- सुखिया, अब घर में बुला कर ऐसी बाते न करो। आज तुम बच नहीं सकतीं।

सुखिया- खैर दीवान साहब। यह तो भगवान के हाथ की बात है। वह जिसे मारना चाहे, उसे कोई बचा नहीं सकता और वह जिसे बचाना चाहे, उसे कोई मार नहीं सकता।

कुँवर- लेकिन अब इन बातों से फायदा क्या है सुखिया।

दीवान- हां सुखिया। आओ। अब तो महाराज कुमार से हाथ मिलाओ। (आगे बढ़ता है)

सुखिया- वहीं रहिये दीवान साहब। वहीं। आगे न आइये। (दीवान रुकता है। स्वगत) भगवन! क्या मुझे इन दुष्टों के रक्त में हाथ रंगने ही पड़ेंगे?

दीवान- क्यों सुखिया? क्या बात है?

सुखिया- बात? बात यही है कि आप दोनों चले जाइये। वरना मेरे पास पिस्तौल है। कोई मेरे हाथ से मारा जायेगा। मैं अब भी हत्या से बचना चाहती हूँ। जाइये। जाइये।

दीवान- अरे सुखिया! हम यों डरने वाले नहीं हैं। ऐसी भबकियां और किसी को दिखाना। झपटता है)

सुखिया- हैं? नहीं मानेगा?

दीवान- नहीं।

सुखिया- अच्छा नहीं तो सम्हल ! (पिस्तौल दागती है। दीवान गिरता है। कुंवर लपक कर सुखिया के हाथ पिस्तौल छीन लेता है। और सुखिया को कोशिश करता है। सुखिया पीछे भागती है। (भागती हुई) हे भगवान ! हे नाथ।

सुरेश- (पिस्तौल हाथ में लिये ऊपर से कूदता हुआ) खबरदार ! नर पिशाच ! दुरात्मा। खबरदार सती को हाथ लगाया तो। (कुंवर रुककर सुरेश को देखता है। पिस्तौल साधता है। सुरेश पर पिस्तौल छोड़ता है। कुंवर गिरता है।

नेपथ्य में-अरे दंगा दंगा। दो आवाज हुई हैं दो। न जाने कितने हैं ? कुछ और आदमी बुलाओ।

सुखिया- हैं ? सुरेश भैया ? तुम कहां ?

सुरेश- मैं अभी चला आ रहा हूँ बहन ! दिन अस्त होने के बाद तो खबर ही पहुँची थी। इधर इन दुष्टों से तुम्हारी कोई रक्षा न कर सके, इसलिये सब आश्रम वासियों को पकड़ लिया था। और कोई उपाय करने का समय न था। मैं ज्यों-ज्यों छिप कर पीछे की दीवार पर चढ़ा। इतने में तो तुमने एक दुष्ट को भूमित्पात कर दिया।

सुखिया- फिर भी तुम न आते तो मेरा प्रयत्न व्यर्थ हुआ ही था। किन्तु भैया। तुमने तो अहिंसा व्रत धारण कर रक्खा था।

सुरेथ- निःसन्देह बहन ! अहिंसा व्रत का मैंने भंग किया है। किन्तु मुझे इस के लिये पश्चात्ताप नहीं है। अन्य उपाय न रहने पर ही मैंने अपने शरीर और कर्तव्य की रक्षा के लिये हिंसा का सहारा लिया है।

सुखिया- फिर भी.....।

सुरेश- कोई चिन्ता नहीं सुखिया। यदि इसके लिये मुझे परलोक मेंदण्ड मिलेगा तो भी मैं बड़ी प्रसन्नता से उसे भोगूंगा। तुम्हारी सतीत्व रक्षा कर सका, यही मेरे लिये सब कुछ है। यही मेरे लिये सब से बड़ा पुरस्कार है।

सुखिया- खैर, तो भैया ! अब तुम जिस तरह से आये हो, सम्भव हो तो उसी राह से निकल जाओ।

सुरेश- और तुम ?

सुखिया- मैं तो अब स्वामी के पास जाऊँगी भैया। मेरा काम हो चुका। अब मेरे यहां रहने से सब नष्ट हो जायेगा।

सुरेश- कैसे ?

सुखिया- आखिर, जिस मेरी सतीत्व रक्षा के लिए इतना काण्ड हुआ है, वही गिरफ्तार होने पर असम्भव हो जाएगी। और इस राज्य में असम्भव कुछ भी नहीं है। यह सोचना ही व्यर्थ है कि यहां बन्दी पर अत्याचार न होगा।

सुरेश– ठीक है वहन ! तो हम दोनों साथ ही चलेंगे।

सुखिया– क्यो ? तुम क्यों ?

सुरेश– प्रथस तो मैं अब निकल जा सकूँगा, किसो का भरोसा नहीं। फिर यदि निकल जाऊं तो भी मैं झूठ न वोलूंगा। अपने अपराध के लिए निर्दोषों को कष्ट पाते न देख सकूंगा। नतीजा बही होगा। उमर कैद या फाँसी। इससे यह साथ क्यों छोड़ूं।

सुखिया– तो ठीक है भैया। यही सही। अव अधिक सोचने का समय नहीं है। हो ओ तैयार।

सुरेश– जरा ठहरो वहन। एक पत्र लिख कर रख दूँ। ताकि इस घटना के लिये कोई और तंग न किया जाय।

सुखिया– हाँ ठीक है। यह तो जरूरी भी है भैया। (सुरेश लिखने वैठता है।) अहा। आज का दिन कितने सौभाग्य का है ? आज कितने दिन के बाद स्वामी से मिलूँगी ? उनकी सुनूंगी। अपनी कहूंगी। (घुटने टेक कर आकाश की ओर) स्वामिन। उस दिन तुमने कहा था, "सुखिया, मुझे भी कीर्तन सिखा दो। फिर हम दोनों कण्ठ से कण्ठ मिला कर गाया करेंगे। इस संसार के दूषित वायु मंडल में पवित्रता फैलाया करेंगे।" वह इच्छा दुष्टों ने यहां पूर्ण नहीं होने दी। अब हम वहा उसे बेखटके पूरी करेंगे। वहां न इस संसार के दुःख द्वन्द

होंगे, न ये पाप वासनायें होंगी। न अनीति होगी न अत्याचार होगा। वहाँ हम दोनों और सुरेश भैया, तीनों मिलकर खूब प्रेम की त्रिवेणी बहावेंगे हरि प्रेम में मतवाले बने हुए, प्रसन्नता के पराग से बने हुए, आनन्द से हंसते हुए, एक दूसरे के कंधे पर हाथ रखकर, कण्ठ से कण्ठ मिलाकर खूब हरि गुण गायेंगे। मन भर भर कर हरि नामामृत पियेंगे। अहा। कैसा सुख होगा? कैसा स्वर्ग होगा? कैसो निश्चिन्तता होगो?

नेपथ्य में–(बाहर कोलाहल बढ़ता है) अरे दौड़ो गजब हो गया। गजब।

सुखिया– (सुरेश से) भैया। अब देर नहीं है।

सुरेश– कोई चिन्ता नहीं बहन। लिख लिया। ये कायर अभी एक दम हमला करने की हिम्मत नहीं करेंगे। और करें तो करे। अपन तैयार हैं। (दोनो पिस्तौल लेकर खड़े होते हैं।) सुखिया।

सुखिया– हां भैया।

सुरेश– आज का दिन कितने आनन्द का है? एक क्षण बाद ही हम लोग स्वर्ग के मार्ग पर होंगे। ये सारे दुख द्वन्द यहीं रह जायेंगे।

सुखिया– हां भैया। इस पाप की अग्नि से जलते हुय संसार में से बिना पश्चाताप निकल जाने के बराबर और

कौन सा सुख है ? अच्छा आओ। अब हम अन्तिम वार प्रार्थना कर लें।

सुरेश– हां आओ अब देर नहीं है। (घुटने टेक कर आकाश की ओर भगवान। हमें अपने लिये कोई प्रार्थना नहीं करनी है। हमें स्वेच्छानुसार कर्तव्य पालन का अवसर मिला, वही हमारे लिये सब कुछ है। अब तो यदि हमारी कोई आकांक्षा है तो यही कि हमारे बलिदान से किसी का अनिष्ट न हो। किसी को हानि न पहुँचे। इसके विपरीत :-

बलिदान हमारा जगत का सौख्य बढ़ावे।
भूले हुओं को प्रेम से सन्मार्ग पर लावे॥
निर्बल मनों में त्याग की शुभ शक्ति जगावे।
हारे हुओं को युद्ध में वर वीर बनाये॥

सुखिया–(गाती है) :-

है यही, अनाथ-नाथ। प्रार्थना हमारी।

सुरेश– फिर गृहस्थ-व्यक्ति बनें धर्म के पुजारी।
नष्ट हो विलास-निशा भूमि से हमारी।
है यही अनाथ-नाथ प्रार्थना हमारी।

सुखिया- ममादृश न कष्ट सहें हिन्द की कुमारी।
ममादृश मिले उन्हें सहायता तुम्हारी।
है यही, अनाथ-नाथ। प्रार्थना हमारी।

सुरेश- शत्रु, मित्र, राज्य, देश, शेष सृष्टि सारी।
सब बनें सुखी, स्वतंत्र, सत्य-धर्म-धारी।
है यही: अनाथ नाथ प्रार्थना हमारी।

सुखिया- तिल तिल कट जायें खड़ी भारतीय नारी।
किन्तु सत्य से न हटें रञ्च भी मुरारी।
है यही, अनाथ-नाथ। प्रार्थना हमारी।

(दोनों आमने सामने खड़े होते हैं। बाहर द्वार तोड़ने का प्रयत्न होता है।)

सुरेश - (हंस कर) अच्छा तो बहन चलें ?

सुखिया- (मुस्कराती हुई) हाँ भैया। चलो। जल्दी करो।

(किवाड़ों पर चोट पड़ती हैं। हल्ला होता है)

सुरेश- अच्छा बहन एक। दो। तीन॥

(दोनों के पिस्तौल एक दूसरे की ओर छूटते हैं दो गिरते हैं। आकाश से देवगण जय जय-कार पु बरसाते हैं। दरवाजा टूटता है। सिपाही-अफ़स आश्चर्य से भौंचक्के हो जाते हैं।

(यवनिका गिरती है।)

— — —

पथिक जी का अप्रकाशित साहित्य

१. कल्पना कल्लोल (निबंध संग्रह)

२. जीवन संस्मरण (आत्म कथा)

३. अजयमेरु (उपन्यास)

४. गरीबों का स्वराज्य

५. वैज्ञानिक वेदान्त दर्शन

६. नारी जाति का इतिहास

७. इतिहास का अध्ययन

— - —

मुद्रक : मनमोहन प्रिन्टिंग प्रेस, जनरल गंज, मथुरा।